CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(सीडी सहित)

सरल संगीत शिक्षा

(भाग - दो)

डॉ० तेजसिंह टाक

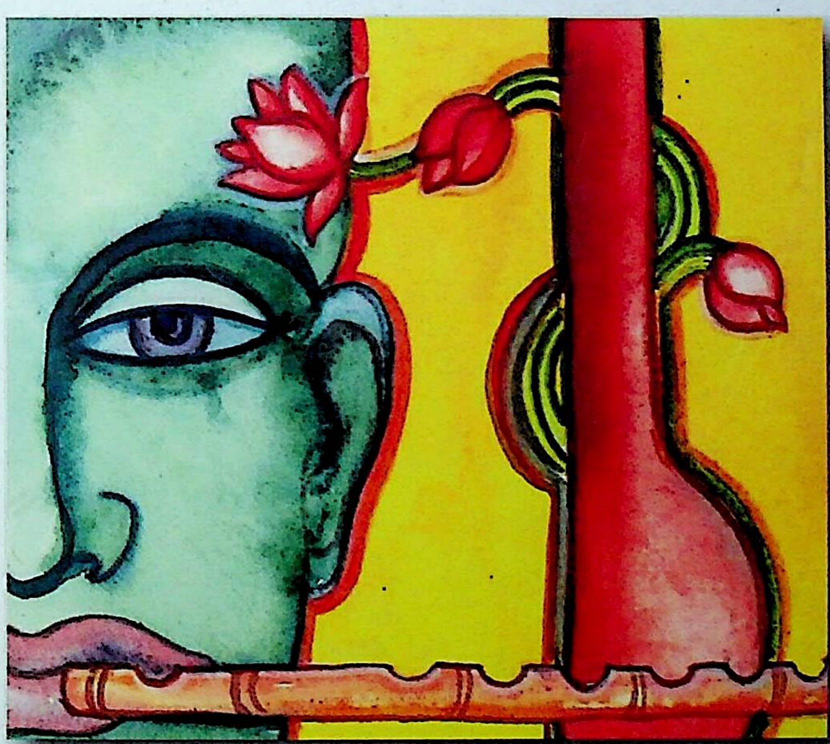

बेकरॉं आलमी फाउण्डेशन
लखनऊ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

5.3

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सरल संगीत शिक्षा

(भाग- दो)

(संगीत के सभी विद्यार्थियों के लिए)

डॉ० तेज सिंह टाक

Bekaraan Aalami Foundation

बेकराँ आलमी फ़ाउण्डेशन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वाधिकार ©	लेखकाधीन
आवरण	अमित कुमार
प्रथम संस्करण	सन् 2009 ई०
मूल्य (सी०डी० सहित)	Rs. 300.00, $ 15.00, £ 10.00
प्रकाशक	बेकराँ आलमी फाउण्डेशन 873, एम.आई.जी., शेखूपुरा कॉलोनी अलीगंज, लखनऊ- 226 022
डी.टी.पी. एवं मुद्रण	के.सी.कम्प्यूटर्स LG-10-11, तरुण मार्केट, निकट डालीगंज रेलवे क्रासिंग सीतापुर रोड, लखनऊ- 226 020 फोन नं :- 9415569069, 9235846999
ध्वन्यांकन	1- स्वरांजलि स्टूडियो, 48- प्राइवेट पेपर मिल कॉलोनी निशातगंज, लखनऊ। फोन नं:- 9415014595 2- अनुपम गुलवाडी डिजिटल ड्रीम्स 2A, एसोसिएशन रोड, जार्ज टाउन, इलाहाबाद। फोन नं:- 9335156700
पुस्तक प्राप्ति स्थान	1- 503/322, बरौलिया, डालीगंज, लखनऊ - 226 020 फोन नं - (0522) 2740630, 09621405080 2- द्वारा- निर्मल दर्शन प्रताप नगर, कुर्सी रोड, लखनऊ- 226 022 फ़ोन :- (0522) 2363136, 09838178877

SARAL SANGEET SHIKSHA (Part -2) - *Dr. Tej Singh Tak*

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समर्पण

स्व० बल्देव शर्मा

की स्मृति को

तेरा तुझको अर्पण

इस पुस्तक श्रखला में बंदिशों के अतिरिक्त अधिकतर आलाप-तान आदरणीय स्मृतिशेष की शिक्षा की निधि हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशकीय

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु

जिसके जीवन का सूत्र वाक्य यह हो, वह अपनी एक एक गतिविधि पर यह दृष्टिकोण अपनाता है कि उसका समग्र कार्य लोकहित में हो।

संगीत शास्त्र के विद्वान् प्रज्ञाचक्षु डॉ० तेज सिंह टाक की अंतर्दृष्टि की लोकमंगल कामना का ही यह परिणाम है कि वह निरंतर अपने लक्ष्य की प्राप्ति में लगे हुए हैं।

प्रायः 30 वर्षो के अध्ययन-अध्यापन के अपने अनुभवों के आधार पर डॉ० टाक ने विद्यार्थियों की सुविधा और समस्या दोनों का ही गहन विश्लेषण किया है, अनुभव की इसी पूंजी के रूप में इनके द्वारा रचित पुस्तकों की श्रृंखला बढ़ती जा रही है।

संगीत के विद्यार्थियों को शास्त्र के साथ-साथ प्रायोगिक पक्ष का भी ज्ञान हो इसके लिए गुरु-शिष्य परम्परा के अंतर्गत शिक्षा की आवश्यकता होती है, परन्तु वर्तमान युग की व्यस्तजीवन शैली में समय का अभाव सबके पास है अतः विभिन्न स्तरों की संगीत की बंदिशों को पुस्तक में सम्मिलित करने के साथ ही उनको अलग-अलग योग्य गायकों के स्वर में ध्वंयांकित कर सी०डी० भी उपलब्ध कराना संगीत सीखने के इच्छुक लोगों के लिए उपयोगी हो सकता है। इस पुस्तक श्रृंखला के प्रथम भाग की सफलता इस बात की पुष्टि भी करती है, अतः बेकराँ आलमी फाउण्डेशन द्वारा सरल संगीत शिक्षा भाग-2 को भी प्रकाशित करना सार्थक प्रकाशन की दिशा में एक और चरण है। इस तरह की पुस्तक की सामग्री की टाइपिंग अत्यंत दुरूह कार्य होता है फिर भी अपने परिश्रम से यथासम्भव श्रेष्ठ कार्य करने के लिए कपिल चांदवानी का आभार और दुर्गेश कुमार को आशीर्वाद और देश के युवा चित्रकारों में तेजी से अपना स्थान बनाते हुए चर्चा में आने वाले कलाकार श्री अमित कुमार को आकर्षक आवरण चित्रण के लिए धन्यवाद ।

डॉ तेज सिंह टाक को पुनः उनके इस कार्य के लिए बधाई एवं भविष्य की स्तरीय रचनाओं के लिए शुभ कामनाएँ।

लखनऊ
मकर संक्रान्ति, 2009

निर्मल दर्शन
प्रवक्ता
बेकराँ आलमी फाउण्डेशन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लेखक परिचय

डॉ० तेज सिंह टाक

नाम	-	डॉ० तेज सिंह टाक
पिता	-	स्व. किशन सिंह
माता	-	श्रीमती भगवान कौर
जन्म	-	11 दिसम्बर सन् 1945 ई०
जन्म स्थान	-	ग्राम- फुल्लोमिट्ठी जनपद- बठिण्डा (पंजाब)
शिक्षा	-	प्रारम्भिक-अन्धविद्यालय अमृतसर, पंजाब उच्च- गांधर्व मण्डल, नई दिल्ली पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
शोध	-	बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ०प्र०) जूनियर रिसर्च फेलोशिप प्राप्त (1973-78)
प्रकाशित कृतियाँ	-	संगीत : जिज्ञासा और समाधान, संगीत : विज्ञान एवं गणित, सुबोध संगीत शास्त्र एवं सरल संगीत शिक्षा भाग-1
अन्य	-	सेमिनार प्रतिभागिता- 1. मैक्समुलर भवन, कलकत्ता 2. अन्धविद्यालय, अहमदाबाद 3. हम्पी विश्वविद्यालय, हम्पी (कर्नाटक) 4. राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित (2006)
सम्प्रति	-	भातखण्डे संगीत संस्थान (सम विश्वविद्यालय), लखनऊ में सन् 1979 ई० से प्रारम्भ में शास्त्र एवं पश्चात् में व्यवहार तथा विगत् दस वर्षों से शास्त्र शिक्षक से रूप में सेवारत।
पता	-	503/322 बरौलिया, डालीगंज, लखनऊ - 226 020 दूरभाष (0522) 2740630

* संगीत विशारद एवं संगीत अलंकार (गायन)

** एम.ए. (वायलिन) - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूमिका

इस पुस्तक के प्रथम भाग की भूमिका में चार प्रकार के जिज्ञासुओं के लिए इसकी उपयोगिता के विषय में कहा गया था किंतु अनुभव से ज्ञात हुआ कि यह पुस्तक चार के स्थान पर पाँच प्रकार के जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी सिद्ध हुई है :—

1. जो किन्हीं कारणों से संगीत को छोड़ देते हैं, उनके द्वारा सीखा हुआ संगीत दो-चार वर्षों में ही भूलने लगता है।

2. सुनकर हूबहू उतारने वाले छोटे बच्चों से लेकर ऑर्केस्ट्रा में गाने वाले गायक आसानी से मुश्किल से मुश्किल धुन को उठा लेते हैं, जबकि शास्त्रीय संगीत सीखने में वे पर्याप्त परिश्रम करके भी नहीं सीख पाते हैं। यही युक्ति ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक में छपी हुई सामग्री ध्वन्यांकन के साथ सी.डी. के रूप में प्रकाशित की जा रही है।

3. जिन्हें संगीत शिक्षक उपलब्ध नहीं हो पाते ऐसे दूर-दराज़ रहने वाले संगीत जिज्ञासु इस पुस्तक का लाभ ले सकते हैं।

4. विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में संगीत एक विषय के रूप में स्वतन्त्रता के बाद मान्य हुआ है। आज के व्यस्त जीवन में समय का अभाव होने के कारण विद्यार्थी प्रारम्भिक स्वर-ज्ञान, ताल-ज्ञान, आलाप-तान आदि का अभ्यास उतना नहीं कर पाते जितना अपेक्षित होता है। यह पुस्तक उनकी इस कमी को दूर करने में सहायक होगी, ऐसी आशा है।

5. सीखते समय विद्यार्थी का उद्देश्य अधिकतम अंक प्राप्त करना होता है। प्रायः देखा जाता है कि संगीत के वे ही विद्यार्थी जब संगीत शिक्षण का कार्य करते हैं तो छोटी-छोटी अनेक समस्याएँ उनके सामने आती हैं। उनकी सहायता के लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध हो रही है ऐसा सरल संगीत शिक्षा प्रथम खण्ड के पाठकों से ज्ञात हुआ है।

विषय वस्तुः- इस पुस्तक श्रखला के प्रथम भाग में दस आश्रय रागों को दिया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जा चुका है। पुस्तक के इस द्वितीय भाग में 20 रागों को सम्मिलित किया गया है। सभी रागों में कम से कम एक स्वर-मालिका और एक छोटा ख्याल है। केदार, गौड़ सारंग, बिहाग, शंकरा, जैजैवंती, पूरियाधनाश्री, बागेश्री, जौनपुरी तथा मालकौंस इन रागों में विलंबित ख्याल दिए गए हैं। केदार और बागेश्री में दो-दो बड़े ख्याल हैं। अनेक रागों में दो या तीन छोटे ख्याल दिए गए हैं। राग भूपाली, तिलककामोद और बागेश्री इन रागों में लयकारी सहित ध्रुपद दिए गए हैं तथा सोहनी राग में तराना दिया गया है।

रागों के स्वरूप को समझने में स्वर मालिकाएँ विशेष रूप से सहायक होती हैं। पं० भातखण्डे ने सभी रागों की स्वर मालिकाएँ दी हैं। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि प्रारम्भिक रागों की स्वर मालिकाएँ तो विद्यार्थियों को सिखाई जाती हैं, आगे के रागों में नहीं, परन्तु इस पुस्तक में सभी रागों की स्वर मालिकाएँ राग के प्रारंभ में दे दी गयी हैं।

रागों का क्रम पं० भातखण्डे द्वारा मान्य निम्न 10 थाटों के अनुसार रखा गया है। कल्याण, बिलावल, खमाज, भैरव, पूर्वी, मारवा, काफी, आसावरी, भैरवी और तोड़ी। यही क्रम इस पुस्तक के रागों के लिए अपनाया गया है। तोड़ी थाट का कोई राग इस भाग में नहीं है इसलिए भैरवी थाट के मालकौंस राग से ही समापन किया गया है।

कृतज्ञता ज्ञापनः-

इस पुस्तक के मूलरूप से ध्वन्यांकन सम्बन्धी सी.डी. और पुस्तक ये दो भाग हैं अतः इस बार सहायकों की संख्या भी दोगुनी है। सी.डी. के विषय में यह कहना होगा कि गाई गईं 66 बंदिशों में से 63 श्रीमती रश्मि चौधरी द्वारा गाई गई हैं। इस सहयोग के लिए मैं इनका आभार प्रकट करता हूँ। शेष 3 बंदिशों में से दो श्री कैलाश जोशी और एक बंदिश गरिमा(लेखक की पुत्री) द्वारा गाई गई हैं। ध्वन्यांकन के लिए मुख्य रूप से इलाहाबाद के श्री अनुपम गुलवाड़ी और लखनऊ के श्री हेमसिंह के सहयोग से सुरीला संगीत रिकार्ड हो सका, इसके लिए इन्हें भी हार्दिक धन्यवाद। तबले की संगत में इलाहाबाद के श्री पंकज श्रीवास्तव, श्री पूर्ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिश्र, श्री विनोद मिश्र और लखनऊ के श्री त्रिदीब गोस्वामी का सहयोग प्रशंसनीय है इनका आभार। पुस्तक की अधिकतर बंदिशें श्री मिलन देबनाथ की अपनी कम्पोज़्ड पुस्तक क्रमिक मालिका (1 से 4) से ली गयी हैं जिससे बहुत सहायता मिली तथा श्रम और समय की बचत हुई। इसके लिए श्री मिलन देबनाथ का मैं हृदय से आभारी हूँ। आलाप और तान लिखने एवं कम्प्यूटर कार्य प्रिय छात्र श्री अनुपम अवस्थी द्वारा किया गया इन्हें आशीष। मेरी दोनों बेटियों लालिमा और गरिमा ने लगातार समय देकर संगीत संबंधी चिह्नों को लगवाने और प्रूफ़ रीडिंग का दायित्व भी निभाया इसके लिए इन दोनों को आशीर्वाद। श्री कैलाश जोशी का इस पुस्तक के लेखन, ध्वंयांकन में पहले की तरह सहयोग मिला है, इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना। इन सबके अतिरिक्त इस प्रकाशन में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से जिन-जिन का सहयोग प्राप्त हुआ है, उनके लिए भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती उमा देवी की सतत प्रेरणा मेरी इन रचनाओं का सम्बल है।

यद्यपि इन सहायकों ने पूर्ण मनोयोग से कार्य किया है फिर भी अनेक स्थलों पर भूलें रह जाने की संभावना है, उन सबका दायित्व मुझ पर ही है अतः विज्ञ पाठक मेरी सीमाओं को दृष्टिगत रखते हुए उसे सुधार कर पढ़ लें। मेरी पुस्तकों के प्रकाशन में पूर्ववत् रुचि दिखाने के लिए बेकराँ आलमी फाउण्डेशन के प्रति विशेष आभार प्रदर्शन। सुहृद विद्वानों से, शिक्षकों से तथा योग्य विद्यार्थियों से प्रस्तुत पुस्तक के सम्बन्ध में प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा है, उनकी अमूल्य राय भविष्य की रचना में मार्गदर्शन करेगी।

लखनऊ
ब्रेल दिवस
04/01/2009

डॉ० तेज सिंह टाक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय सूची

प्रथम अध्याय

			पृष्ठ
1-	राग भूपाली		1 – 10
	राग परिचय		
	स्वर मालिका		
	नमन कर चतुर..................	(द्रुत ख़याल)	
	दर्शन दीजे त्रिभुवन पाली..........	(द्रुत ख़याल)	
	जबसे तुम सन लागली...........	(द्रुत ख़याल)	
	तू ही सूर्य तू ही चन्द्र............	(ध्रुपद)	
2-	राग हमीर		11 – 17
	राग परिचय		
	स्वर मालिका		
	कैसे घर जाऊँ लंगरवा...........	(विलम्बित ख़याल)	
	नमन करू मैं गुरू चरना.........	(द्रुत ख़याल)	
3-	राग केदार		18 – 25
	राग परिचय		
	स्वर मालिका		
	मोर बोले रे.....................	(विलम्बित ख़याल)	
	जुगनवा चमके....................	(विलम्बित ख़याल)	
	सोच समझ मन मीत............	(द्रुत ख़याल)	
4-	राग गौड़ सारंग		26 – 32
	राग परिचय		
	स्वर मालिका.		
	पाती झर गैंया....................	(विलम्बित ख़याल)	
	पल ना लागि मोरि अखिया	(द्रुत ख़याल)	
5-	राग बिहाग		33 – 40
	राग परिचय		
	स्वर मालिका		
	कैसे सुख सोवे..................	(विलम्बित ख़याल)	
	बालमु रे मोरे मन के...........	(द्रुत ख़याल)	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

				पृष्ठ
6-	राग दुर्गा			
	राग परिचय			41 - 44
	स्वर मालिका			
	श्याम सुन्दर सखी आज.............	(द्रुत ख़याल)		
7-	राग शंकरा			45 - 52
	राग परिचय			
	स्वर मालिका			
	सो जानूँ रे जानूँ....................	(विलम्बित ख़याल)		
	करना हो सो कर ले प्यारे...........	(द्रुत ख़याल)		
	बोल रे रंगीले......................	(द्रुत ख़याल)		
8-	राग देस			53 - 56
	राग परिचय			
	स्वर मालिका			
	मेहा रे बन बन.....................	(द्रुत ख़याल)		
9-	राग तिलक कामोद			57 - 65
	राग परिचय			
	स्वर मालिका			
	नीर भरन कै से जाऊँ सखी..........	(द्रुत ख़याल)		
	चंचल चित चोर चतुर..............	(ध्रुपद)		
10-	राग जयजयवंती			66 - 72
	राग परिचय			
	स्वर मालिका			
	पालना गढ़ ला	(विलम्बित ख़याल)		
	दामिनी दमके......................	(द्रुत ख़याल)		
11-	राग कालिंग्ड़ा			73 - 77
	राग परिचय			
	स्वर मालिका			
	अब होन लगो प्रभात सखी..........	(द्रुत ख़याल)		
12-	राग परज			78 - 82
	राग परिचय			
	स्वर मालिका			
	मैं क्यों गयी जमुना पानी............	(द्रुत ख़याल)		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

13- राग पूरियाधनाश्री 83 - 91
राग परिचय
स्वर मालिका
बलि बलि जाऊँ.................... (विलम्बित ख़याल)
तेरे दरस की लालसा................ (द्रुत ख़याल)
पायलियाँ झनकार मोरी.............. (द्रुत ख़याल)

14- राग सोहनी 92 - 99
राग परिचय
स्वर मालिका
काहे हमको दिखावो तुम............. (द्रुत ख़याल)
मुरली कान्हा अधर बजाई............ (द्रुत ख़याल)
दीम् तनन दिर दिर ता नोम् तदेरे.... (तराना)

15- राग बृन्दावनी सारंग 100 - 104
राग परिचय
स्वर मालिका
बन बन ढूँढ़न....................... (द्रुत ख़याल)
न बोलो श्याम हमी सन.......... (द्रुत ख़याल)
दहन लाग्यो चन्द्र किरन ध्रुपद इसी पुस्तक के भाग-१ में।

16- राग भीमपलासी 105 - 110
राग परिचय
स्वर मालिका
जा जा रे अपने मंदिरवा.............. (द्रुत ख़याल)
गोरे मुख सो मोरे मन भावे.......... (द्रुत ख़याल)

17- राग बागेश्री 111 - 124
राग परिचय
स्वर मालिका
मान मनावे मेरी माने................ (विलम्बित ख़याल)
मोहे मनावन आये हो................ (विलम्बित ख़याल)
कौन करत तोरी बिनती पियरवा...... (द्रुत ख़याल)
बलमा मोरि तोरे संग................ (द्रुत ख़याल)
आये रघुवीर धीर................ (ध्रुपद)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

18- राग बहार 125 - 132
राग परिचय
स्वर मालिका
बालमवा माई री.................. (द्रुत ख्याल)
कैसी निकसी चाँदनी.............. (द्रुत ख्याल)
होरी खेलत श्री मोहन राधे धमार इसी के पुस्तक के भाग-१ में।
19- राग जौनपुरी 133 - 139
राग परिचय
स्वर मालिका
कैसे के धरूँ धीर................ (विलम्बित ख़याल)
पायल की झनकार बैरनिया....... (द्रुत ख्याल)
एरी ए मै कैसे भरन जाऊँ धमार इसी पुस्तक के भाग-१ में।
20- राग मालकौंस 140 - 148
राग परिचय
स्वर मालिका
पग लागन दे महाराज............ (विलम्बित ख़याल)
पिया संग लर पछतानी........... (द्रुत ख्याल)
पिया संग लर पछतानी........... (द्रुत ख्याल)
दिन नीके बीते जाते है........... (द्रुत ख्याल)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(1) भूपाली

यह राग कल्याण थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका ग वादी तथा ध संवादी है अतः यह पूर्वांग प्रधान राग है। इसका गायन वादन समय रात के प्रथम प्रहर में 7:00 से 10:00 बजे तक है। इसका प्राण स्वर ग तथा न्यास के स्वर सा ग प हैं। इसकी जाति औड़व है क्योंकि इसके आरोह-अवरोह में म और नि वर्जित हैं।

इसके निकटवर्ती राग देशकार और शुद्ध कल्याण हैं। कर्नाटकी संगीत में इसका नाम मोहन है। यह बहुत ही सरल एवं मधुर राग है। नए विद्यार्थियों के गले में यह आसानी से आ जाता है इसलिए इसे प्रारम्भ में सिखाया जाता है।

आरोह :- सा रे ग प ध सां।
अवरोह :- सां ध प ग रे सा।
पकड़ :- ग रे सा ध़, सा रे ग, प ग ध प ग रे सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भूपाली – त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

ध	सां			प		रे	ग	रे		ग		ग			
सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	रे	ग	–	प	ग	ध	प	ग	–
0				3				x				2			
प	ध	सां		सां		सां		प	ध	प		रे	ग		
ग	प	ध	सां	रें	सां	ध	प	सां	प	ध	प	ग	रे	सा	–
0				3				x				2			

अंतरा

प	प	ग	प		प			सां	सां	ध	गं	रें	गं		सां
ग	ग	प	ध	प	सां	–	सां	ध	ध	सां	रें	गं	रें	सां	ध
0				3				x				2			
ध	रें			सां	सां		सां	ध	ध	सां		प	ग		
गं	गं	रें	सां	रें	रें	सां	ध	सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	–
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भूपाली - त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

नमन कर चतुर श्री गुरु चरणा, तन मन निर्मल कर भव तरणा।

अंतरा

जोई जोई ध्यावत, शुभ फल पावत, जनम मरन दुख, सब निस्तरणा।

स्थायी

ध		सां				रे	सा	सा	सा	ध़		रे		रे	
सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	रे	ध़	ध़	सा	रे	ग	रे	ग	-
न	म	न	क	र	च	तु	र	शि	रि	गु	रु	च	र	णा	ऽ
0				3				×				2			
प	प		सां	ध	सां			ध		प		प	ग		
ग	ग	प	ध	सां	ध	सां	सां	सां	प	ध	प	ग	रे	सा	-
त	न	म	न	नि	र	म	ल	क	र	भ	व	त	र	णा	ऽ
0				3				×				2			

अंतरा

प	प			ग		प	सां	ध				ध			
ग	ग	ग	ग	प	-	सां	ध	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
जो	इ	जो	इ	ध्या	ऽ	व	त	शु	भ	फ	ल	पा	ऽ	व	त
0				3				×				2			
ध		सां				सां		ध		सां		प	ग		
सां	सां	गं	रें	सां	सां	प	ध	सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	-
ज	न	म	म	र	न	दु	ख	स	ब	नि	ऽ	स्त	र	णा	ऽ
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भूपाली - त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

दर्शन दीजे त्रिभुवन पालो, त्रिभुवन नायक बहु सुख दायक, विलम करो मत हाली।

अंतरा

अति उदार गत अगम निगम के, रसिकन के रस ख्याली,
सिरि कमलापति ब्रज के वासी, कर खुशहाल प्रतिपाली।

स्थायी

ध		सां		प	ग	रे			सा	ध	ग	रे		रे	
सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	रे	सा	ध़	सा	रे	ग	–	ग	–
द	र	श	न	दी	ऽ	जे	ऽ	त्रि	भु	व	न	पा	ऽ	ली	ऽ
0				3				×				2			
प	प	प		प		सां		ध				ध	सां		
ग	ग	ग	रे	ग	प	ध	ध	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
त्रि	भु	व	न	ना	ऽ	य	क	ब	हु	सु	ख	दा	ऽ	य	क
0				3				×				2			
ध			सां	रें		ध									
सां	सां	रें	रें	ध	–	सां	सां	पध	सारें	गरें	सांसां	पध	सांसां	धप	गरे
वि	ल	म	क	रो	ऽ	म	त	हाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	लीऽ
0				3				×				2			

अंतरा

ग		प				ध									
प	प	ग	प	–	प	सां	ध	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	–
अ	ति	उ	दा	ऽ	र	ग	त	अ	ग	म	नि	ग	म	के	ऽ
0				3				×				2			
ध		सां	सां			सां	सां		गं	रें		रें			सां
सां	सां	ध	ध	सां	–	रें	रें	सां	रें	गं	रें	सां	रें	सां	ध
र	सि	क	न	के	ऽ	र	स	ख्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ली	ऽ
0				3				×				2			
ध	सां	ध		सां				प		प		ग			
प	ध	सां	सां	ध	–	प	प	ग	रे	ग	प	रे	–	सा	–
सि	रि	क	म	ला	ऽ	प	ति	ब्रि	ज	के	ऽ	वा	ऽ	सी	ऽ
ध		सां	गं			सां									
सां	सां	गं	रें	–	सां	रें	सां	पध	सांसां	धप	पंध	सांसां	धप	गरे	सा–
क	र	खु	शा	ऽ	ल	प्र	ति	पाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	लीऽ
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भूपाली - त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

जब से तुम संग लागली, पीत नवेली, प्यारे बलमा मोरी।

अंतरा

जो नैनन ना देखो तोहे, कल ना परत मोहे, चर्चा करे सबसे लरियाँ।

स्थायी

रे		रे			सा		सा		ध़		ग	रे			
ग	रे	ग	रे	सा	रे	सा	ध़	-	सा	-	रे	ग	-	-	-
ज	ब	से	ऽ	तु	म	स	न	ऽ	ला	ऽ	ग	ली	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				x				2			
प		ग		ग	प		प	प		सां					
ग	-	प	प	प	ध	प	ग	ग	प	ध	सां	पध	सां	धप	गरे
पी	ऽ	त	न	वे	ऽ	ली	ऽ	प्या	रे	ब	ल्मा	ऽऽ	ऽ	मोऽ	रीऽ
0				3				x				2			

अंतरा

प		प		ग		प	सां	ध				ध			
ग	-	ग	-	प	प	सां	ध	सां	-	सां	-	सां	रें	सां	-
जो	ऽ	नै	ऽ	ऩ	न	ना	ऽ	दे	ऽ	खों	ऽ	तो	ऽ	हे	ऽ
×				2				0				3			
	गं	रें			सां		सां	ध	सां			प	प	प	ग
सां	रें	गं	रें	सां	रें	सां	पध	सां	ध	-	प	ग	रे	ग	प
क	ल	ना	प	र	त	मो	हेऽ	च	र्चा	ऽ	क	रे	ऽ	स	ब
×				2				0				3			
प				प											
सांध	सां	पध	सां	ध	प	ग	रे								
सेऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ल	रि	याँ	ऽ								
×				2											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::बोलतान::

(1)	ग रे ग रे	सा रे सा ध़	सारे गरे गप गप	धप धसां धप गरे
	ज व से ऽ	तु म स न	जऽ ऽव ऽऽ सेऽ	ऽतु ऽऽ मऽ सन
	0	3	x	2
(2)	ग रे ग रे	सा रे सा ध़	सारे ग- रेग प-	गप ध- पध सां-
	ज व से ऽ	तु म स न	जब सेऽ तुम सऽ	नला गऽ लीऽ पीऽ
	0	3	x	2
	धसां रें- सांरें गरें	सां- -ध -- प-	ग- सां- -ध --	प- ग-, सां- -ध
	तन वेऽ लीऽ ऽऽ	प्याऽ ऽरे ऽऽ वऽ	लमा प्याऽ ऽरे ऽऽ	वऽ लमा प्याऽ ऽरे
	0	3	x	2
	-- प- ग- ग	र ग सारे सासा	ध़	
	ऽऽ वऽ लमा ज	व से तुम सन	ऽ	
	0	3	x	

::स्थायी की तान::

(1)	ज व से ऽ	तु म स न	सारे गप धसां पध	सांसां धप गरे सा-
	0	3	x	2
(2)	ज व से ऽ	तु म स न	सारे गप धसां रेंसां	धप गरे सारे ग-
	0	3	x	2
(3)	ज व से ऽ	तु म स न	सारे गग रेग पप	गप धप गरे सा-
	0	3	x	2
(4)	ज व से ऽ	तु म स न	सारे सा- सारे गरे	सा- सारे गप गरे
	0	3	x	2
	सा- सारे गप धप	गरे सा- सारे गप	धसां धप गरे सा-	सारे गरे ग- --
	0	3	x	2
(5)	ज व से ऽ	तु म स न	सारे गप धसां रेंसा	रेंसां धप गरे सा-
	0	3	x	2
	सारे गप धसां रेंगं	रेंसां धप गरे गप	धसां धप गरे गप	धप गरे गरे सा-
	0	3	x	2

::अंतरे की तान::

(1)	जो ऽ नै ऽ	न न ना ऽ	सांसां धप गरे सारे	गरे गप गप धसां
	x	2	o	3
(2)	जो ऽ नै ऽ	न न ना ऽ	सांरें सांध सांसां धप	गप धसां पध सां-
	x	2	o	3
(3)	जो ऽ नै ऽ	न न ना ऽ	सांरें गरें सांसां धप	गप धसां पध सां-
	x	2	o	3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भूपाली – चौताल (विलम्बित)

स्थायी

तू ही सूर्य तू ही चन्द्र तू ही पवन तू ही अगिन
तू ही आप तू अकास तू ही धरनि यजमान

ग	-	रे	ग	-	प	ग	-	रे	सा	रे	सा
तू	ऽ	ही	सू	ऽ	र्य	तू	ऽ	ही	चं	ऽ	द्र
x		o		2		o		3		4	
सा	-	ध़	सा	ग	रे	सा	रे	सा	ध़	ध़	प़
तू	ऽ	ही	प	व	न	तू	ऽ	ही	अ	गि	न
x		o		2		o		3		4	
सा	-	रे	ग	प	ध	सां	-	ध	सां	-	सां
तू	ऽ	ही	आ	ऽ	प	तू	ऽ	अ	का	ऽ	स
x		o		2		o		3		4	
सां	गं	रें	रें	सां	ध	सां	ध	प	ग	रे	सा
तू	ऽ	ही	ध	र	नि	य	ज	ऽ	मा	ऽ	न
x		o		2		o		3		4	
प	-	रे	ग								
तू	ऽ	ही	सू								
x		o									

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन सम से

ग-	रेग	-प	ग-	रेसा	रेसा	सा-	धसा	गरे	सारे	साध	धप
तूऽ	हिसू	ऽर्य	तूऽ	हिचं	ऽद्र	तूऽ	हिप	वन	तूऽ	हिअ	गिन
x		o		2		o		3		4	
सा-	रेग	पध	सां-	धसां	-सां	सांगं	रेंरें	सांध	सांध	पग	रेसा
तूऽ	हिआ	ऽप	तूऽ	अका	ऽस	तूऽ	हिध	रनि	यज	ऽमा	ऽन
x		o		2		o		3		4	

तिगुन 9 मात्रा से

ग	-	रे	ग	-	प	ग	-	ग-रे	ग-प	ग-रे	सारेसा
तू	ऽ	हि	सू	ऽ	र्य	तू	ऽ	तूऽहि	सूऽर्य	तूऽहि	चंऽद्र
x		o		2		o		3		4	
सा-ध	सागरे	सारेसा	धधप	सा-रे	गपध	सां-ध	सां-सां	सांगंरें	रेंसांध	सांधप	रेसा
तूऽहि	पवन	तूऽहि	अगिन	तूऽहि	आऽप	तूऽअ	काऽस	तूऽहि	धरनि	यजऽ	माऽन
x		o		2		o		3		4	

चौगुन सम से

ग-रग	-पग-	रेसारेसा	सा-धसा	गरेसारे	साधधप	सा-रेग	पधसां-	धसां-सां	सांगंरेंरें	सांधसांध	पगरेसा
तूऽहिसू	ऽर्यतूऽ	हिचंऽद्र	तूऽहिप	वनतूऽ	हिअगिन	तूऽहिआ	ऽपतूऽ	अकाऽस	तूऽहिध	रनियज	ऽमाऽन
x		o		2		o		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

भव रुद्र उग्र सर्व पशुपति सम समान
ईशान भीम सकल तेरे ही अष्ट नाम

अंतरा

प	ग	-	प	सां	ध	सां	-	सां	सां	रें	सां
भ	व	ऽ	रु	ऽ	द्र	उ	ऽ	ग्र	स	ऽ	र्व
x		o		2		o		3		4	
सां	ध	-	सां	सां	रें	गं	रें	सां	ध	प	प
प	शु	ऽ	प	ति	ऽ	स	म	स	मा	न	
x		o		2		o		3		4	
प	ग	रे	ग	प	सांध	सां	-	सां	सां	रें	सां
ई	ऽ	ऽ	शा	ऽ	नऽ	भी	ऽ	म	स	क	ल
x		o		2		o		3		4	
गं	रें	-	सां	प	ध	सां	ध	प	ग	रे	सा
ते	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ही	अ	ऽ	ष्ट	ना	ऽ	म
x		o		2		o		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन सम से

पग	-प	सांध	सां-	सांसां	रेंसां	सांध	-सां	सारें	गरें	रेंसां	धप
भव	ऽरु	ऽद्र	उऽ	ग्रस	ऽवं	पशु	ऽप	तीऽ	सम	समा	ऽन
x		o		2		o		3		4	
पग	रेग	पसांध	सां-	सांसां	रेंसां	गरें	-सां	पध	सांध	पग	रेसा
ईऽ	ऽशा	ऽनऽ	भीऽ	मस	कल	तेऽ	ऽरे	ऽही	अऽ	ष्टना	ऽम
x		o		2		o		3		4	

तिगुन 9 मात्रा से

प	ग	-	प	सां	ध	सां	-	पग-	पसांध	सां-सां	सरेंसां
भ	व	ऽ	रु	ऽ	द्र	उ	ऽ	भवऽ	रुऽद्र	उऽग्र	सऽवं
x		o		2		o		3		4	
सांध-	सांसारें	गरेंरें	सांधप	पगरे	गपसांध	सां-सां	सरेंसां	गरें-	सांपध	सांधप	गरेसा
पशुऽ	पतीऽ	समस	माऽन	ईऽऽ	शाऽनऽ	भीऽम	सकल	तेऽऽ	रेऽही	अऽष्ट	नाऽम
x		o		2		o		3		4	

चौगुन सम से

पग-प	सांधसां-	सांसरेंसां	सांध-सां	सरेंगरें	रेंसांधप	पगरेग	पसांधसां-	सांसरेंसां	गरें-सां	पधसांध	पगरेसा
भवऽरु	ऽद्रउऽ	ग्रसऽवं	पशुऽप	तीऽसम	समाऽन	ईऽऽशा	ऽनऽभीऽ	मसकल	तेऽऽरे	ऽहीअऽ	ष्टनाऽम
x		o		2		o		3		4	
ग	-	रे	ग	-	प						
तू	ऽ	ही	सू	ऽ	र्य						
x		o		2							

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(2) हमीर

राग हमीर कल्याण थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें दोनों मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी ध तथा संवादी ग है। कुछ विद्वान् इसका गायन समय रात्रि का होने के कारण प वादी तथा सा संवादी मानते हैं किन्तु राग के स्वरूप को देखते हुए इसका ध वादी एवं ग संवादी अधिक उपयुक्त है। इसका गायन समय रात्रि के प्रथम प्रहर में 7 से 10 बजे तक है। इसका प्राण स्वर ध तथा न्यास के स्वर सा प ध हैं। इस राग की जाति वक्र-सम्पूर्ण है क्योंकि इसके आरोह-अवरोह में सातों स्वर क्रमानुसार नहीं लगते।

कर्नाटकी संगीत में इसे हमीर कल्याणी कहते हैं। यह राग उत्तरांगवादी है पर गाया पूर्वांग समय में जाता है इसलिए इस राग को समय सिद्धान्त का अपवाद राग कहना चाहिए। हमीर में कोमल निषाद विवादी स्वर के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। हमीर और जयजयवन्ती सामान्यतः एक-दूसरे के निकटवर्ती राग नहीं है किन्तु प के स्थान पर सा मानने से हमीर की स्वरावलियाँ जयजयवन्ती राग की हो जाती हैं जैसे :-

हमीर :- प म प ग म ध प, म प ध नि सां ध नि ध प म प ग म ध प
जयजयवन्तीः- सा नि़ सा ध़ नि रे सा, नि़ सा रे ग म रे ग रे सा नि़ सा ध़ नि रे सा

इस प्रकार हमीर का उल्टा जयजयवन्ती और जयजयवन्ती का उल्टा हमीर हो जाता है इसी प्रकार हमीर और भैरव रागों के स्वरों पर यदि ध्यान न दिया जाए तो दोनों का स्वर विस्तार काफ़ी हद तक एक जैसा होता है जैसे :-

हमीरः- सा रे सा ग म ध प मं प ग म ध प सां नि ध प सां नि(सां) ध प मं प ग म ध प ग म रे सा
भैरवः- सा रे सा ग म ध प म प ग म ध प सां नि ध प सां नि(सां) ध प म प ग म ध प ग म रे सा

इसमें कल्याण अंग की मं प ध प, नि ध सां, नि रें सां, प सां तथा कामोद अंग की ग म प ग म रे सा स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह :- सा रे सा ग म ध नि ध सां
अवरोह :- सां नि ध प मं प ध प, ग म रे सा
पकड़ :- सा रे सा ग म ध,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग हमीर – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

प				प	मं	प	ग	नि				ध			
सां	नि	ध	प	म	प	ग	म	ध	–	–	–	सां	नि	ध	प
0				3				×				2			
	मं		मं	मं	प		मं	प	मं	ग		ऩि	ऩि		
–	प	–	प	ध	ध	प	प	ग	ग	म	रे	सा	रे	सा	–
0				3				×				2			
ऩि	ऩि	सा		ग	प	मं		प		ध	नि	नि			
सा	सा	म	ग	प	मं	ध	प	नि	ध	सां	रें	सां	नि	ध	प
0				3				×				2			

अंतरा

मं		मं	प		नि	नि		ध			सां	पं	गं	मं	
प	–	प	सां	–	सां	ध	–	रें	सां	–	पं	गं	मं	र	सां
0				3				×				2			
	सां			नि		नि		नि	नि			नि	नि	मं	
–	रें	सां	नि	ध	–	सां	–	सां	रें	सां	नि	ध	ध	प	प
0				3				×				2			
मं			मं	मं	प		मं	प	प	मं	प	ग			
प	–	प	प	ध	ध	प	प	ग	म	प	ग	म	रे	सा	–
0				3				×				2			
ऩि	ऩि	सा		ग		मं		प		नि	नि	नि			
सा	सा	म	ग	प	मं	ध	प	नि	ध	सा	रें	सां	नि	ध	प
0				3				×				2			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग हमीर – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

नमन करूँ मैं गुरू चरणा, भव भय हरणा,
वंदित चरणा, तरणा प्रणत जन सुशरणा।

अंतरा

कलि मल हरणा, सब सुख करणा,
अभय वितरणा, जगदुद्धरणा, पातक हरणा।

स्थायी

ध		ध	नि		ध	ध		ध	म	प	ग	नि			
नि	ध	सां	सां	नि	नि	(प)	–	प	प	ग	म	ध	–	–	–
न	म	न	क	रूँ	ऽ	मैं	ऽ	गु	रू	च	र	ण	ऽ	ऽ	ऽ
2				0				3				×			
मं		मं	मं	मं	प			प		ग		ऩि	ऩि		
प	प	प	प	ध	ध	प	–	ग	–	म	रे	सा	रे	सा	–
भ	व	भ	य	ह	र	ण	ऽ	वं	ऽ	दि	त	च	र	ण	ऽ
2				0				3				×			
नि		सां		ध	नि		सां	सां		प	ग	नि			
सां	सां	ध	–	सां	रें	सां	नि	ध	प	ग	म	ध	–	–	–
त	र	णा	ऽ	प्र	ण	त	ज	न	सु	श	र	णा	ऽ	ऽ	ऽ
2				0				3				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

मं		मं	मं	प		नि		नि		नि		नि	नि		
प	प	प	प	सां	सां	सां	-	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	-
क	लि	म	ल	ह	र	णा	ऽ	स	ब	स	ख	क	र	णा	ऽ
0				3				×				2			
नि		सां	मं	गं				नि	नि	नि		नि	नि		
सां	सां	गं	गं	मं	रें	सां	-	सां	रें	सां	-	ध	ध	प	-
अ	भ	य	वि	त	र	णा	ऽ	ज	ग	दु	ऽ	द्ध	र	णा	ऽ
0				3				×				2			
				नि		प	ग	नि				ध	सां	ध	नि
पप	धनि	सांरें	निसां	ध	प	ग	म	ध	-	-	-	नि	ध	सां	सां
पाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	त	क	ह	र	णा	ऽ	ऽ	ऽ	न	म	न	क
0				3				×				2			
		धमं		मं		प	ग	नि							
निध	नि	प	-	प	(प)	ग	म	ध	-	-	-				
रूँऽ	ऽ	मैं	ऽ	गु	रू	च	र	णा	ऽ	ऽ	ऽ				
0				3				×							

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग हमीर – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

कैसे घर जाऊँ लँगरवा, सुन पावे मोरी सास ननदिया,
छाँड़ दे मोहे ढीट लँगरवा ।

अंतरा

हूँ जो चली पनघटवा, ठाड़ो कौन बहाने प्यारे बलमा,
छीन लई मोरी सीस गगरिया, बरजोरी कीनि हाय सुंदरवा ।

स्थायी

नि				ध		ध	नि	सां	ध		प	प		म	
ध	–	–	–	नि	ध	सां	सां	ध	नि̱	प	ध	मं	प	ग	म
कै	ऽ	ऽ	ऽ	से	ऽ	घ	र	जा	ऽ	उँ	लँ	ग	र	वा	ऽ
×				2				0				3			
नि				ध -		ध		सां	ध		प	प			
ध	–	–	–	नि	ध	रें	सां	ध	नि̱	प	ध	मं	ध	प	–
कै	ऽ	ऽ	ऽ	से	ऽ	घ	र	जा	ऽ	उँ	लँ	ग	र	वा	ऽ
×				2				0				3			
प	म	म	ग	म	ग	म	मं	प		ग	म		नि़		
ग	ग	ग	मरे	ग	म	ध	प	ग	–	म	रे	सा	रे	सा	–
सु	न	पा	ऽऽ	वे	ऽ	मो	री	सा	ऽ	स	न	न	दि	या	ऽ
				2				0				3			
नि				ध		ध	नि	नि			मं	प		प	
ध	–	–	ध	नि	ध	सां	रें	सां	नि	ध	प	मं	प	ग	म
छाँ	ऽ	ऽ	ड़	दे	ऽ	मो	हे	ढी	ऽ	ट	लँ	ग	र	वा	ऽ
×				2				0				3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अंतरा

मं			मं	प		नि	नि	नि	नि	नि		नि	नि		
प	-	प	प	सां	-	सां	सां	सां	सां	सां	-	सां	रें	सां	-
हूँ	ऽ	जो	च	ली	ऽ	प	न	घ	ट	वा	ऽ	ठा	ऽ	ड़ो	ऽ
×				2				0				3			
सां		नि	नि	ध		नि		नि	नि	नि		सां	नि		
ध	-	ध	ध	सां	-	सां	-	सां	रें	सां	-	ध	ध	प	-
कौ	ऽ	न	ब	हा	ऽ	ने	ऽ	प्या	ऽ	रे	ऽ	ब	ल	मा	ऽ
×				2				0				3			
नि		सां	मं	गं	मं		नि	सां	नि	ध	नि	नि	नि		
सां	-	गं	गं	मं	रें	सां	सां	ध	ध	सां	सां	सां	रें	सां	-
छी	ऽ	न	ल	ई	ऽ	मो	री	सी	ऽ	स	ग	ग	रि	या	ऽ
×				2				0				3			
ध	नि	सां	नि	नि		नि		सां	ध		प	प		प	
सां	सां	ध	ध	धनि	सांरें	सां	नि	ध	नि	प	ध	मं	प	ग	म
ब	र	जो	ऽ	रीऽ	ऽऽ	की	नि	हा	ऽ	य	सुं	द	र	वा	ऽ
×				2				0				3			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	कै ऽ ऽ ऽ	से ऽ घ र	सारे सासा गम रेसा	धप मंप गम रेसा
	x	2	0	3
(2)	कै ऽ ऽ ऽ	से ऽ घ र	सांनि धप मंप धप	गम धप गम रेसा
	x	2	0	3
(3)	कै ऽ ऽ ऽ	से ऽ घ र	धनि सांरें सांनि धप	मंप धप गम रेसा
	x	2	0	3
(4)	कै ऽ ऽ ऽ	से ऽ घ र	सांरें सांनि धप मंप	धप गम रेसा गम
	x	2	0	3
(5)	कै ऽ ऽ ऽ	से ऽ घ र	पप मध धप निनि	धसां सांनि रें- सांनि
	x	2	0	3
	धप मंप धनि सां-	धप मंप गम ध-	पध मंप गम धप	मंप गम रेसा निसा
	x	2	0	3
(6)	कै ऽ ऽ ऽ	से ऽ घ र	जा ऽ उँ ल	ग र वा ऽ
	x	2	0	3
	सांनि धप मंप गम	ध- -- -- --	धनि सांरें सांनि धप	सांनि धप मंप गम
	x	2	0	3
	ध- -- -- --	गमं रेंसां निसां रेंरें	सांनि धप मंप गम	रेसा कैऽ सेकै ऽसे
	x	2	0	3

::अन्तरे की तान::

(1)	हूँ ऽ जो च	ली ऽ प न	सांनि धप मंप धप	गम धप निध सां-
	x	2	0	3
(2)	हूँ ऽ जो च	ली ऽ प न	धनि सांरें सांनि धप	मंप धप निध सां-
	x	2	0	3
(3)	हूँ ऽ जो च	ली ऽ प न	गंमं रेंसां रेंसां निसां	धप मंप निध सां-
	x	2	0	3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(3) केदार

यह कल्याण थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें दोनों मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी म तथा संवादी तार सा होने के कारण यह पूर्वांगवादी राग है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि के प्रथम प्रहर में 7:00 से 10:00 बजे तक है। इसके प्राण स्वर म तथा न्यास के स्वर सा म प हैं। इसके आरोह में रे, ग तथा अवरोह में ग स्वर वर्जित होने के कारण इसकी जाति वक्र-औड़व-षाड़व है। केदार राग का वर्णन प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। यह युग के अधिकतर ग्रन्थों में केदार को एक मेल के रूप में स्वीकार किया गया है जिसमें वर्तमान बिलावल के स्वर है। यह बहुत ही मधुर और आकर्षक राग है, इसमें गांधार मध्यम के बाद सूक्ष्म रूप से अनुलग्न कण के रूप में गांधार प्रयुक्त होता है। प म और ध म की मींड तथा सा म की स्वर संगति इस राग की पहचान है। भातखण्डे जी ने केदार के एक लक्षण-गीत में कहा है ''गुप्त गान्धार रिखब बिन रोहन'' (क्र० 3 पृ० 121) दोनों मध्यंम वाले कल्याण थाट के सभी रागों के समान केदार राग में भी कोमल निषाद विवादी रूप में प्रयुक्त होता है।

तीन राग अमर माने गए हैं :- दीपक, मल्हार, और केदार। कहा जाता है कि भक्त नरसिंह मेहता जब केदार राग को गाते थे तो उनके गले में स्वयं भगवान फूलों की माला डाल देते थे एक बार आर्थिक परिस्थिति के कारण इन्हें केदार राग को गिरवी रखना पड़ा, इस बीच उनसे जलने वालों ने राजा को इनके विरुद्ध भड़का कर नरसिंह को बन्दीगृह में डलवा दिया, स्वयं भगवान ने मनुष्य रूप में उनका क़र्ज़ अदा करके गिरवी पत्र बन्दी वास की कोठरी में डालकर नरसिंह को केदार गाने का संकेत किया जिससे नरसिंह के गले में फूलों की माला पड़ी और राजा ने सम्मान सहित नरसिंह मेहता को मुक्त कर दिया। (मल्लार के प्रकार पृ० -4)

इसमें कल्याण अंग की नि रें सां, सां रें सां नि ध प मं प ध प, प ध प सां स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह :- सा म म[ग] प मं प ध प नि ध सां

अवरोह :- सां नि ध प मं प ध प म[ग], म रे सा

पकड़ :- सा म, म[ग] प मंपधप म, प म रे सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग केदार – झपताल (मध्यलय)

स्थायी

नि̣	नि̣	सा		ग	ग		प	ग	म॑
सा	सा	म	–	म	म	म	प	–	प
×		2			0		3		
प	मं	प	प		प		ग		ग
मं	प	ध	ध	प	मं	प	म	–	म
×		2			0		3		
ग	ग	ग		म॑	प		नि	नि	
म	म	प	–	प	सां	नि	ध	ध	प
×		2			0		3		
प		प	प		ग	ग	रेसा	सा	
मं	प	ध	मं	प	म	म	रे	रे	सा
×		2			0		3		

अंतरा

मं	मं	प		नि	नि	नि	ध	नि	
प	प	सां	–	सां	ध	ध	सां	रें	सां
×		2			0		3		
ध		सां		नि	नि				
सां	नि	ध	सां	रें	सां	नि	ध	प	म
×		2			0		3		
ग	ग	ग		मं	प		सां	नि	
म	म	प	–	प	सां	नि	ध	ध	प
×		2			0		3		
प	मं	म॑	प		ग	ग	रेसा	सा	
मं	प	ध	मं	प	म	म	रे	रे	सा
×		2			0		3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग केदार - एकताल (विलंबित)

स्थायी

मोर बोले रे,
सावन की रुत, बन बन डार डार।

अंतरा

आज पिया घर आये मोरे,
सजनी लेहूँ बलैया बार बार।

स्थायी

ग	प	मं	मं	प		मं		मं		ध	
म	मग	प	,प	ध	-	प	-	प	प	म	-
मो	ऽऽ	ऽ	ऽर	बो	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ
3		4		×		0		2		0	
म			सा	नि	ऩि			नि		सा	
प	(प)	म	रे	सा	रे	सा	ऩिसा	सा	सानि़	रेरे	सा
सा	ऽ	ऽ	ऽ	व	ऽ	न	ऽऽ	की	ऽऽ	ऽरु	त
3		4		×		0		2		0	
ऩि	सा	ग		मं		ग		नि		ऩि	
सा	म	,गप	(प)	प	प	सा	म	सा	सानि़	रे	सा
ब	न	,ऽब	न	डा	ऽ	रेऽ	र	डा	ऽऽ	ऽ	र
3		4		×		0		2		0	
	सा	ग	मं								
-	मग	प	प								
ऽ	मोऽ	ऽ	र								
3		4									

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अंतरा

म	मं	मं	ग	ग		प	नि नि	नि	नि	नि	
प प	प प	धम	म,मग	प	-	सां	सांसां	सां	रें	सां	निसां
आज	पिया	ऽऽ	घ,रऽ	आ	ऽ	ये	मोरे	स	ज	नी	ऽऽ
3		4		×		0		2		0	
नि		गंसां		प		नि	नि	प	नि		
सां	मं	मंरें	सां	सां	(सां)	ध	प	मंपधनिसां	रें	सांनि	धप
ले	ऽ	ऽऽ	हूँ	ब	लै	या	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	बाऽ	रबा
3		4		×		0		2		0	
मं											
ध	म,मग										
ऽ	र,मोऽ										
3											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग केदार – एकताल (विलंबित)

स्थायी

जुगनवा चमक रह्यो, प्यारि के गरवा।

अंतरा

सुरहीदार मोती को लटकन, दमक रह्यो।

स्थायी

मं
,प
,जु

ध	म	ग	मं	ग	सा	नि़		नि़	नि़	नि़	
प	म,ग	प	प(प)	म	रे	सा	नि़सा	सानि़	रे	सा	-नि़सा
ग	न,ऽ	वा	ऽऽ	च	म	के	ऽऽ	रऽ	ऽ	हो	ऽ,ऽऽ
3		4		×		0		4		0	

नि़ नि़	सा	प प	ग	मं	नि॒	नि॒		धप	मं		ग
सासा	म	मग	प	प	ध	धनि॒	धप	मं	प(प)	म	,प
प्यारि	के	ऽ,ऽ	ऽ	ग	र	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	वा	ऽ,जु
3		4		×		0		4		0	

प	निमं	ग	ग
सां	धप	म	प(प)
ग	ऽन	वा	ऽऽ
3		4	

अंतरा

मंमं	पसां	ध	गग	प		नि	नि	मं	प	नि	नि
पप	सांध	नि॒प	मंप	सां	–	रें	सां	प	नि	-,सां	रें
सुर	हीदा	ऽर	मोऽ	ती	ऽ	ऽ	को	ल	ट	ऽ,क	न
3		4		×		0		2		0	

नि	सां	सांनि		मं				ग	ग	प	मं
सां	नि	धध	प	प	(प)	म	–	म	प	सां	-,प
द	ऽ	ऽम	क	र	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,ज
3		4		×		0		2		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) चम सा - रे सा, सा म सा रे सा जुगनवा
x 4

(2) चम सा म म प, मं प ध - म, प म रे सा जुगनवा
x 4

(3) चम प - -, मं प ध नि ध प, सां ध मं प,
x
मंपध, म रे सा जुगनवा
4

(4) चम प - प सां -, सां रें सां ध प मं प ध - प म रे सा जुगनवा
x 4

::बोलतान::

(1) -- रेरे सानि सा- ममम -- मम रेसा मग पपप
ऽऽ जुऽ गऽ नऽ वाचम ऽऽ केऽ रऽ होऽ प्यारीके
0
-- मंप धप मंप सांसांसां सां- पप प- मम ममग
ऽऽ गऽ रऽ ऽऽ वाहोजु गऽ नजु गऽ नजु गऽन
3 4
प(प) म रे
वाऽ च म

::तान::

(1) चम केऽऽ मम रेसा निसा --
x 0 2
मग पमं धप मंप मम रेसा निसा --
मग पमं धप मंप सांनि धप मंप धप मंप मम रेसा निसाजु गन वाऽऽ
4

(2) चम केऽऽ पमं धप म-
x 0 2
सांनि धप मंप धप म-
सारें सांनि धप मंप धनि सांनि धप मंप धनि धप मंप धप मम रेसा
निसाजु गन वाऽऽ
4

(3) चम केऽऽ सासा मग पमं धप मंप धनि धप मंप धनि सांनि धप मंप
x 0 2
धनि सारें सांनि धप सांनि धप मंप धप मम रेसा निसाजु गन वाऽऽ
4

(4) चम सामं मम गप पप मंध धध पसां सांसां निसां धप मम रेसा
x 0
सामं मग पप मंध धप सांसां निसां धप मम रेसा
सामं गप मंध पसां निसां धप मम रेसा निसाजु गन वाऽऽ
4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग केदार – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

सोच समझ मन मीत पियरवा, सद्गुरू नाम करे सुमिरनवा।

अंतरा

घरि घरि पल पल, उमर घटत सब,
अजहुँ चेत मति मंद चतुरवा।

स्थायी

नि़	नि़		सा		मं	प		म			म	प			
सा	रे	सा	प	प	प	मं	प	ध	–	प	प	मंपध	मंप	म	–
सो	ऽ	च	स	म	झ	म	न	मी	ऽ	त	पि	यऽऽ	रऽ	वा	ऽ
0				3				×				2			
ग		ग	मं	प		नि	पध	ग		म		ग	सा		
म	–	प	प	सां	–	ध	प	म	–	ध	प	म	रे	सा	–
स	ऽ	द्गु	रू	ना	ऽ	म	क	रे	ऽ	सु	मि	र	न	वा	ऽ
0				3				×				2			

अंतरा

मं	मं	प	नि	नि		नि		सां	नि		नि	नि			
प	प	सां	सां	सां	सांनि	रें	सां	ध	ध	सांनि	रें	सां	नि	ध	प
घ	रि	घ	रि	प	लऽ	प	ल	उ	म	रऽ	घ	ट	त	स	ब
0				3				×				2			
ग	ग	ग	प	सां		नि		ग		म		ग	सा		
म	म	प	सां	रें	सां	ध	प	म	–	ध	प	म	रे	सा	–
अ	ज	हुँ	चे	ऽ	त	म	ति	मं	ऽ	द	च	तु	र	वा	ऽ
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	सो ऽ च स 0	म झ म न 3	सासा मग पमं धप x	मंप धप मम रेसा 2
(2)	सो ऽ च स 0	म झ म न 3	सासा मग पमं धप x	सांनि धप मम रेसा 2
(3)	सो ऽ च स 0	म झ म न 3	सांनि धप मंप धनि x	सांनि धप मम रेसा 2
(4)	सो ऽ च स 0	म झ म न 3	सांरें सांनि धप मंप x	सांनि धप मम रेसा 2
(5)	सो ऽ च स 0	म झ म न 3	सारे सासा मम रेसा x	पध मंप सांसां धप 2
	सांरें सांसां मंमं रेंसां 0	सांनि धप मम रेसा 3	सोऽ चस मझ मन x	मी ऽ सोऽ चस 2
	मझ मन मी ऽ 0	सोऽ चस मझ मन 3		

::अन्तरे की तान::

(1)	घ रि घ रि 0	प लऽ प ल 3	सांनि धप मम रेसा x	मग पमं धप सां- 2
(2)	घ रि घ रि 0	प लऽ प ल 3	सांरें सांनि धप मग x	पमं धप निध सां- 2
(3)	घ रि घ रि 0	प लऽ प ल 3	मंमं रेंसां रेंसां धप x	मग पमं धप सां- 2
(4)	घ रि घ रि 0	प लऽ प ल 3	मंमं रेंसां रेंरें सांनि x	धप मंप धप मम 2
	रेसा मग पमं धप 0	निध सां- मग पमं 3	धप निध सां- मग x	पमं धप निध सां- 2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(4) गौड़सारंग

यह कल्याण थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें दोनों मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी ग तथा संवादी ध होने के कारण यह पूर्वांगवादी राग है। यह गायन-वादन समय सारंग के अन्य प्रकारों की भाँति दोपहर का है। इसका प्राण स्वर ग तथा न्यास के स्वर सा ग प हैं। इसके आरोह-अवरोह में सातों स्वरों का प्रयोग क्रमानुसार न होने के कारण इसकी जाति वक्र-सम्पूर्ण है।

इसका वादी शुद्ध ग तथा कल्याण थाट से इसकी उत्पत्ति होने के कारण इस राग को सारंग के प्रकारों में नहीं माना जाता फिर भी इसमें कुछ विद्वान् प रे सा की संगति को सारंग राग की मानते हैं। विलम्बित लय में इसके स्वरों का वक्र प्रयोग सुविधा से हो जाता है पर द्रुत गति की तानों में इसके वक्र रूप को बनाए रखना कठिन होता है इसलिए अवरोह में सां नि ध प म ग रे सा ऩि सा ग रे म ग इस प्रकार कर लिया जाता है। कोमल नि का विवादी रूप में प्रयोग कल्याण थाट के दोनों मध्यम वाले रागों के समान इसमें भी होता है। विद्वान लोग गौड़-सारंग को दोपहर का बिहाग भी कहते हैं। इसमें गौड़ अंग की ग रे म ग, रे ग रे म ग तथा कल्याण अंग की प मं ध प, नि ध सां नि रें सां, (प) ग रे स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह :- ऩि सा ग रे म ग, प मं ध प, नि ध सां
अवरोह :- सां ध नि प, ध मं प ग, म रे, प रे सा।
पकड़ :- ऩि सा ग रे म ग, प रे सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौड़सारंग - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

म॑	प	प		प	ग	म			सा			सा	म	रे	
प	ध	म॑	प	ग	म	रे	सा	-	रे	सा	-	ग	रे	म	ग
2				0				3				×			
म	प		प	प				ग		म॑	प	ग	म		
ग	म	प	ध	म॑	प	म	ग	ध	म॑	प	ग	म	रे	सा	-
2				0				3				×			
नि़	नि़	सा	म	रे		ग		म॑	·	प		ध			
सा	सा	ग	रे	म	ग	प	म॑	ध	प	नि	ध	सां	नि	ध	प
2				0				3				×			

अंतरा

मं	मं	मं		प		नि		ध		ध	नि	नि		ध	
प	प	ध	प	सां	-	रें	सां	नि	ध	सां	रें	सां	ध	नि	प
2				०				3				×			
प	प	म॑	म॑	प		नि		प	ग	म	रे	प	ग	म	
म॑	म॑	प	प	सां	-	ध	प	ग	म	रे,	प	ग	म	रे	सा
2				०				3				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गौड़सारंग – एकताल (विलंबित)

स्थायी

पाती झर गैंयाँ बेलरियाँ एरी मा।

अंतरा

सब बन फूले अंबुवा, मोरला, बेगि बुलावो मोरे सैंयाँ।

स्थायी

म		निनि	नि	नि	सा	म	रेम	रे		नि	सा
गम	गरेग	सारे	सा	सा	म	गम	गरे	म	ग	सा	मग
पाऽ	तीऽऽ	झऽ	र	गैं	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	याँ	बे	ऽऽ
3		4		×		0		2		0	
ग	मं	मं		ग		रे	रे		ग	ग	नि
प	प	प	(प)	म	ग	गरे	म	ग	(प)	रे	सा
ल	रि	याँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ए	री	मा
3		4		×		0		2		0	
ग	ग	निनि	नि								
मग	मरे	सारे	सा								
पाऽ	ऽति	झऽ	र								
3		4									

अंतरा

मं	मं	प	नि	नि	नि	नि		मं	प		ध
प	प	सां	,सां	सां	रें	सां	–	प	सां	नि	नि
स	ब	ब	,न	फू	ऽ	ले	ऽ	अँ	बु	वा	ऽ
3		4		×		0		2		0	
प		सां		प		प	ग	ग	मं	धधनि	निनि
सां	(सां)	ध	निमंप	म	–	ग	म	प	प	पपधनि	सारें
मो	र	ला	ऽऽऽ	बे	ऽ	गि	बु	ला	वो	मोऽऽऽ	ऽऽ
3		4		×		0		2		0	

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr: Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि		मं		प	प	रे	रे		ग	ग	
सां	निसां	प	(प)	म	ग	गरे	म	ग	(प)	रे	सा
रे	SS	सैं	S	याँ	S	SS	S	S	ए	री	मा
3		4		×		0		2		0	

::आलाप::

(1) गै S सा (सा) ध़ नि़ प, प़ सा रे सं — पातीझर
x ... 4

(2) गै S नि़ सा ग रे म ग, रे ग रे म ग, (प) रे सा — पातीझर
x ... 4

(3) गै S ग रे म ग, प मं ध प, ग म रे सा — पातीझर
x ... 4

(4) गै S प मं ध प, सां ध नि प ग रे म ग प रे सा — पातीझर
x ... 4

::तान::

(1) गै S गग रेसा निसा गरे मग
x 0

पप मग रेसा निसा गरे मग

सांनि धप मग रेसा निसा गरे मग

सांरें सांनि धप मग रेसा निसा गरे मग प- रे- सा- पाती झर
4

(2) गै S गम गरे मग पमं धप गम गरे मग
x 0

पमं धप निनि धप गम गरे मग

पमं धप सांनि धप गम गरे मग

पमं धप सांरें सांनि धप गम गरे मग पप रेसा पाती झर
4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(3) गै ऽ सारें रेंनि सांसां धनि निप धध मंप पग मग गरे मग
x 0

पमं धप निध सारें निसां धनि पध मंप गम गरे मग प- रे- सा-

प- रे- सा- प- रे- सारे सा- पाती झर
4

(4) गै ऽ गरे मग पमं धप
x 0

मग पमं धप निध

पमं धप निध सांनि

धप निध सांनि रेंसां -- --

सारें निसां धनि पध मंप गम गरे मग प- रे- सारे सा- पाती झर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौड़सारंग - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

पल न लागे मोरी अँखियाँ आली,
बिन पियु मोरा जिया घबरावे,
चैन नहीं आवे घड़ी पल छिन दिन रैन।

अंतरा

वीर पथिकवा ले जावो संदेसवा, पिया सन कहियो मोरी बिथा,
तुमरे दरस बिन, परत नाहीं बिरहिन को कल।

स्थायी

सा	ग	म	नि़		नि़	नि़	नि़	सा	म	रे		ग	प	मं	
म	म	रे	सा	-	रे	सा	सा	ग	रे	म	ग	प	मं	ध	प
प	ल	न	ला	ऽ	गि	मो	रि	अँ	खि	याँ	ऽ	आ	लि	बि	न
0				3				×				2			
नि	सां	रें	नि	नि				ग		म			ग		नि़
ध	नि	सां	रें	सां	नि	ध	प	म	ग	रे	गम	प	रे	सा	सा
पि	यु	मो	रा	जि	या	घ	ब	रा	ऽ	वे	चैऽ	ऽ	न	न	हिं
0				3				×				2			
सा				मं़	प़	प		प		म			ग		
ध़	नि़	प़	-	प़	प	मं	प	ग	म	रे	गम	प	रे	-	सा
आ	ऽ	वे	ऽ	घ	रि	प	ल	छि	न	दि	नाऽ	ऽ	रै	ऽ	न
0				3				×				2			

अंतरा

ग			ग		मं	प	नि	ध			नि	नि	नि		
म	-	मग	प	प	प	सां	ध	सां	सां	-	सां	सां	रें	सां	-
वी	ऽ	रऽ	प	थि	क	वा	ले	जा	वो	ऽ	सं	दे	स	वा	ऽ
×				2				0				3			
नि	नि	सां	नि	ध		नि		नि			नि	सां			
सां	सां	ध	ध	सां	सां	सां	-	सां	रें	सां	सां	ध	-	नि	प
पि	या	स	न	क	हि	यो	ऽ	मो	ऽ	रि	बि	था	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				0				3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग	ग	म	रे	ग	म		नि़	सा	ग	रे	नि़	सा		ग	मं
म	म	रे	म	म	रे	सा	सा	म	म	सा	सा	म	ग	प	प
तु	म	रे	द	र	स	बि	न	प	र	त	ना	ऽ	हीं	बि	र
×				2				0				3			

			प	ग	म		
मंपध	मंप	-	ग	म	रे	सा	-
हिऽऽ	नऽ	ऽ	को	ऽ	क	ल	ऽ
×				2			

::स्थायी की तान::

(1)	प	ल	न	ला	ऽ	गि	मो	रि	निसा	गरे	मग	पमं	धप	मग	पप	रेसा
	0				3				x				2			
(2)	प	ल	न	ला	ऽ	गि	मो	रि	गरे	मग	पमं	धप	मग	पप	रेसा	निसा
	o				3				x				2			
(3)	प	ल	ऩ	ला	ऽ	गि	मो	रि	धनि	सांरें	सांनि	धप	मंप	गम	गरे	मग
	o				3				x				2			
(4)	प	ल	न	ला	ऽ	गि	मो	रि	सांरें	निसां	धनि	पध	मंप	गम	रे	मग
	o				3				x				2			

::अंतरे की तान::

(1)	वी	ऽ	रऽ	प	थि	क	वा	ले	सांरें	निसां	धनि	पध	मंप	धप	निध	सां-
	o				3				x				2			
(2)	वी	ऽ	रऽ	प	थि	क	वा	ले	गंरें	मंगं	रेंसां	निसां	धनि	पध	मंप	सां-
	o				3				x				2			
(3)	वी	ऽ	रऽ	प	थि	क	वा	ले	निसा	गरे	मग	पमं	धप	निध	सांनि	रेंसां
	o				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(5) बिहाग

कुछ लोग इसे कल्याण और कुछ लोग बिलावल थाट के अन्तर्गत मानते है। कल्याण थाट से उत्पन्न बिहाग में दोनों मध्यम लगते हैं तथा बिलावल थाट से उत्पन्न बिहाग में तीव्र मध्यम का प्रयोग विवादी स्वर के नाते होता है। इसका वादी ग और संवादी नि है अतः यह पूर्वांग प्रधान राग है। इसका गायन वादन समय रात्रि के प्रथम प्रहर में 7:00 से 10:00 बजे तक है। इसका प्राण स्वर ग तथा न्यास के स्वर सा ग प नि हैं। इस के आरोह में रे,ध स्वर वर्जित हैं, तथा अवरोह में सातों स्वरों का प्रयोग होता है इसलिए इसकी जाति औड़व-सम्पूर्ण है।

यद्यपि बिहाग राग का अवरोह संपूर्ण है तथापि धैवत तथा ऋषभ का प्रयोग दुर्बलता के साथ किया जाता है। इन स्वरों पर रुकते नहीं बल्कि निप और गसा का प्रयोग मींड के साथ किया जाता है। यह बहुत ही आकर्षक व कर्णप्रिय राग है। कर्नाटकी संगीत में इस राग को बिहाग ही कहा जाता है। इसमें कल्याण अंग की नि ध प सां नि रें सां सां नि ध प सां, केदार अंग की सा मग प तथा बिलावल अंग की म ग ᵐग, ग म प म ग प ध ग स्वर संगतियों का मिश्रण हैं।

आरोह :- सा ग म प नि सां

अवरोह :- सां नि ध प प ग म ग रे सा

पकड़ :- ऩि सा ग म प, ग म ग रे सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

सा					म		प		प				प		ग
ग	-	सा	-	-	ग	-	म	प	नि	-	प	-	ग	-	म
×				2				0				3			
म				सा				सा			सा	म			
ग	-	सा	-	नि़	-	प़	-	नि़	सा	-	म	ग	-	सा	-
×				2				0				3			
सा		मं	प		प		मं		मं		ग				
नि़	सा	ग	म	प	नि	-	प	मं	ग	-	म	ग	-	सा	-
×				2				0				3			

अंतरा

मं		प	प			सां	नि		नि	सां		नि			सां
प	मं	ग	म	प	नि	-	सां	-	प	नि	-	सां	-	-	मं
×				2				0				3			
				सां		मं	पं		मं		गं				
गं	-	सां	-	नि	सां	गं	मं	पं	गं	-	मं	गं	-	सां	-
×				2				0				3			
सां	सां		प						प		ग				
नि	नि	प	सां	-	नि	-	प	-	ग	-	म	ग	-	सा	-
×				2				0				3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग – एकताल (विलंबित)

स्थायी

कैसे सुख सोवे निंदरिया, श्याम मूरत चित चढ़ी।

अंतरा

सोच सोच सदारंग उकलावे, या विध गाँठ पड़ी।।

स्थायी

रे	ऩि	ध़	ऩिसा	म		रे		सा	ध़		नि
ग	सा(सा)	ऩि	,साम	ग	–	सा	–	ऩि	ऩि	–	सा(सा)
कै	सेऽ	ऽ	,सुख	सो	ऽ	वे	ऽ	नीं	ऽ	ऽ	दरि
3		4		×		0		2		0	
सा		ध़		प़			सा	प	प	मग	मं
ऩि	–	प़	–	सा	–	–	म	ग	मग	प	प
या	ऽ	ऽ	ऽ	श्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	मुऽ	र	त
3		4		×		0		2		0	
	मं	प		नि			ध	मं		प	रेम
–	प	नि	–ध	सां	(सां)	नि	प	प	(प)	गम,ग	गमपधम
ऽ	चि	त	ऽऽ	च	ढ़ी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ,ऽ	ऽऽऽऽऽ
3		4		×		0		2		0	
	रे	ध़	रेसा								
ग	सा(सा)	ऩि	,साम								
कै	सेऽ	ऽ	,सुख								
3		4									

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

मं	नि	नि	ध	नि			ध			ध	
प	सां	सां	निनि	रें	सां	–	सां(सां)	नि	–	प	–
सो	च	सो	चऽ	स	दा	ऽ	रंऽ	ग	ऽ	ऽ	ऽ
3		4		×		0		2		0	
मं	प	रे	म			नि़		रे		सा	
प	गम	ग	गमपधम	ग	–	सा	–	सा	–	म	ग
ऽ	ऽऽ	ऽ	ओऽऽऽक	ला	ऽ	वे	ऽ	या	ऽ	बि	ध
3		4		×		0		2		0	
मं		प	निनि				ध	मं		म रे	
प	–	नि	धसां	(सां)	–	नि	प	प	(प)	गम,ग	गमपधम
गाँ	ऽ	ठ	ऽप	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ,ऽ	ऽऽऽऽऽ
3		4		×		0		2		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) सोऽ सा (सा) ऩि प़, प़ ऩि ऩि ऩि सा - कैसे

(2) सोऽ ऩि सा ग - सा, ऩि सा म ग म ग सा कैसे

(3) सोऽ ऩि सा ग म प, प ग म ग - सा कैसे

(4) सोऽ ग म प नि - प, पमगम प नि सां नि प, ग म ग सा कैसे

::तान::

(1) सोऽ ऩिसा गरे सा-
ऩिसा गम गरे सा-
ऩिसा गम पमं गम गरे सा-
ऩिसा गम पनि सांनि धप मंप गम गरे सा-
ऩिसा गम पनि सांरें सांनि धप मंप गम गरे सा- कैसे सुख

(2) सोऽ सांनि धप मंप गम गरे सा-
ऩिसा गम पनि सांनि धप मंप गम गरे सा-
सांरें सांनि धप मंप गम गरे सा-
ऩिसा गम पनि सांरें सांनि धप मंप गम गरे सा- कैसे सुख

(3) सोऽ साम गप मंप गम ग-
साम गप मंध पनि धप मंप गम ग-
साम गप मंध पसां निध पमं गम ग-
साम गप मंध पसां निरें सांनि धप मंप गम गरे सा- कैसे सुख

(4) सोऽ गग रेसा ऩिसा
गम गग रेसा ऩिसा
पमं गम गग रेसा ऩिसा
निनि धप मंप गम गग रेसा ऩिसा
सांनि धप मंप गम गग रेसा ऩिसा
रेंसां निसां निनि धप मंप गम गरे सा-
निसांगंरेंसांनिधपमंपगमग
कैऽऽऽसेऽऽऽऽऽसुखसो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

बालमु रे मोरे मन के चीत होवन दे रे,
होवन दे रे मीत पियरवा।

अंतरा

सदारंग जिन जावो विदेसवा, सुख निंदरिया सोवन दे रे,
सोवन दे रे मीत पियरवा।

स्थायी

म	प	ध				ध				ध	म॑	प	ग		
ग	म	प	सां	नि	–	प	–	–	–	प	प	ग	म	ग	–
बा	ऽ	ल	मु	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मो	रे	म	न	के	ऽ
3				×				2				0			
प	ध					म॑	ग	म		म॑				रे	
नि	नि	(प)	–	–	–	ग	म	प	–	ग	म	ग	–	सा	–
ची	ऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हो	ऽ	व	न	दे	ऽ	रे	ऽ
3				×				2				0			
नि॒ध़		सा	सा	नि़		म	प	म		प	ग				
प़	–	नि़	नि़	सा	–	ग	म	(प)	–	ग	म	ग	गरे	सा	–
हो	ऽ	व	न	दे	ऽ	रे	ऽ	मी	ऽ	त	पि	य	रऽ	वा	ऽ
3				×				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varaṇasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

प	म	ग			म॑	सां	सां	नि		नि	नि	नि	नि		
ग	ग	म	प	-	प	नि	नि	सां	-	सा	सां	सां	रें	सां	-
स	दा	ऽ	रं	ऽ	ग	जि	न	जा	ऽ	वो	बि	दे	स	वा	ऽ
3				×				2				0			
नि	नि				ध			म॑		सां	सां	नि		ध	
सां	सां	(सां)	-	नि	नि	(प)	-	प	-	नि	नि	सा	नि	(प)	-
सु	ख	नी	ऽ	द	रि	या	ऽ	सा	ऽ	व	न	दे	ऽ	रे	ऽ
3				×				2				0			
प	प	ध	सां	नि	ध			म॑		म॑		रे		रे	
ग	म	प	नि	सां	नि	(प)	-	प	-	ग	म	ग	ग	(सा)	-
सो	ऽ	व	न	दे	ऽ	रे	ऽ	मी	ऽ	त	पि	य	र	वा	ऽ
3				×				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::बोलतान::

(1)	वा ऽ ल मु 3	रे ऽ ऽ ऽ x	सांनिध पमंप 2	गमग रेसानि़सा 0
	वा ऽ ल मु 3	रे ऽ ऽ ऽ x	वालम रेमोरे 2	मनके ऽऽऽऽ 0
(2)	वा ऽ ल मु 3	रे ऽ ऽ ऽ x	निसांगरें सांनिधप 2	मंपगम गरेसा- 0
	वा ऽ ल मु 3	रे ऽ ऽ ऽ x	वाऽऽऽ लऽमऽ 2	रेऽमोरे मनकेऽ 0

::स्थायी की तान::

(1)	वा ऽ ल मु 3	रे ऽ ऽ ऽ x	गम पनि सांनि धप 2	मंप गम गरे सा- 0
(2)	वा ऽ ल मु 3	रे ऽ ऽ ऽ x	सांनि धप मंप गम 2	पम गम गरे सा- 0
(3)	वा ऽ ल मु 3	रे ऽ ऽ ऽ x	निसां गरें सांनि धप 2	मंप गम गरे सा- 0
(4)	वा ऽ ल मु 3	रे -प मंप गम x	ग- -नि धप गम 2	ग- -सां निसां निध 0
	प- -ध मंप गम 3	ग- -म गरे सानि़ x	सा- -म गरे सानि़ 2	सा- -म गरे सानि़ 0
	सा वाऽ ल मु 3			
(5)	वा ऽ ल मु 3	रे ऽ ऽ ऽ x	निसा ग- साग म- 2	गम प- मंप नि- 0
	पनि सां- निसां गरें 3	सांनि धप मंप गम x	गरे सा- वाऽ लम 2	रेऽ वाऽ लम रेऽ 0

::अन्तरे की तान::

(1)	स दा ऽ रं 3	ऽ ग जि न x	सांनि धप मग रेसा 2	निसा गम पनि सां- 0
(2)	स दा ऽ रं 3	ऽ ग जि न x	सांनि धप मंप गम 2	पम गम पनि सां- 0
(3)	स दा ऽ रं 3	ऽ ग जि न x	निसां गरें सांनि धप 2	मंप गम पनि सां- 0
(4)	स दा ऽ रं 3	ऽ ग जि न x	सांनि धप मंप गम 2	पम गम गरे सा- 0
	निसा गम पग मंप 3	गम प- नि- सां- x	गम प- नि- सां- 2	गम प- नि- सां- 0

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(6) दुर्गा (बिलावल थाट)

दुर्गा नाम के दो राग प्रचार में हैं :- पहला बिलावल थाट का जिसमें सभी स्वर शुद्ध लगते हैं तथा दूसरा खमाज थाट का जिसमें नि कोमल लगता है। बिलावल थाट का दुर्गा बिलावल थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। वादी म तथा संवादी तार सा है। कुछ विद्वान् इसका वादी संवादी ध-रे मानते हैं (रा० वि० 2 पृ० 140)। इसका गायन समय रात्रि के दूसरे प्रहर में 10:00 से 11:30 बजे तक है। इसके प्राण स्वर रे-ध तथा न्यास के स्वर सा-प हैं। आरोह अवरोह में ग-नि वर्जित होने के कारण इसकी जाति औड़व-औड़व है।

दुर्गा के ही स्वरों में शुद्ध मल्हार तथा जलधर केदार दो राग और हैं। जिनके वादी-संवादी म-सा ही हैं शुद्ध मल्हार में मल्हार अंग तथा जलधर केदार में केदार अंग होने के कारण समान स्वर होते हुए भी दुर्गा का स्वरूप उनसे नहीं मिलता। खमाज थाट के दुर्गा में सा ग म ध नि स्वरों का प्रयोग होता है। वह भी औड़व जाति का राग है। बिलावल थाट का दुर्गा खमाज थाट के दुर्गा से अधिक प्रचलित है। कर्नाटकी संगीत में इस राग को शुद्ध सावेरी कहा जाता है।

आरोह :- सा रे म प ध सां

अवरोह :- सां ध प म रे सा।

पकड़ :- प ध म रे प, ध म रे, सा रे ध़ सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा (मध्य लय)

स्थायी

सा रे म प	ध म प ध	सां – ध प	म म रे सा
0	3	x	2
सा रे ध़ सा	पधु रे मुरे सा	प – म प	म म रे सा
0	3	x	2

अन्तरा

म म प ध	सां – रें सां	ध ध सां रें	मं रें सां सां
0	3	x	2
सां रें ध सां	प़ ध म रे	प – म प	म म रे सा
0	3	x	2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा (मध्य लय)

स्थायी

श्याम सुन्दर आज निरखि सखी
चकित भई तन की सुधी भुलाई

अंतरा

मोर मुकुट कटि काछिनी
गले बैजन्ती माला

स्थायी

सा	-	ध	प	म	रे	सा	रे	प	-	प	ध	पध	पम	मप	ध
श्या	ऽ	म	सु	न्द	र	छ	वि	आ	ऽ	ज	नि	रऽ	खिऽ	सऽ	खी
0				3				x				2			
म	म	प	ध	म	ध	प	ध	सां	सां	-	सां	धसां	रेंसां	धप	मप
च	कि	त	भ	ई	त	न	की	सु	धी	ऽ	भु	लाऽ	ऽऽ	ईऽ	ऽऽ
0				3				x				2			

अन्तरा

ध	-	म	म	प	प	धसां	पध	सां	-	-	ध	सां	-	-	-
मो	ऽ	ऽर	मु	कु	ट	कऽ	टिऽ	का	ऽ	ऽ	छि	नी	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				x				2			
ध	ध	प	ध	म	-	रे	सा	सारे	म	रेम	प	मप	ध	धसां	पध
ग	ले	बै	ऽ	जं	ऽ	ती	ऽ	माऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	लाऽ	ऽऽ
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	श्या ऽ म सु 0	न्द र छ वि 3	सारे मम रेम पप x	मप धप मम रेसा 2
(2)	श्या ऽ म सु 0	न्द र छ वि 3	मम रेसा धध पम x	संासां धप मम रेसा 2
(3)	श्या ऽ म सु 0	न्द र छ वि 3	सारे मप धसां धप x	मप धप मम रेसा 2
(4)	श्या ऽ म सु 0	न्द र छ वि 3	सारे मप धसां रेंरें x	सांसां धप मम रेसा 2
(5)	श्या ऽ म सु 0	न्द र छ वि 3	धध पध पम सांसां x	धसां धप रेंरें सांरें 2
	सांध मंमं रेंमं रेंसां 0	धसां धरें सांसां धप 3	मप धप धसां धसां x	रेंसां धप मम रेसा 2

::अन्तरे की तान::

(1)	मो ऽ ऽर मु 0	कु ट कऽ रिऽ 3	सांसां धप मम रेसा x	रेम पध मप धसां 2
(2)	मो ऽ ऽर मु 0	कु ट कऽ रिऽ 3	सांरें सांसां धप मप x	रेम पध मप धसां 2
(3)	मो ऽ ऽर मु 0	कु ट कऽ रिऽ 3	का ऽ ऽ छि x	नी ऽ ऽ ऽ 2
	सांरें मरें सांसां धप 0	मप धप मम रेसा 3	मम रेप पम धध x	पसां सांध रेंरें सां– 2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(7) शंकरा

यह राग बिलावल थाट में वर्गीकृत किया जाता है। इसमें सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी ग और संवादी नि है। इसका गायन-वादन समय रात्रि के प्रथम प्रहर में 7:00 से 10:00 बजे तक है। इसके प्राण स्वर ग-नि तथा न्यास के स्वर सा-ग-प हैं। इसके आरोह में रे और म तथा अवरोह में म वर्जित होने के कारण इसकी जाति औड़व-षाड़व है।

यह पूर्वांगवादी होते हुए भी उत्तरांग प्रधान राग है। इसका चलन सां, निध (सां) नि प, ग प नि ध सां नि रें सां, नि ध (सां) निप इस प्रकार उत्तरांग में अधिक किया जाता है। पूर्वांग में पग प रेंगसा से इस राग की पहचान होती है। इसके निकटवर्ती राग मालश्री और बिहाग हैं। इसमें सा और प का भी पर्याप्त मात्रा में प्रयोग होता है इसलिए कुछ विद्वान् शंकरा राग का वादी, संवादी सा-प मानते हैं। (संगीता० 2 पृ० 39)

आलाप करते समय ग-सा मींड से प्रयुक्त किया जाता है। अतः रे नहीं लगाते। तान में गगरेसा गपगरेसा द्रुत गति से रे का प्रयोग कर लिया जाता है। कुछ विद्वान् तान में भी रे का प्रयोग नहीं करते और गपगसा पपगपगसा करते हैं और इस राग की जाति रे-म वर्जित होने के कारण औड़व-औड़व मानते हैं। इसमें भूपाली अंग की ग प ग रे सा, हंसध्वनि अंग की नि प ग प ग रे सा तथा कल्याण अंग की प सां, नि ध सां नि रें सां स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह :- सा ग प नि ध सां

अवरोह :- सां निप, नि ध (सां) नि प, ग प ग रे सा।

पकड़ :- सां नि प, ग प नि ध (सां) नि प, ग प ग सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शंकरा – झपताल (मध्यलय)

स्थायी

नि	नि		ध	ध	ग	प	नि	ध	
सां	सां	नि	नि	प	प	नि	ध	सां	नि
×		2			0		3		
ध	प	ग	प	ध	प	ग	रे		
प	ग	प	नि	प	ग	प	ग	–	(रे)सा
×		2			0		3		
सा	ध़	सा	नि़	सा	रे	प	ग	प	ध
नि़	प़	नि़	सा	ग	सा	ग	प	नि	प
×		2			0		3		
प		ध	प	ग	प	ग	रे		
सां	नि	प	ग	प	ग	प	ग	–	(रे)सा
×		2			0		3		

अंतरा

ग	ग	प		नि	नि	नि	नि	सां	
प	प	सां	–	सां	सां	सां	रें	रें	सां
×		2			0		3		
नि	नि	नि		ध	ग	प	नि	ध	
सां	रें	सां	नि	प	प	नि	ध	सां	नि
×		2			0		3		
नि	नि	सां	पं	गं	पं	ग	रें		
सां	सां	गं	गं	पं	गं	पं	गं	–	(रें)सां
×		2			0		3		
प		ध	प	ग	प	ग	रे		
सां	नि	प	ग	प	ग	प	ग	–	(रे)सा
×		2			0		3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शंकरा - त्रिताल (विलंबित)

स्थायी

सो जानूँ रे जानूँ बालमवा, देखे तिहारे पीत के वचन।

अंतरा

उत्तर बनावत बन नहीं आवत, कहे देत सब पीत के लछन।

स्थायी

सां	ध		ध	ध	प		ध	मं				रे			
निध	सां(सां)	-	निनि	प	निध	(सां)	नि	प	ग	-	(प)	ग	-रे	सा	-
सोऽ	जाऽ	ऽ	नूँरे	जा	ऽऽ	ऽ	नूँ	बा	ऽ	ऽ	ल	मु	ऽऽ	वा	ऽ
3				×				2				0			
सा		प़	नि़	प	ग	रे	नि़	सा	ध	ध	पग	रे		नि़	
प़	-	सा	सा	ग	प	गरे	सा	सां	निनि	(प)	गप	ग	-रे	सारे	सा
दे	ऽ	खे	ति	हा	ऽ	ऽऽ	रे	पी	ऽऽ	त	केऽ	ब	ऽऽ	चऽ	न
3				×				2				3			

अंतरा

ग	ग	प	नि	नि			नि	नि	सां	रें	नि	नि			ध
प	प	सां	-सां	सां	-	रें	सां	सां	गं	सां	सां	सां	(सां)	निध	सांनि
उ	त	र	ऽब	ना	ऽ	व	त	ब	न	न	हिं	आ	ऽ	वऽ	ऽऽ
3				×				2				0			
नि	नि	सां	सां	पं	रेंसां	ध	प	ग	प	निध	प	रे		नि़	
सां	सां	गं	,गं	गंपंरेंगं	नि	प	ग	प	सां	प	गप	ग	-रे	सारे	सा
क	हे	ऽ	,दे	ऽऽऽऽ	त	स	ब	पी	ऽ	त	केऽ	ल	ऽऽ	छऽ	न
3				×				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) जा सा, (सा) ऩि प़, ऩि ध़ सा, सा ग प ग प ग सा — सो जानूँ रे
x

(2) जा सा ग प –, ग प नि प ग प – ग प ग सा — सो जानूँ रे
x

(3) जा ग प नि – प, ग प नि ध (सां) नि – प, ग प ग सा — सो जानूँ रे
x

(4) जा प, प सां –, (सां) नि प, ग प नि ध सां नि रें
x

सां नि प ग प ग सा — सो जानूँ रे

::तान::

(1) जा SS S नूँ सा – ग प – – ग प नि – प – – – ग प नि ध सां नि – – प – ग प
x
नि ध सां नि रें सां गंगं रेंसां निध सांनि पप गप गरे सा– सोजा ऽनूँरे
2

(2) जा SS S नूँ पप गप गरे सा–
x 2

निनि पप गप गरे सा–

सांनि पप गप गरे सा–

रेंसां निसां निध सांनि पप गप गरे सा–

गंगं रेंसां निध सांनि पप गप गरे सा–

गप निध सां– गप निध सां– गप निध सां– –– सोजा ऽनूँरे

(3) जा SS S नूँ पप गप पग पप गप गप गरे सा–
x 2

निनि पनि निप निनि पप गप गरे सा–

गरें सांगं रेंसां गंगं रेंसां निध सांनि पप गप गप गरे सा–

गप गप निध सां– गप गप निध सां– गप गप निध सां– सोजा ऽनूँरे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शंकरा – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

करना हो सो करले प्यारे, जनम जात दिन रैन संवारे।

अंतरा

धन जोबन कछु थिर नहीं है, चेतन हो तो चेत संवारे।

अंतरा 2.

मनरंग प्रभु मत भूल जगत संग, काहे को सिर पर लेत तू भारे।

स्थायी

नि़	नि़	प		ग		प	सां	ध		प	ग	रे		रे	
सा	सा	ग	–	प	–	सां	नि	प	प	ग	प	ग	–	सा	–
क	र	ना	ऽ	हो	ऽ	सो	ऽ	क	र	ले	ऽ	प्या	ऽ	रे	ऽ
0				3				×				2			
नि़	सा		प़		नि़		नि	सा		प	ग	रे		रे	
सा	प़	प़	सा	–	रे	सा	सा	प	–	ग	प	ग	–	सा	–
ज	न	म	जा	ऽ	त	दि	न	रै	ऽ	न	स	वा	ऽ	रे	ऽ
0				3				×				2			

अंतरा

ग	ग	प			नि	नि	नि	नि	रें		ध		प	ध	
प	प	सां	–	सां	सां	सां	सां	सां	सां	नि	प	प	निध	सां	नि
ध	न	जो	ऽ	ब	न	क	छु	थि	ऽ	र	न	हीं	ऽऽ	है	ऽ
0				3				×				2			
प		ग	ग	प		ध		ग		प	ग	रे		रे	
ग	–	प	प	सां	नि	प	–	प	–	ग	प	ग	–	सा	–
चे	ऽ	त	न	हो	ऽ	तो	ऽ	चे	ऽ	त	सं	वा	ऽ	रे	ऽ
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा - 2

प			
प प सां सां	सां सां सां सां	निसां रेंसां नि प	प निध सां नि
म न रं ग	प्र भ म त	भूऽ ऽऽ ल ज	ग तऽ सं ग
0	3	x	2
प		ग प	
ग - प प	सां नि प प	प - ग प	ग - सा -
का ऽ हे को	सि र प र	ले ऽ त त	भा ऽ रे ऽ
0	3	x	2

::स्थायी की तान::

(1)	क र ना ऽ	हो ऽ सो ऽ	पप गप निनि पप	गप गप गरे सा-
	o	3	x	2
(2)	क र ना ऽ	हो ऽ सो ऽ	गप निध सांनि पप	गप गप गरे सा-
	o	3	x	2
(3)	क र ना ऽ	हो ऽ सो ऽ	पप गप पग पप	गप गप गरे सा-
	o	3	x	2
(4)	क र ना ऽ	हो ऽ सो ऽ	निनि पनि निप निनि	पप गप गरे सा-
	o	3	x	2
(5)	क र ना ऽ	हो ऽ सो ऽ	गप पग निनि पप	गप गप गरे सा-
	o	3	x	2
(6)	क र ना ऽ	हो ऽ सो ऽ	क र ले ऽ	प्या ऽ रे ऽ
	o	3	x	2
	गप गप निनि पप	गप निध सांनि पप	गप निध सांनि रेंसां	निनि पप गप निध
	o	3	x	2
	सांनि रेंसां गंगं रेंसां	निध सांनि पप गप	गरे सा- कर नाऽ	हो ऽ कर नाऽ
	o	3	x	2
	हो ऽ कर नाऽ	हो ऽ सो ऽ		
	o	3		

::अन्तरे की तान::

(1)	ध. न जो ऽ	ब न क छु	सांनि पप गप गरे	सा- गप निध सां-
	o	3	x	2
(2)	गप पग निनि पप	गप पग सांसां निसां	निध सांनि पप गप	पग गंगं रेंसां निध
	o	3	x	2
	सांनि पप गप गरे	सा- गप निध सां-	ध न जो ऽ	ध न जो ऽ
	o	3	x	2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शंकरा - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

बोल रे रंगीले,
बन रे तू मोसे बोल, हो वे तू मोसे बोल।

अंतरा

एक पग ठाड़ी दोऊ करजोर, हँस हँस आज बनी से बोल।

स्थायी

नि
सां
बो

नि			ध					मं		प		ध			ध
सां	नि	-	नि	(प)	-	-	-	प	-	नि	ध	सां	नि	-	प
ल	रे	ऽ	रं	गी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ब
3				×				2				0			
मं	प		प	ग		प		ग		रे		रे		नि़	सा
प	ग	-	ग	प	-	ग	-	प	-	ग	-	सा	-	सा	प़
न	रे	ऽ	तू	मो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	से	ऽ	बो	ऽ	ल	हो
3				×				2				0			
	प़		नि़	प		ग		ग		प		ध			रें
-	सा	-	सा	ग	-	प	-	प	-	नि	ध	सां	नि	-	सां
ऽ	वे	ऽ	तू	मो	ऽ	से	ऽ	बो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ,	बो
3				×				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा - 2

प			
प प सां सां	सां सां सां सां	निसां रेंसां नि प	प निध सां नि
म न रं ग	प्र भ म त	भूऽ ऽऽ ल ज	ग तऽ सं ग
0	3	x	2
प		ग प	
ग - प प	सां नि प प	प - ग प	ग - सा -
का ऽ हे को	सि र प र	ले ऽ त त्	भा ऽ रे ऽ
0	3	x	2

::स्थायी की तान::

(1)	क र ना ऽ	हो ऽ सो ऽ	पप गप निनि पप	गप गप गरे सा-
	0	3	x	2
(2)	क र ना ऽ	हो ऽ सो ऽ	गप निध सांनि पप	गप गप गरे सा-
	0	3	x	2
(3)	क र ना ऽ	हो ऽ सो ऽ	पप गप पग पप	गप गप गरे सा-
	0	3	x	2
(4)	क र ना ऽ	हो ऽ सो ऽ	निनि पनि निप निनि	पप गप गरे सा-
	0	3	x	2
(5)	क र ना ऽ	हो ऽ सो ऽ	गप पग निनि पप	गप गप गरे सा-
	0	3	x	2
(6)	क र ना ऽ	हो ऽ सो ऽ	क र ले ऽ	प्या ऽ रे ऽ
	0	3	x	2
	गप गप निनि पप	गप निध सांनि पप	गप निध सांनि रेंसां	निनि पप गप निध
	0	3	x	2
	सांनि रेंसां गंगं रेंसां	निध सांनि पप गप	गरे सा- कर नाऽ	हो ऽ कर नाऽ
	0	3	x	2
	हो ऽ कर नाऽ	हो ऽ सो ऽ		
	0	3		

::अन्तरे की तान::

(1)	ध न जो ऽ	ब न क छु	सांनि पप गप गरे	सा- गप निध सां-
	0	3	x	2
(2)	गप पग निनि पप	गप पग सांसां निसां	निध सांनि पप गप	पग गंगं रेंसां निध
	0	3	x	2
	सांनि पप गप गरे	सा- गप निध सां-	ध न जो ऽ	ध न जो ऽ
	0	3	x	2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शंकरा - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

बोल रे रंगीले,
बन रे तू मोसे बोल, हो वे तू मोसे बोल।

अंतरा

एक पग ठाड़ी दोऊ करजोर, हँस हँस आज बनी से बोल।

स्थायी

															नि
															सां
															बो
नि			ध					मं		प		ध			ध
सां	नि	-	नि	(प)	-	-	-	प	-	नि	ध	सां	नि	-	प
ल	रे	ऽ	रं	गी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ब
3				×				2				0			
मं	प		प	ग		प		ग		रे		रे		नि़	सा
प	ग	-	ग	प	-	ग	-	प	-	ग	-	सा	-	सा	प़
न	रे	ऽ	तू	मो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	से	ऽ	बो	ऽ	ल	हो
3				×				2				0			
	प़		नि़	प		ग		ग		प		ध			रें
-	सा	-	सा	ग	-	प	-	प	-	नि	ध	सां	नि	-	सां
ऽ	वे	ऽ	तू	मो	ऽ	से	ऽ	बो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ,	बो
3				×				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

ग
प
ए

म	प		नि	नि		नि				नि					नि
प	सां	-	सां	सां	-	सां	-	-	-	सां	-	(सां)	-	-	सां
क	प	ऽ	ग	ठा	ऽ	ड़ी	ऽ	ऽ	ऽ	दो	ऽ	ऊ	ऽ	ऽ	क
3				×				2				0			
सां	रें		नि			ध				प					प
गं	(सां)	-	सां	नि	-	प	-	-	-	सां	-	नि	-	-	ग
र	जो	ऽ	र	हँ	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ	हँ	ऽ	स	ऽ	ऽ	आ
3				×				2				0			
	ग		मं	प		निध		मं	प	ग		रे			नि
-	प	-	प	सां	-	(प)	-	प	ग	प	-	ग	रे	सा	सां
ऽ	ज	ऽ	ब	नी	ऽ	से	ऽ	बो	ऽ	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ,	बो
3				×				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(8) देस

यह राग खमाज थाट में वर्गीकृत किया जाता है। इसमें दोनों निषाद एवं शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी रे एवं संवादी प है। इसका गायन-वादन समय रात के द्वितीय प्रहर में 10:00 से 11:30 बजे तक है। इसके प्राण स्वर रे प तथा न्यास के स्वर सा रे प हैं। इसके आरोह में ग ओर ध नहीं लगते और अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग होता है इसलिए इसकी जाति औड़व-सम्पूर्ण है। कुछ बन्दिशों में रे ग म प और प ध नि सां के प्रयोग होने के कारण विद्वान् इसकी जाति सम्पूर्ण भी मानते हैं।

यह ठुमरी प्रधान राग है, इसलिए इस राग के नियमों में कुछ शिथिलता आ जाती है। ठुमरी प्रधान राग होने पर भी इसमें कुछ बड़े ख़याल पाए जाते हैं। इसमें विवादी स्वर के रूप में कोमल ग तार सप्तक में कभी-कभी प्रयुक्त किया जाता है। यह बहुत ही आकर्षक एवं कर्णप्रिय राग है। इसका निकटवर्ती राग सोरठ है। कर्नाटकी संगीत में इस राग को देस ही कहते हैं।

आरोह :- सा, रे, म प, नि सां

अवरोह :- सां नि॒ ध प, म ग, रे ग सा।

पकड़ :- रे म प नि॒ ध प, प ध म (म) ग रे ग ऩि सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग देस - त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

प			ग			रे	रे	म	म	प		सां	सां		
नि̲	ध	प	म	ग	रे	ग	सा	रे	रे	म	प	नि	नि	सां	-
2				0				3				×			
गं				रें		प		प	सां			ग			
रें	ग̲	रें	सां	नि̲	ध	म	प	सां	नि̲	ध	प	म	ग	रे	रे
2				0				3				×			
ग		म		ग			सा	रे	सां			प		प	
रे	ग	रे	प	म	ग	रे	रे	सां	रें	सां	नि̲	ध	प	म	प
2				0				3				×			

अंतरा

प		प				सां		सां	नि		नि	सां			
म	-	म	प	-	प	नि	-	नि	सां	-	सां	मं	गं	रें	सां
2				0				3				×			
मं	रें			गं	गं	रेंसां		सां	सां		नि	नि			
रें	पं	मं	गं	रें	रें	नि	सां	नि	नि	सां	रें	सां	नि̲	ध	प
2				0				3				×			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस - त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

मेहा रे बन बन डार डार मुरला बोले, मेहा बौछारन बरसे।

अंतरा

कारी घटा घन फिर उमड़ावत, पपीहा बोले, सदारंग मनवा लरजे।

स्थायी

															प
															मप
															मेऽ
सां		नि		नि	नि	नि	सां	नि̱		प		ग			म
नि	–	सां	–	सां	रें	सां	नि̱	ध	प	ध	(म)	–	म	प	प
हा	ऽ	रे	ऽ	ब	न	ब	न	डा	ऽ	र	डा	ऽ	र	मु	र
×				2				0				3			
		पग		मग				रे		सां		प		प	
मप	ध	म	–	रे	–	–	–	सां	–	नि̱	–	ध	प	म	प
लाऽ	ऽ	बा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽ
×				2				0				3			
प			ग	ग										प	
ध	–	(म)	म	म	ग	रे	–	रेग	मप	धप	मग	रेग	सारे	म	प
छा	ऽ	र	न	ब	र	से	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	मे	ऽ
×				2				0				3			

अंतरा

प			प	म		सां	सां	नि		नि		सांरें		नि	
म	–	म	म	प	–	नि	नि	सां	सां	सां	सां	नि	–	सां	सां
का	ऽ	रि	घ	टा	ऽ	घ	न	फि	र	उ	म	डा	ऽ	व	त
×				2				0				3			
गं	गं			सां		नि		नि	नि		सां			प	म
रें	रेंगं	रें	सां	रें	नि	सां	–	सां	सां	–	नि̱	–	ध	म	प
प	पिऽ	या	ऽ	बो	ऽ	ले	ऽ	स	दा	ऽ	रं	ऽ	ग	म	न
×				2				0				3			
प		ग		ग				रे		सां		प		प	म
मपध	पध	म	मग	रे	–	–	–	सां	–	नि̱	–	ध	–	म	प
बाऽ	ऽऽ	ल	रऽ	जे	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	बौ	ऽ
×				2				0				3			
प				ग	म	ग								प	
ध	–	मप	गम	म	ग	रे	–	रेग	मप	धप	मग	रेग	सारे	म	प
छा	ऽ	रऽ	नऽ	ब	र	से	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	मे	ऽ
×				2				0				3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	हा ऽ रे ऽ	निसा रेम पनि सांरें	सांनि धप मग रेग	सा- निसा मे ऽ
	x	2	3	4
(2)	हा ऽ रे ऽ	मग रेग सा- निसा	निनि धप मग रेग	सा- निसा मे ऽ
	x	2	3	4
(3)	हा ऽ रे ऽ	रेम पनि सांरें सांनि	धप सांनि धप मग	रेग सा- मे ऽ
	x	2	3	4
(4)	हा ऽ रे ऽ	मग रेग सा- निसा	पप मग रेग सा-	निसा निनि धप मग
	x	2	3	4
	रेग सा- निसा सांरें	सांनि धप मग रेग	सा- निसा रेम पनि	सां- -- मे ऽ
	x	2	3	4
(5)	हा ऽ रे ऽ	निसा रेम गरे सारे	मप मग रेम पनि	धप मप निसां निध
	x	2	3	4
	पनि सांरें सांनि सांरें	मंगं रेंगं निसां रेंरें	सांरें सांनि धप मग	रेग निसा मे ऽ

::अंतरे की तान::

(1)	का ऽ रि घ	टा ऽ घ न	सांनि धप मग रेग	सा- रेम पनि सां-
	x	2	3	4
(2)	का ऽ रि घ	टा ऽ घ न	निसां रेंरें सांनि धप	मग रेम पनि सां-
	x	2	3	4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(9) तिलककामोद

यह राग खमाज थाट के अन्तर्गत आता है। देश के अधिकांश उत्तरी भाग में इसमें शुद्ध स्वरों का प्रयोग किया जाता है जबकि महाराष्ट्र तथा बंगाल में दोनों निषादों का प्रयोग करते हैं इसीलिए इसे खमाज थाट का कहा गया है। इसके वादी स्वर के विषय में कुछ मतभेद है कुछ लोग इसका वादी स्वर रे तथा कुछ लोग इसका वादी स्वर सा मानते हैं। रे पर न्यास नहीं होता इसलिए इसका वादी स्वर सा ही अधिक उपयुक्त है। संवादी स्वर पंचम ही सर्वसम्मत है। इसका गायन, वादन समय रात्रि के दूसरे प्रहर में 10:00 से 11:30 बजे तक है। इसके प्राण स्वर ग ध तथा न्यास के स्वर सा ग नि हैं। इस राग की जाति के विषय में भिन्न-भिन्न मत है। औड़व-सम्पूर्ण, षाड़व-सम्पूर्ण या वक्र-सम्पूर्ण। इनमें आरोह औड़व तथा अवरोह वक्र-सम्पूर्ण अधिक उपयुक्त है।

राग तिलककामोद ठुमरी अंग का राग है इसमें बड़े ख़याल नहीं पाए जाते। ठुमरी अंग का होने के कारण इसके नियमों में शिथिलता आ जाती है। संभवतः इसीलिए इसके थाट, स्वर, जाति आदि में मतभेद हैं। ग सा, रे प, सां प, सां नि इन स्वर संगतियों के कारण यह राग अन्य रागों से अलग ही दिखाई देता है। यह एक सरल राग है। वाद्यों पर धुनें भी इस राग में बजाई जाती हैं। कोमल नि का प्रयोग करने से यह देस तथा सोरठ का निकटवर्ती राग हो जाता है।

आरोह :- सा रे ग सा, रे म प ध म प, सां
अवरोह :- सां प, ध म ग, सा रे ग सा ऩि।
पकड़ :- प़ ऩि सा रे ग सा, रे प म ग सा ऩि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तिलककामोद – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

सा	ध़	सा	नि़	ग		रे	सा	ग		ग	रे	ग		रेसा	
नि़	प़	नि़	सा	रे	ग	नि़	सा	रे	ग	रे	प	म	ग	नि़	सा
×				2				0				3			
म	प	ध	प	प	ध	प	सां	प	ग		रे	ग	रे	रेसा	नि़
रे	म	प	ध	म	प	सां	प	ध	म	ग,	सा	रे	ग	नि़	सा
×				2				0				3			

अंतरा

प	ध	सां	सां	नि		नि	नि	गं		गं		गं		रेंसां	नि
म	प	नि	नि	सां	--	रें	सां	रें	गं	रें	गं	मं	गं	नि	सां
×				2				0				3			
ध	सां	रें	नि		सां	प	ग		रे	ग	रे	ग		रेसा	नि़
प	नि	सां	रें	सां	प	ध	म	ग	सा	रे	प	म	ग	नि़	सा
×				2				0				3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तिलककामोद - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

नीर भरन कैसे जाऊँ सखी अब, डगर चलत मोसे करत रार।

अंतरा

ऐसो चंचल चपल हट नटखट,
मानत न काहु की बात, बिनति करत मैं गई रे हार।

स्थायी

ग			रे			रेसा	नि़	रे		प़	नि़	ग	रे	सा	नि़
रे	ग	रे	प	म	रेग	न्नि	सा	नि़	प़	नि़	सा	रे	ग	नि़	सा
नी	ऽ	र	भ	र	नऽ	कै	से	जा	ऽ	ऊँ	स	खी	ऽ	अ	ब
0				3				×				2			
म	प	म	प	प	म	प	नि	ध	प	प		म	रे	रेसा	नि़
रे	म	प	ध	म	प	सां	सां	प	ध	(म)	म	गरे	ग	नि़	सा
ड	ग	र	च	ल	त	मो	से	क	र	त	रा	ऽऽ	ऽ	र	मैं
0				3				×				2			
	रे	ग	रे			सा	नि़	सा		प़	रे			रेसा	नि़
–	ग	रे	प	म	गरे	नि़	सा	नि़	प़	नि़	सा	नि़सा	रेग	नि़	सा
ऽ	नी	र	भं	र	नऽ	कै	से	जा	ऽ	ऊँ	स	खीऽ	ऽऽ	अ	ब
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

प	प	प	प	म	ध	प	सां	नि	नि	सां	सां	नि	नि	सां	रें
म	म	म	म	प	प	नि	नि	सां	सां	नि	नि	सां	सां	नि	सां
ऐ	सो	चं	च	ल	च	प	ल	ह	ट	न	ट	ख	ट	मा	न
×				2				0				3			
सां	सां	रें	गं	रें	रेंसां	नि	नि	सां	सां	नि	नि	सां	नि		
रें	रें	सां	रें	गं	नि	सां	सां	प	नि	सां	रें	नि	सां	–	प
त	न	का	हु	की	बा	ऽ	त	बि	न	ति	क	र	त	ऽ	मैं
×				2				0				3			
ध	प		ग	म	रे	रेसा	नि़								
प	ध	(म)	म	गरे	ग	नि़	सा								
ग	इ	रे	हा	ऽऽ	र	अ	ब								
×				2											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	नी ऽ र भ	र नऽ कै से	निप निसा रेग निसा	मग सारे गसा निसा
	0	3	x	2
(2)	नी ऽ र भ	र नऽ कै से	रेम पध मप सां-	पध मग सारे गसा
	0	3	x	2
(3)	नी ऽ र भ	र नऽ कै से	सरिं गंसां निसां पध	मग सारे गसा निसा
	0	3	x	2
(4)	नी ऽ र भ	र नऽ कै से	जा ऽ ऊँ स	खी ऽ अ व
	0	3	x	2
	सारे मप रेम पध	मप निसां पनि सरिं	निसां रेंगं सरिं निसां	पध मग सारे गसा
	0	3	x	2
(5)	नी ऽ र भ	र नऽ कै से	सारे गसा रेग सारे	मप रेम परे मप
	0	3	x	2
	रेम पध मप धम	पध मप निसां पनि	सांप निसां पनि संरें	निसां रेंनि सरिं निसां
	0	3	x	2
	रेंगं सरिं निसां पध	मग सारे गसा निसा	नीऽ रभ रन कैसे	जा ऊँ नीऽ रभ
	0	3	x	2
	रन कैसे जा ऊँ	नीऽ रभ रन कैसे	जा	
	0	3	x	

::अंतरे की तान::

(1)	ऐ सो चं च	ल च प ल	पध मग रेग निसा	रेम पध मप सां-
	0	3	x	2
(2)	ऐ सो चं च	ल च प ल	संरें निसां पध मग	रेम पध मप सां-
	0	3	x	2
(3)	ऐ सो चं च	ल च प ल	संरें गंसां पध मग	रेग सारे मप निसां
	0	3	x	2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग तिलककामोद – चौताल (विलम्बित)

स्थायी

चंचल चित चोर चतुर
अटक मोसे गुईयाँ

स्थायी

सा		सा				ग		रे			
नि़	प़	नि़	सा	सा	सा	रे	–	ग	सा	सा	सा
चं	ऽ	च	ल	चि	त	चो	ऽ	र	च	तु	र
x		0		2		0		3		4	
						म	प	ध	प	प	
प़	प़	नि़	सा	–	सा	गुरे	म	प	ध	म	–
अ	ट	क	मो	ऽ	से	गुई	ऽ	ऽ	ऽ	याँ	ऽ
x		0		2		0		3		4	
म		रे									
ग	–	नि़	सा	सा	स						
चं	ऽ	च	ल	चि	त						
x		0		2							

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन - सम से

नि़प़	नि़सा	सासा	रे-	गसा	सासा	प़प़	नि़सा	-सा	गरेम	पध	म-
चंऽ	चल	चित	चोऽ	रच	तुर	अट	कमो	ऽसे	गुईऽ	ऽऽ	याँऽ
x		o		2		o		3		4	

तिगुन - 5 मात्रा से

नि़	प़	नि़	सा	नि़प़नि़	सासासा	रे-ग	सासासा	प़प़नि़	सा-सा	गरेमप	धम-
चं	ऽ	च	ल	चंऽच	लचित	चोऽर	चतुर	अटक	मोऽसे	गुईऽऽ	ऽयाँऽ
x		o		2		o		3		4	

चौगुन - 7 मात्रा से

नि़	प़	नि़	सा	सा	सा
चं	ऽ	च	ल	चि	त
x		0		2	
नि़प़नि़सा	सासारे-	गसासासा	प़प़नि़सा	-सागरेम	पधम-
चंऽचल	चितचोऽ	रचतुर	अटकमो	ऽसेगुईऽ	ऽऽयाँऽ
0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

बाट चलत अचरा गहत डरत नाहिं
दैया पाछे से अधक आये गहत मोरी बैंया

प				सां							
म	–	म	प	नि	नि	सां	सां	नि	सां	सां	सां
बा	ऽ	ट	च	ल	त	अ	च	रा	ग	ह	त
x		0		2		0		3		4	
						सां					
प	प	नि	सां	–	सां	रें	–	नि	–	ध	प
ड	र	त	ना	ऽ	हिं	दै	ऽ	ऽ	ऽ	या	ऽ
x		0		2		0		3		4	
			सां						सा		
प	–	रें	रें	–	रें	प	नि	सां	रें	नि	धप
पा	ऽ	ऽ	छे	ऽ	से	अ	ध	क	आ	ऽ	येऽ
x		0		2		0		3		4	
प	प					म	प	ध	नि		
ध	म	म	गरे	ग	सा	रे	म	प	ध	म	–
ग	ह	त	मोऽ	ऽ	रि	बैं	ऽ	ऽ	ऽ	याँ	ऽ
x		0		2		0		3		4	
ग	–	नि़	सा	सा	सा						
चं	ऽ	च	ल	चि	त						
x		0		2							

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन सम से

म-	मप	निनि	सांसां	निसां	सांसां	पप	निसां	-सां	रें-	नि-	धप
बाऽ	टच	लत	अच	राग	हत	डर	तना	ऽहिं	दैऽ	ऽऽ	याऽ
x		0		2		0		3		4	
प-	रेंरें	-रें	पनि	सांरें	निधप	धम	मगरे	गसा	रेम	पध	म-
पाऽ	ऽछे	ऽसें	अध	कआ	ऽयेऽ	गह	तमोऽ	ऽरि	बैंऽ	ऽऽ	याँऽ
x		0		2		0		3		4	

तिगुन - 9 मात्रा से

म	-	म	प	नि	नि	सां	सां	म-म	पनिनि	सांसांनि	सांसांसां
वा	ऽ	ट	च	ल	त	अ	च	बाऽट	चलत	अचरा	गहत
x		0		2		0		3		4	
पपनि	सां-सां	रें-नि	-धप	प-रें	रें-रें	पनिसां	रेंनिधप	धमम	गरेगसा	रेमप	धम-
डरत	नाऽहिं	दैऽऽ	ऽयाऽ	पाऽऽ	छेऽसे	अधिक	आऽयेऽ	गहत	मोऽऽरि	बैंऽऽ	याऽऽ
x		0		2		0		3		4	

चौगुन सम से

म-मप	निनिसांसां	निसांसांसां	पपनिसां	-सांरें-	नि-धप
बाऽटच	लतअच	रागहत	डरतना	ऽहिंदैऽ	ऽऽयाऽ
x		0		2	
प-रेंरें	-रेंपनि	सांरेंनिधप	धममगरे	गसारेम	पधम-
पाऽऽछे	ऽसेअध	कआऽयेऽ	गहतमोऽ	ऽरिबऽ	ऽऽयाँऽ
0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(10) जयजयवन्ती

यह राग खमाज थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें दोनों ग, दोनों नि तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी रे संवादी प होने के कारण यह पूर्वांग प्रधान राग है। इसका गायन-वादन समय रात्रि के दूसरे प्रहर में 10:00 से 11:30 बजे तक होने के कारण यह पूर्वांग प्रधान राग है। इसके प्राण स्वर रे तथा न्यास के स्वर सा रे प हैं। इसमें सातों स्वरों का प्रयोग होने के कारण इसकी जाति सम्पूर्ण है।

जयजयवन्ती राग 'परमेल प्रवेशक' राग माना जाता है क्योंकि इसमें शुद्ध रे ग ध और कोमल ग नि स्वरों का प्रयोग होता है इसीलिए 7:00 से 10:00 बजे तक और 10:00 से 4:00 बजे तक दोनों वर्गों के चिह्न इस राग में पाए जाते हैं। कर्नाटकी संगीत में इसे द्विजावन्ती कहते हैं। इस राग को देस अंग और बागेश्री अंग इस तरह दो प्रकार से गाया-बजाया जाता है। ग म रे ग रे सा ऩि सा ध़ ऩि रेग अथवा सा ऩि ध़ प़ रे रे ग रे सा ये मुख्य दो स्वर संगतियाँ इस राग की पहचान हैं।

जयजयवन्ती और हमीर सामान्यतः एक-दूसरे के निकटवर्ती राग नहीं हैं किन्तु सा के स्थान पर प मानने से जयजयवन्ती की स्वरावलियाँ हमीर राग की हो जाती हैं जैसे :-

सा ऩि सा ध़ ऩि रे सा ऩि सा रे ग म रे ग रे सा ऩि सा ध़ ऩि रे सा
प मं प ग म ध प म प ध नि सां ध नि ध प मं प ग म ध प

इस प्रकार जयजयवन्ती का उल्टा हमीर और हमीर का उल्टा जयजयवन्ती हो जाता है। इसमें काफी अंग की रे ग रे सा, गौड़ अंग की म ग म रे ग रे म ग, बिलावल अंग की प ध ग म रे, तथा देस अंग की म प नि सां नि सां रें नि ध प म ग रे स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह :- सा रे रे ग रे सा, रे ग म प, नि सां

अवरोह :- सां नि ध प, प ध, ग म रे, रे ग रे सा।

पकड़ :- सा ऩि ध़ प़, प़ रे रे ग रे सा, ऩि सा ध़ ऩि रे सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जयजयवन्ती – झपताल (मध्यलय)

स्थायी

ध़	ध़	प़		सा	ग	ग	ग	रे	रे
प़	प़	रे	–	रे	रे	रे	रे	ग	सा
×		2			0		3		
ग	रे	म	प	म	म	ग	ग	रे	सा
रे	ग	ग	म	प	ग	म	रे	ग̲	रे
×		2			0		3		
सा	सा	नि़		नि	ग̲	रे	सा	सा	
नि़	नि़	सा	–	सा	रे	ग̲	रे	रे	सा
×		2			0		3		
सा	नि़̲	ध़	नि़̲		सा	सा	नि़̲	ध़	
नि़̲	ध़	नि़̲	रे	सा	रे	नि़̲	ध़	नि़̲	प़
×		2			0		3		

अंतरा

प	प	म	सां	सां	नि		सां	नि	
म	म	प	नि	नि	सां	–	नि	सां	–
×		2			0		3		
सां	सा	नि	गं̲	रें	सां		सां		सां
नि	नि	सां	रें	गं̲	रें	सां	रें	सां	नि̲
×		2			0		3		
प		प	ग	म	प	ध	सां	नि	नि
ध	प	ध	म	ग	म	प	नि	सां	सां
×		2			0		3		
प	सां	प	प	ध	प	ग	ग	रे	सा
सां	नि̲	ध	म	प	ध	म	रे	ग̲	रे
×		2			0		3		
सा	सा	नि़		नि़	ग̲	रे	सा	सा	
नि़	नि़	सा	–	सा	रे	ग̲	रे	रे	सा
×		2			0		3		
सा		ध़	नि़̲		सा	सा	नि़̲	ध़	
नि़̲	ध़	नि़̲	रे	सा	रे	नि़̲	ध़	नि़̲	प़
×		2			0		3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

जयजयवन्ती - एकताल (विलंबित)

स्थायी

पालना गढ़ ला, रे बढ़ैया।

अंतरा

रतन जड़ाव को पालना बनावो, झूले कृष्ण कन्हैया।

स्थायी

सा -रे ऽपा

रेसा	निनि		सा	निग			ग	रे		मग	रग
नि	सारे	(सा)	धनि	रे	-	-	रे	गरेग	-	रे	मप
ऽ	ऽल	ना	गढ़	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ	रे,ब
3		4		×		0		2		0	
ग		प	ग	मग		गरे	सा	रे	नि		सा
म	-	ग	म	रे	-	-गु	रे	नि	सा	,निसा	-रे
ढ़ै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	या	ऽ	ऽ	,ऽऽ	ऽपा
3		4		×		0		2		0	

अंतरा

प	म	प	सां	नि		नि	नि	रें	नि	गुरें	सां
म	प	सां	-नि	सां	-	सां	सां	नि	सां	रेंगुं	रेंसां
र	त	न	ऽज	ड़ा	ऽ	व	को	पा	ल	नाऽ	बऽ
3		4		×		0		2		0	
रें		प		ध	प	प		ग	रे	ग	ध
नि	(सां)नि	ध	प	प	नि	ध	प	म	ग	म	-प
ना	ऽऽ	वो	ऽ	झू	ऽ	ले	ऽ	कृ	ऽ	ष्ण	ऽक
3		4		×		0		2		0	
प	सां	नि	ध	प		प	ग	मग	गरे	सा	सा
सां	नि	ध	नि	ध	प	ग	म	रे	,गु	रेसा	-रे
न्है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	,ऽ	याऽ,	ऽपा
3		4		×		0		2		0	

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) ला सा नि़ ध़ प़, प़ रे रे ग रे सा — पाऽलना

(2) ला रे ग म प ग म रे, रे ग रे सा — पाऽलना

(3) ला रे ग म प नि ध प प ध ग म रे, रे ग रे सा — पाऽलना

(4) ला प म प नि ध प, प सां नि ध प प ध ग म रे,
रें नि ध प, ग म रे, रे ग रे सा, नि़ सा ध़ नि़ रे सा — पाऽलना

::बोलतान::

(1) रे ग म प - नि ध प -
पऽलनाऽगढ़ऽऽ

सां नि ध प प - म ग म
लाऽऽऽऽऽऽऽऽ

रे ग रे - रें गं रें सां नि सां
रेऽऽऽबऽढैऽऽऽ

नि ध प म ग म रे ग रे सा
याऽऽऽऽऽऽऽऽऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::तान::

(1) ला ऽ रेग रेसा नि़सा धऩि रे- --
रेग मप गम रेग रेसा नि़सा धऩि रे- --
रेग मप निध पम गम रेग रेसा
नि़सा धऩि रे- नि़सा धऩि रे- नि़सा धऩि रे- पाऽऽल नागढ़

(2) लाऽ साम गम रेग रेसा नि़सा --
साप मप गम रेग रेसा नि़सा --
सांनि धनि पध मप गम रेग रेसा नि़सा --
सांसां निसां धनि पध मप गम रेग रेसा नि़सा पाऽऽल नागढ़

(3) लाऽ रे- ग- म- प- नि- सां- रें- गं- रें- सां- नि- सां-
रेंरें सांरें सांनि सांसां निसां निध निनि धनि धप धध पध पम पप मप मग
मम गम रेग रेसा पाऽऽल नागढ़

(4) लाऽ साम गम रेग रेसा नि़सा
साप मप गम रेग रेसा नि़सा
सांनि धनि पध मप गम रेग रेसा नि़सा
सांसां निसां धनि पध मप गम रेंग रेसा नि़सा धनि रे- सा- पाऽऽल नागढ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जयजयवन्ती – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

दामिनी दमके डर मोहे लागे,
उमगे दल बादल श्याम घटा।

अंतरा

लिख भेजो सखि उस नन्दन को,
मेरी खोल किताब देखो बिथा।

स्थायी

नि़		नि़		ग	रे			म	म			ग			
सा	-	ध़	नि़	रे	ग	रे	-	ग	ग	मप	गम	म	गम	रेग	रे
दा	ऽ	मि	निं	द	म	के	ऽ	ड	र	मोऽ	हेऽ	ला	ऽऽ	ऽऽ	गे
3				×				2				0			
रे	सा	नि़		ग	रे			सा		प		ग			
नि़	नि़	सा	-	रे	ग	र	सारे	नि	धप	म	पध	म	गम	(ग)	रे
उ	म	गं	ऽ	द	ल	बा	ऽऽ	द	लऽ	श्या	ऽऽ	म	ऽऽ	घ	टा
3				×				2				0			
नि़		निं		ग	रे	सा		ग	म	प	म				
सा	(सा)	ध़	नि़	रे	ग	रे	-	रे	ग	म	(प)				
दा	ऽ	मि	निं	द	म	के	ऽ	ड	र	मा	हे				
3				×				2							

अंतरा

प	ध	सां		नि		नि	नि	गं		सां		सां	रेंसां	नि	
म	प	नि	-	सां	-	सां	सां	रें	रेंगं	रें	सां	रें	नि	सां	-
लि	ख	भें	ऽ	जो	ऽ	स	खी	उ	सऽ	नं	ऽ	द	न	को	ऽ
3				×				2				0			
प		सां		प		धप	म	पध			ग	मग	रे		
(सां)	-	नि	-	ध	-	म	प	नि	-	ध	म	रे	ग	रे	-
मे	ऽ	री	ऽ	खो	ऽ	ल	कि	ता	ऽ	ब	दे	खो	बि	था	ऽ
3				×				2				0			
नि़			सा	ग	रे	सा									
सा	(सा)	-	धनि़	रे	ग	रे	सा								
दा	ऽ	ऽ	मिनि	द	म	के	ऽ								
3				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::बोलतान::

(1)	सा - ध़ नि़	रे ग॒ रे -	रे ग मनि॒ धप	म गम रेग॒ रे
	दा ऽ मि नि 3	द म के ऽ x	ड र मोऽ हेऽ 2	ला ऽऽ ऽऽ गे 0
(2)	सा - ध़ नि़	रे ग॒ रे -	नि॒ धप म पध	म गम रेग॒ रे
	दा ऽ मि नि 3	द म के ऽ x	ड रऽ मो हेऽ 2	ला ऽऽ ऽऽ गे 0
(3)	सा - ध़ नि़	रे ग॒ रे -	सांनि॒ नि॒ध धप पम	म गम रेग॒ रे
	दा ऽ मि नि 3	द म के ऽ x	डऽ रऽ मोऽ हेऽ 2	ला ऽऽ ऽऽ गे 0

::स्थायी की तान::

(1)	दा ऽ मि नि 3	द म के ऽ x	रेग मप गम रेग॒ 2	रेसा नि॒सा धनि॒ रे- 0
(2)	दा ऽ मि नि 3	द म के ऽ x	रेग मप नि॒ध पम 2	गम रेग॒ रेसा नि॒सा 0
(3)	दा ऽ मि नि 3	द म के ऽ x	रेग मप निसां नि॒ध 2	पम गम रेग॒ रेसा 0
(4)	दा ऽ मि नि 3	द म के ऽ x	रेंगं॒ रेंसां निसां नि॒ध 2	पम गम रेग॒ रेसा 0
(5)	दा ऽ मि नि 3	द म के ऽ x	रेग रेसा नि॒सा धनि॒ 2	रे- रेग मप गम 0
	रेग॒ रेसा नि॒सा धनि॒ 3	रे- रेग मप नि॒ध x	पम गम रेग॒ रेसा 2	नि॒सा धनि॒ रे- सा- 0

::अंतरे की तान::

(1)	लि ख मे ऽ 3	जो ऽ स खी x	सांनि॒ धप मप निसां 2	निसां धनि॒ रें- सां- 0
(2)	लि ख मे ऽ 3	जो ऽ स खी x	मप निसां रेंरें सांनि॒ 2	धप मग मप सां- 0
(3)	लि ख मे ऽ 3	जो ऽ स खी x	निसां रेंगं॒ रेंसां निसां 2	रेंगं मंगं रेंगं॒ रेंसां 0

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(11) कालिंगड़ा

यह राग भैरव थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें रे-ध कोमल और शेष स्वर शुद्ध लगते हैं, इसका वादी प और संवादी सा है। कुछ विद्वान् इसका वादी-संवादी ध-ग मानते हैं। यह प्रातः सन्धिप्रकाश राग है। इसका गायन, वादन समय सुबह 5:00 से 7:00 बजे तक है। इसका प्राण स्वर ग तथा न्यास के स्वर सा ग प हैं। इसके आरोह-अवरोह में सातों स्वरों का प्रयोग होने के कारण यह सम्पूर्ण जाति का राग है।

यह एक संक्षिप्त राग है इसलिए इसमें बड़े ख़याल नहीं पाए जाते जबकि भक्ति रस के गीत एवं धुनें गायी-बजायी जाती हैं। इस राग की उत्पत्ति का सम्बन्ध कलिंग देश से माना जाता है जो कि पूर्व बंगाल की खाड़ी के पास महानदी और गोदावरी के किनारे बसा हुआ था। कालिंगड़ा अंग के अन्तर्गत गौरी, परज आदि राग आते हैं, जबकि कालिंगड़ा स्वयं भैरव थाट के अन्तर्गत आता है।

आरोह :- सा रे̱ ग म प ध̱ नि सां

अवरोह :- सां नि ध̱ प म ग रे̱ सा

पकड़ :- ध̱ प ग म ग, ऩि सा रे̱ ग म

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कालिंगड़ा- त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

नि नि सां रें	सां नि ध प	म प ध प	ग म ग -
0	3	x	2
नि़ सा ग म	प ध नि सां	सां रें सां नि	ध नि प ध
0	3	0	2

अन्तरा

ध ध प ध	नि नि सां -	ध नि सां रें	सां नि ध प
0	3	0	2
सां रें सां नि	ध नि ध प	म प ध प	ग म ग ग
0	3	0	2
नि़ सा ग म	प ध नि सां	सां रें सां नि	ध नि ध प
0	3	x	2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कालिंगड़ा- त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

अब होन लगो प्रभात सखी अब होन लगो प्रभात
सखी बोलत केकी कीर कोकिला कुसुम कमल विकसात सखी

अन्तरा

अरुण किरण सखी पूर्व प्रकाशित भोर भयो निसजात सखी

स्थायी

														प	प
														अ	ब
		ग						नि				प			
ध	प	म	ग	म	–	प	प	ध	–	ध	ध	प	–	ध	म
हो	ऽ	न	ल	गो	ऽ	प	र	भा	ऽ	त	स	खी	ऽ	अ	ब
0				3				0				2			
		प													
मप	धुप	म	ग	म	–	प	प	पध	सांनि	ध	ध	प	–	–	–
होऽ	ऽऽ	न	ल	गो	ऽ	प	र	भाऽ	ऽऽ	त	स	खी	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				x				2			
प								प			ग				
ग	म	ग	रे	ग	म	प	–	ग	म	ग	रे	–	रे	सा	–
बो	ऽ	ल	त	के	ऽ	की	ऽ	की	ऽ	र	को	ऽ	कि	ला	ऽ
0				3				x				2			
सा								नि						प	
ऩि	सा	ग	म	प	ध	नि	सां	ध	सां	नि	ध	प	–	ध	म
कु	सु	म	क	म़	ल	बि	क	सा	ऽ	त	स	खी	ऽ,	अ	ब
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

	सां	नि	सां
प ध प ध	नि नि सां सां	सां रें सां रें	नि - सां सां
अ रू न कि	र न स खि	पू र व प्र	का ऽ शि त
0	3	x	3

सां	नि	सां	
नि - सां रें	नि सां नि ध	नि सां नि ध	प - ध म
भो ऽ र भ	यो ऽ नि स	जा ऽ त स	खी ऽ, अ ब
0	3	x	3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	हो ऽ न ल 0	गो ऽ प र 3	सारे गम पधु निसां x	निधु पम गरे सा- 2
(2)	हो ऽ न ल 0	गो ऽ प र 3	गम पधु निसां निधु x	पम गम गरे सा- 2
(3)	हो ऽ न ल 0	गो ऽ प र 3	धुनि सांरें सांनि धुप x	मप धुप गम ग- 2
(4)	हो ऽ न ल 0	गो ऽ प र 3	पधु पम गम ग- x	सांनि धुप मप धुप 2
	गम ग- सांरें सांनि 0	धुनि सांरें सांनि धुप 3	मप धुप गम ग- x	मग रेसा अ ब 2

::अन्तरे की तान::

(1)	अ रू न कि 0	र न स खि 3	सांनि धुप मग रेसा x	निर्सा गम पधु निसां 2
(2)	अ रू न कि 0	र न स खि 3	सांरें सांरें निसां निधु x	पधु पधु निनि सां- 2
(3)	अ रू न कि 0	र न स खि 3	सारे गम गम पधु x	पधु पधु निनि सां- 2
(4)	अ रू न कि 0	र न स खि 3	सारे गम गम पधु x	पधु निसां धुनि सां- 2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(12) परज

यह पूर्वी थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें रे-ध कोमल, दोनों मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी तार सा तथा संवादी प होने के कारण यह उत्तरांगवादी राग है। इसके गाने का समय प्रातः 4:00 से 5:00 बजे तक है अतः यह प्रातः का सन्धिप्रकाश राग हुआ। इसके प्राण स्वर ग-नि तथा न्यास के स्वर सा ग प हैं। इसकी जाति के विषय में मतभेद है, ऩि सा ग म ध॒ नि सां करते समय रे और प छोड़ दिया जाता है और अवरोह में सभी स्वर लगाए जाते हैं। अतः इसकी जाति औड़व-सम्पूर्ण हुई। दूसरे मत में सा ग म प ध॒, मं ध॒ नि सां करते है, इसलिए इसकी जाति षाड़व-सम्पूर्ण मानी जाती है।

परज राग का निकटवर्ती राग वसन्त है। सां नि ध॒ नि, ध॒निसांनि ध॒ प, ग म ग स्वर समूह से राग परज पहचाना जाता है। इसका वादी-संवादी सां-प होते हुए भी ग और नि पर्याप्त मात्रा में प्रयुक्त होते हैं जैसे :- प ग म ग, प ध॒ मं प ग म ग, नि नि ध॒ प मं प ग म ग, सां नि ध॒ नि, सां रें॒ सां रें॒ नि सां नि ध॒ नि, गं गं रें॒ सां नि सां नि ध॒ नि आदि। इसमें कालिंगड़ा अंग की ध॒ प ग म ग, सां नि ध॒ नि ध॒ प ग म ग, प ध॒ नि सां ध॒ नि सां रें॒ नि सां स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह :- ऩि सा ग म ध॒ नि सां

अवरोह :- सां, नि ध॒ प, मं प ध॒ प ग म ग, मं ग रे॒ सा।

पकड़ :- सां नि ध॒निसांनि ध॒ प मंपध॒प ग म ग।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परज - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

	नि
सां	नि

नि	ध॒				मं	ध॒	नि	सां	सां	नि		नि	नि	रें॒	नि
ध॒	सां	नि	ध॒	प	ध॒	मं	ध॒	नि	नि	सां	-	सां	रें॒	नि	सां
0				3				×				2			
नि	सां	नि	नि	नि				ग		ग		ग	ग		
ध॒	नि	सां	रें॒	सां	नि	ध॒	प	ग	म	ग	-	मं	ग	रे	सा
0				3				×				2			
रे॒	रे॒	मं	मं	ध॒	नि	सां	नि	नि	सां		नि	सां	नि	नि	
नि़	सा	ग	ग	मं	ध॒	नि	सां	ध॒	नि	सां	रें॒	नि	सां,	सां	नि
0				3				×				2			

अंतरा

मं	मं	ध॒	नि	सां	सां	नि		नि	नि	सां			नि	ध॒	
ग	ग	मं	ध॒	नि	नि	सां	-	सां	रें॒	नि	सां	नि	ध॒	नि	-
0				3				×				2			
सां	गं	रें॒	रें॒	गं		गं		नि	नि	सां	नि		नि	ध॒	
नि	रें॒	गं	गं	मं	गं	रें॒	सां	सां	रें॒	नि	सां	नि	ध॒,	सां	नि
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परज – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

मैं क्यों गई जमुना पानी,
देखत ही मन मोह लियो मेरो, साँवल हाथ बिकानी सखी।

अंतरा

मेरे मन बसी साँवरी सूरत, लोक कहे बौरानी प्रगट भई,
बलिहारी श्याम सों लागी प्रीत न छानी।

स्थायी

														ध	नि
														मं	ध
														मैं	ऽ
सां	नि				प	ध	नि			नि		नि			
नि	सां	नि	ध	प	ध	मं	ध	नि	–	सां	–	सां	–	–	–
क्यों	ऽ	ग	ई	ज	मु	ना	ऽ	पा	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				×				2			
सां		नि	नि	नि		प		प		ग	म	ग			नि़
नि	–	सां	रें	सां	नि	ध	प	ग	–	म	ग	रे	–	सा	सा
दे	ऽ	ख	त	ही	ऽ	म	न	मो	ऽ	ह	लि	यो	ऽ	मे	रो
0				3				×				2			
नि़		सा	रे	मं		ध	मं	सां		नि	नि				
सा	–	ग	ग	ग	–	मं	ध	नि	–	सां	रें	(सां)	–	नि	ध
साँ	ऽ	व	ल	हा	ऽ	थ	बि	का	ऽ	नि	स	खी	ऽ,	मैं	ऽ
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

प		ध	नि	सां	सां	नि		नि			सां	सां		नि	नि
ध	-	मं	ध	नि	नि	सां	-	सां	रें	सां	रें	नि	-	सां	सां
मे	ऽ	रे	म	न	ब	सी	ऽ	साँ	ऽ	व	रि	सू	ऽ	र	त
0				3				×				2			
प			सां	सां		ध	नि	सां		नि					
ध	रें	सां	रें	नि	-	मं	ध	नि	-	सां	-	-	-	-	-
लो	ऽ	क	क	हे	ऽ	बौ	ऽ	रा	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				×				2			
सां	सां	नि	नि	नि				प			ग		ग		
नि	नि	सां	रें	सां	नि	ध	प	ग	-	मग	रे	-	रे	सा	-
प्र	ग	ट	भ	ई	ऽ	ब	लि	हा	ऽ	रिऽ	श्या	ऽ	म	सों	ऽ
0				3				×				2			
नि़		सा		मं		ध	मं	सां		नि	सां				
सा	-	ग	-	ग	-	मं	ध	नि	-	सां	रें	(सां)	-	नि	ध
ला	ऽ	गी	ऽ	पी	ऽ	त	न	छा	ऽ	नि	स	खी	ऽ,	मैं	ऽ
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	क्यों ऽ ग ई	ज मु ना ऽ	धुप मंप गम ग-	मंग रेसा में ऽ
	0	3	x	2
(2)	क्यों ऽ ग ई	ज मु ना ऽ	सांनि धुप मंप धुप	गम ग- में ऽ
	0	3	x	2
(3)	क्यों ऽ ग ई	ज मु ना ऽ	सांरें सांनि धुनि धुप	मंप धुप गम ग-
	0	3	x	2
(4)	क्यों ऽ ग ई	ज मु ना ऽ	पा ऽ नी ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
	0	3	x	2
	धुप गम ग- निनि	धुप गम ग- सांरें	सांनि धुप मंप धुप	गम ग- मंग रेसा
	0	3	x	2
(5)	क्यों ऽ ग ई	ज मु ना ऽ	पा ऽ नी ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
	0	3	x	2
	सां- निधु नि- --	धुनि सांरें निसां निधु	नि- -- गंगं रेंसां	निसां निधु निनि धुप
	0	3	x	2
	मंप धुप गम ग-	मंग रेंसा निसा गम	धुनि सांरें सां- निसां	-नि सां- में ऽ
	0	3	x	2

::अन्तरे की तान::

(1)	मे ऽ रे म	न व सी ऽ	सांनि धुप मंप धुप	गम ग- मंधु निसां
	0	3	x	2
(2)	मे ऽ रे म	न व सी ऽ	सांरें सांनि धुप मंप	गम ग- मंधु निसां
	0	3	x	2
(3)	मे ऽ रे म	न व सी ऽ	सांरें सांनि धुनि धुप	मंधु पमं गम ग-
	0	3	x	2
	निसां नि- गंमं गं-	निसां नि- गम ग-	मंग रेसा निसा गमं	धुनि सांरें सां- --
	0	3	x	2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(13) पूरियाधनाश्री

यह राग पूर्वी थाट के अन्तर्गत आता है। इनमें रे-ध कोमल, म तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी प है परन्तु संवादी के विषय में मतभेद है। कुछ लोग कोमल रे तथा कुछ लोग सा को संवादी मानते हैं। हमारे मत से इसका वादी संवादी प-सा अधिक उपयुक्त है क्योंकि वादी और संवादी स्वरों में संवाद होना आवश्यक है। इसके गाने-बजाने का समय सायंकालीन संधिप्रकाश 4:00 से 5:30 बजे तक है। इसके प्राण स्वर ग-प तथा न्यास के स्वर सा ग प हैं। इसमें सातों स्वरों का प्रयोग होता है इसलिए इसकी जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। किन्तु कुछ विद्वान् इसकी जाति षाडव-सम्पूर्ण (संगीत०- 4 पृ० 153) मानते हैं क्योंकि आरोह में ऩि रे॒ ग म ध॒ नि सां करते समय प वर्जित हो जाता है।

कर्नाटकी संगीत में इसे कामवर्धिनी कहते हैं। पूरियाधनाश्री का निकटवर्ती राग पूर्वी है पर पूर्वी में दोनों म और वादी ग होने के कारण पूरियाधनाश्री पूर्वी से अलग है। मध्ययुगीन राग तरंगिणी (पृ०-206) में पूरियाधनाश्री के स्वरों वाले संस्थान (मेल) को धनाश्री कहा गया है। राग विस्तार करते समय पूर्वांग में ऩि रे॒ ग और उत्तरांग में मं ध॒ नि करते समय सा और प का लंघन करते हैं। सायंकालीन रागों में पूरियाधनाश्री अत्यन्त प्रचलित राग है।

आरोह :- सा, ऩि रे॒ ग मं प मं ध॒ नि सां

अवरोह :- सां नि रें॒ नि ध॒ प, प मं ग मं रे॒ ग रे॒ सा।

पकड़ :- ऩि रे॒ ग मं प, मं ध॒ प, पमंगमंरे॒ग ध॒ मं ग रे॒ सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0: In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूरियाधनाश्री – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

सा	ग	म	प	म	म	ध	म	ध		ग	ग	रे			
नि़	रे	ग	मं	प	ध	मं	प	मं	ग	मं	रें	मं	ग	–	–
0				3				×				2			
ग	म		ग	म	ग			सा				ग		ग	
रे	ग	–	मं	ग	रे	सा	–	नि	ध	मं	ग	मं	ग	रे	सा
0				3				×				2			

अंतरा

ग		ध		ध	म		नि	सां		रें	गं		नि		
मं	ग	मं	ध	मं	सां	–	सां	नि	रें	गं	रें	सां	रें	नि	ध
0				3				×				2			
ध		ध				मं				ग	ग	रे			
रें	नि़	ध	नि	ध	प	ध	प	मं	ग	मं	रे	मं	ग	–	–
0				3				×				2			
ग	मं		ग	मं	ग			सा				ग	मं	ग	
रे	ग	–	मं	ग	रे	सा	–	नि	ध	मं	ग	मं	ग	रे	सा
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूरियाधनाश्री – एकताल (विलंबित)

स्थायी

बलि बलि जाऊँ मीत मेरे, तोरे कारन लोगवा बुरे रे।

अंतरा

ले चल अपने देस, सदारंग पाछे परे निगुरे रे।

स्थायी

ध	धुप		मंग	रे	ग	नि		सासानि			निनि
मंधु	मं	ग	गमं	ग	रे	सा	-	रेरेसानि	-	-	सारे
बऽ	लि	ऽ	बलि	जा	ऽ	ऊँ	ऽ	मीऽऽऽ	ऽ	ऽ	तऽ
3		4		×		0		2		0	
मं	गगग	रे		मं	धु	मं		सां	नि	नि	
ग	मंमंरे	ग	-	प	-मं	धु	प	नि	रेंनि	धु	प
मो	ऽऽऽ	र	ऽ	तो	ऽऽ	रे	ऽ	का	ऽर	न	ऽ
3		4		×		0		2		0	
मं	धु	मं		ग	गग	र		धु		नि	धुधु
प	मं	ग	-	मं	रेरे	ग	-	मं	-	धु	निनि
लो	ग	वा	ऽ	ऽ	ऽब	रे	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽऽ
3		4		×		0		2		0	

अंतरा

धुनि	धु नि	निनि	नि	नि			नि	नि		रें	नि
मंधु	सांसां	सांसां	सां	रें	-	सां	,सां	सां	-	नि	धु
लऽ	चल	अप	ने	दे	ऽ	स	,स	दा	ऽ	रं	ग
3		4		×		0		2		0	
सां	सां	नि		धु	नि	धुप	मं	गग	ग	रे	धु
नि	निरेंनि	धु	प	मं	धुनि	मं	ग	मंमं	रे	ग	-मं
पा	छेऽप	र	ऽ	नि	गुऽ	रे	ऽ	ऽऽ	ऽ	रे	ऽऽ
3		4		×		0		2		0	
मं	धुप	प	मंग								
धु	मं	ग	गमं								
ब	लि	ऽ	बलि								
3		4									

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) जाऽ नि़ रे़ ग -, मं रे़ ग, ग रे़ सा बलि बलि
x 4

(2) जाऽ ग मं रे़ ग प, मं ध़ प, मं ग मं रे़ ग रे़ सा बलि बलि
x 4

(3) जाऽ प मं ध़ प, मं ध़ नि ध़ प, मं ग मं रे़ ग रे़ सा बलि बलि
x 4

(4) जाऽ मं ग मं ध़ सां, नि रें सां, रें नि ध़ प, ध़ प मं
x

ग, मं रे़ ग प -, प मं ग मं रे़ ग रे़ सा बलि बलि
4

::बोलतान::

(1) ग रे़ नि़रे़गमं प-मंध़ (प) --मंध़ नि- धनिरेंनि नि-धप --पमंग

जाऽ बऽलीऽ बऽलीजा ऊँ ऽऽमीऽ तऽ मोऽऽऽ ऽरेऽऽ तोरेऽ
x 0

-मंरे़ग मंधमंग गमं

ऽकारन बऽलीऽ बली
4

::तान::

(1) जाऽ
x
निरे़ सा-
0
नि़रे़ गरे़ सा-
नि़रे़ गमं गरे़ सा-
नि़रे़ गमं प- मंग मंरे़ गरे़ सा-
नि़रे़ गमं पध़ पमं गरे़ गमं प- मंग मंरे़ गरे़ सा-
नि़रे़ गमं पग मंप गमं बऽलीऽ ऽ बली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(2) जाऽ प- मंग मंरे ग-
x 0

पमं धप मंग मंरे ग-

पमं धप निनि धप मंग मंरे ग-

निनि धनि रेंनि धप मंग मरे गरे सा-

पमं गमं धनि रेंनि धप मंग मंरे ग- बऽलीऽ ऽ बली
4

(3) जाऽ निरे गरे गमं गमं प-
x 0

गमं धमं धनि धनि सां-

निरे गरें गमें गमें पं- --

पंमें गंमें गंरें गंरें सांरें सांनि सांनि धनि धप धप मंप मंग मंग रेग

रेसा निसा बऽलीऽ ऽ बली
4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूरियाधनाश्री - झपताल (मध्यलय)

स्थायी

तेरे दरस की लालसा,
करत सब देव, गंधर्व गन, किन्नर नर मुनि।

अंतरा

अराधना तेरे नाम की जो करे, पावत सकल सिद्धि, हररंग कहत गुनी।

स्थायी

प				मं	ध	मं	ध	मंग	रे
ध	-	प	-	प	मं	ग	मं	रें	ग
ते	ऽ	रे	ऽ	द	र	स	की	ऽ	ऽ
×		2			0		0		
ध	प		मं	मं	रे		ग		नि़
मं	मंध	मं	ग	रे	मं	ग	रे	सा	सा
ला	ऽऽ	ल	सा	ऽ	क	र	त	स	ब
×		2			0		0		
सा		ग	रे		ग	ग	रे	ग	मं
नि़	-	रें	ग	-	मं	रें	ग	प	प
दे	ऽ	व	गं	ऽ	ध	र	व	ग	न
×		2			0		0		
ध		नि	ध	नि	ध		ध	नि	
मं	-	ध	नि	ध	रें	निध	नि	ध	प
कि	ऽ	न्न	र	न	र	मुऽ	नी	ऽ	ऽ
×		2			0		0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

(नि)सां रे	प ऽ	सा द्धि	ग ऽ
– ऽ	(नि)ध रे	– ऽ	मंरें नीऽ
(नि)सां ते 3	नि क 3	(ग)रे सि 3	(ध)मंग गुऽ 3
– ऽ	(सां)निरें ऽऽ	ग ल	प त
(ध)सां ना 0	(सां)नि जो 0	(रे)मं क 0	(नि)ध ह 0
(मंनि)ध ध	(नि)ध ऽ	गरे सऽ	(ध)नि क
प ऽ	(ध)नि की	मं त	(नि)ध ग
(ध)मं रा 2	निध मऽ 2	(ध)मं व 2	नि रं 2
ग ऽ	– ऽ	(प)मंध ऽऽ	(सां)निरें रऽ
(ध)मं आ ×	(नि)सां ना ×	(ध)मं पा ×	(सां)नि ह ×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	ते	ऽ	रे	ऽ	निरे	गमं	पधु	पमं	गरे	सा-
	x		2			0		3		
(2)	ते	ऽ	रे	ऽ	पमं	गमं	पधु	पमं	गरे	सा-
	x		2			0		3		
(3)	ते	ऽ	रे	ऽ	निनि	धनि	रेंनि	धप	मंग	रेसा
	x		2			0		3		
(4)	ते	ऽ	रे	ऽ	प-	मंग	मरे	ग-	पमं	धप
	x		2			0		3		
	मंग	मंरे	ग-	पमं	धप	निनि	धप	मंग	मंरे	गमं
	x		2			0		3		
(5)	ते	ऽ	रे	-	निरे	ग-	रेग	मं-	गमं	प-
	x		2			0		3		
	मंधु	नि-	धनि	रेंनि	धप	मंग	रेसा	तेऽ	रेते	ऽर
	x		2			0		3		

::अन्तरे की तान::

(1)	आ	ऽ	रा	ऽ	ध	सांनि	रेंनि	धप	मंधु	सां-
	x		2			0		3		
(2)	आ	ऽ	रा	ऽ	ध	निरें	गंरें	सां-	निधु	प-
	x		2			0		3		
(3)	आ	ऽ	रा	ऽ	ध	गंरें	सांनि	धप	मंधु	सां-
	x		2			0		3		
(4)	आ	ऽ	रा	ऽ	ध	ना	ऽ	ते	ऽ	रे
	x		2			0		3		
	गंगं	रेंसां	निधु	पमं	गमं	धनि	सांधु	निसां	धनि	सां-
	x		2			0		3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूरियाधनाश्री – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

पायलिया झंकार मोरी,
झनन झनन बाजे झनकारी।

अंतरा

पिया समझाऊँ समझत नाहीं, सास ननद मोरी देगी गारी।

स्थायी

मं			मं	ध॒		ध॒		नि			मं		मं		म
प	–	ध॒मं	ग	मं	ध॒	रें॒	नि	ध॒	–	प	प	–	प	–	प
पा	ऽ	यऽ	लि	या	ऽ	झ	न	का	ऽ	ऽ	र	ऽ	मो	ऽ	रि
0				3				×				2			
ध॒	ध॒		मं	ग	ग	रे॒		ग	मंग	मं		मं	ग		
मं	मंध॒	मं	ग	मं	रे॒	ग	–	मं	रें॒	ग	मं	ग	रे॒	सा	–
झ	नऽ	न	झ	न	न	बा	ऽ	जे	ऽ	झ	न	का	ऽ	री	ऽ
0				3				×				2			

अंतरा

ध॒	ध॒	मं	मं	ध॒		नि		ध॒		नि	नि	सां		नि	
मं	मं	ग	ग	मं	–	ध॒	–	सां	सां	सां	सां	रें॒	–	सां	–
पि	या	स	म	झा	ऽ	ऊँ	ऽ	स	म	झ	त	ना	ऽ	हीं	ऽ
0				3				×				2			
सां	गं		गं	रें॒	सां	नि		सां		रें॒			ध॒		
नि	रें॒	गं	रें॒	नि	रें॒	सां	–	नि	ध॒	नि	रें॒	नि	नि	ध॒	प
सा	ऽ	स	न	न	द	मो	ऽ	री	ऽ	दे	ऽ	गि	गा	ऽ	रि
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(14) सोहनी

यह राग मारवा थाट में वर्गीकृत किया जाता है। इसमें रे कोमल, म तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी ध तथा संवादी ग होने के कारण यह उत्तरांगवादी राग है। यह प्रातःकालीन सन्धिप्रकाश राग है। इसका गायन-समय प्रातः 4:00 से 5:00 बजे तक है। इसका प्राण स्वर सां तथा न्यास के स्वर सा ग ध हैं। इस राग के आरोह में रे-प तथा अवरोह में प वर्जित होने के कारण इस राग की जाति औड़व-षाड़व है।

पूरिया और मारवा के स्वरों वाला सोहनी राग द्रुत गति और तार सप्तक प्रधान होने के कारण अलग ही दिखता है। विलम्बित गति में आलाप करने पर किसी सीमा तक इसमें पूरिया राग की छाया आने की सम्भावना होती है। सोहनी राग चंचल प्रकृति का माना जाता है। इसमें विलम्बित ख़याल कम गाए जाते हैं तथा ठुमरी गायन अधिक होता है यह बहुत ही आकर्षक राग है। कर्नाटकी संगीत में इसे हंसानंदी कहते हैं। आरोह में रे वर्जित होते हुए भी तार सप्तक में नि रें गं मं गं रें सां के प्रयोग में रे लगा दिया जाता है। किसी-किसी बन्दिश में शुद्ध म का अल्प प्रयोग भी सोहनी राग में किया गया है (क्र०-3 पृ०-414)। इसका अधिक स्वर विस्तार मध्य व तार सप्तक में ही होता है।

आरोह :- सा ग मं ध नि सां रें सां

अवरोह :- सां नि ध नि ध, ग मं ग रे सा।

पकड़ :- सां नि ध नि ध, ग मं ध नि सां रें सां।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सोहनी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

ध	नि	सां	नि	नि	सां			सां	सां	सां	नि	सां	सां		ध
मं	ध	नि	सां	रें	रें	सां	–	नि	ध	नि	सां	नि	ध	–	ग
3				×				2				0			
ध	नि		ध	ग		ग		नि	सां	नि		नि	नि		ध
मं	ध	–	ग	मं	ग	रे	सा	ध	नि	सां	नि	ध	ध	–	ग
3				×				2				0			

अंतरा

मं	मं	ध	नि	सां	सां	नि		नि	नि	सां	नि	सां	सां	ध	
ग	ग	मं	ध	नि	नि	सां	–	सां	रें	नि	सां	नि	ध	नि	–
3				×				2				0			
नि	सां	रें	सां	गं		गं		ध		सां	नि	ध			नि
ध	नि	सां	गं	मं	गं	रें	सां	नि	ध	नि	सां	नि	ध	–	ग
3				×				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सोहनी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

काहे हमको दिखावो तुम मोहन प्यारे सोहनी
सूरत मोहनी मूरत अपनी करत ढोंग न्यारे

अंतरा

नित नित नई नई बात बनाओ
अब कहाँ तक छुपत कपट तुम्हारे

स्थायी

	नि						ध	ध							
	सां	-	सां	सां	नि	मं	ध	सां	-	-	-	नि	ध	नि	ध
ऽ	का	ऽ	हे	ह	म	को	दि	खा	ऽ	ऽ	ऽ	वो	ऽ	तु	म
0				3				x				2			
								रे॒			म				
मं	-	ग	मं	ग	रे॒	सा	-	सा	सा	सा	ग	ग	ग	ग	ग
मो	ऽ	ह	न	प्या	ऽ	रे	ऽ	सो	ह	नि	सु	र	त	मो	ह
0				3				x				2			
ग				ध				नि							म
मं	मं	मं	ग	मं	ध	सां	-	सां	सां	सांनि	मं	-	ध	ग	मं
नि	मु	र	त	अ	प	नी	ऽ	क	र	तऽ	ढों	ऽ	ग	न्या	ऽ
0				3				x				2			
ग	सां	-	सां												
रे,	का	ऽ	हे												
0															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध				सां											
मं	ग	मं	ध	नि	नि	सां	सां	सां	रें	सां	रें	नि	नि	सां	सां
नि	त	ऽ	हे	न	इ	न	इ	बा	ऽ	त	ब	ना	ओ	अ	ब
0				3				x				2			

सां				सां							ध		ध		
रें	गं	रें	सां	नि	नि	सां	सा	नि	ध	-	नि	-	मं	-	ध
क	हाँ	त	क	छु	प	त	क	प	ट	ऽ	तु	ऽ	म्हा	-	ध
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सोहनी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी
मुरली कान्हा अधर बजाई।

अंतरा
सोती थी मैं अपने महल में, आये सदारंग मोरे सुख दाई।

स्थायी

ध	नि	सां	नि	नि		नि	नि	सां	सां	सां	नि	सां	ध	ध	मं
मं	ध	नि	सां	रें	-	सां	सां	नि	ध	नि	सां	नि	नि	मं	ध
मु	र	ली	ऽ	का	ऽ	ऽ	न्हा	अ	ध	र	ब	जा	ऽ	ई	ऽ
3				×				2				0			
ध	धनि	सां	नि												
ग	मंध	नि	सां												
ऽ	मुर	ली	ऽ												
3															

अंतरा

ग	ध	नि		सां		नि		नि	नि	नि	नि	सां	सां	नि	
	ध	मं	ध	नि	-	सां	-	सां	रें	सां	रें	नि	नि	सां	-
ऽ	सो	ती	ऽ	थी	ऽ	मैं	ऽ	अ	प	ने	म	ह	ल	में	ऽ
3				×				2				0			
सां	गं	मं	गं	मं		गं		सां	सां	सां	नि		ध	ध	मं
नि	रें	गं	मं	गं	-	रें	सां	नि	ध	नि	सां	नि	नि	मं	ध
आ	ऽ	ए	स	दा	ऽ	रं	ग	मो	रे	सु	ख	दा	ऽ	ई	ऽ
3				×				2				0			
ध	धनि	सां	नि												
ग	मंध	नि	सां												
ऽ	मुर	ली	ऽ												
3															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	मु र ली ऽ 3	का ऽ ऽ न्हा x	गमं गमं धमं धनि 2	सांनि धमं गरे सा- 0
(2)	मु र ली ऽ 3	का ऽ ऽ न्हा x	गमं धनि सांनि धनि 2	सांनि धमं गरे सा- 0
(3)	मु र ली ऽ 3	का ऽ ऽ न्हा x	धनि सांरें सांनि धनि 2	सांनि धमं गरे सा- 0
(4)	मु र ली ऽ 3	का ऽ ऽ न्हा x	सांनि धनि रेंगं रेंगं 2	मंगं रेंगं रेंसां निसां 0
	धनि सांरें सांनि धनि 3	सांनि धम गरे सा- x	मु र ली ऽ 2	मु र ली ऽ 0
(5)	मु र ली ऽ 3	का ऽ ऽ न्हा x	मंमं गमं गरे सा- 2	धध मंध मंग मंमं 0
	गमं गरे सा- निनि 3	धनि धमं धध मंध x	मंग मंमं गमं गरे 2	सा- सांसां निसां निध 0
	निनि धनि धमं धध 3	मध मंग मंमं गमं x	गरे सा- मुर लीऽ 2	का न्हा मुर लीऽ 0
	का न्हा मुर लीऽ 3	का x		

::अन्तरे की तान::

(1)	ऽ सो ती ऽ 3	थी ऽ मैं ऽ x	सांनि धमं गरे सा- 2	गमं धनि सांरें सां- 0
(2)	ऽ सो ती ऽ 3	थी ऽ मैं ऽ x	सांनि धमं गमं धनि 2	सांरे सांनि धनि सां- 0
(3)	ऽ सो ती ऽ 3	थी ऽ मैं ऽ x	अ प ने म 2	ह ल में ऽ 0
	सांरें सांरें निसां निसां 3	धनि धनि मध निसां x	सांरें रेंनि सांसां धनि 2	निमं धध गमं धनि 0
	सां- सो ती ऽ 3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सोहनी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

दीम् तनन दिर दिर तानोम् त देरे ना, तन देरे नादीम् ना, देरे देरे तन देरे, तन तोम् दिर तदारे तद्रे दानी, दीम् तनन नन, दिर दिर दिर दिर दिर दिर दानी।

अंतरा

ना दिर दिर त नन नन, तोम् दिर दिर त नन नन, तदीम् दीम् तनन नन, तदीम् दीम् तनन नन, तदीम् दीम् तनन, तकिट तकिट थुंग नुंग नुंग धित्ता, तिट कत गदि गन धा, तिट कत गदि गन धा, तिट कत गदि गन धा।

स्थायी

	ध		नि	नि	रें̱	नि	ध	नि	सां	नि	सां	नि	ध	नि	ध
	सां	–	रें̱	सां	नि	ध	मं	ध	नि	सां	नि	ध	नि	ध	मं
ऽ	दी	ऽ	म्त	न	न	दि	र्दि	र्ता	ऽ	ऽ	नो	ऽ	म्त	दे	रे
0				3				×				2			
मं				ग	ग		ग	रे̱			नि̣	ग		ग	ग
ग	–	–	–	मं	मं	ग	रे̱	सा	सा	–	सा	मं	ग	मं	मं
ना	ऽ	ऽ	ऽ	त	न	द	रे	ना	दी	ऽ	म्ना	दे	रे	दे	रे
0				3				×				2			
मं	नि	ध		ध	नि	सां	नि	नि			रे̱	ध	नि		ग
नि	ध	मं	ग	मं	ध	नि	सां	रें̱	सां	–	नि	नि	ध	–	मं
त	न	दे	रे	त	न	तुं	दि	र्त	दा	ऽ	रे	ता	द्रे	ऽ	दा
0				3				×				2			
म	ग		गं	म	गं		नि		सां	नि	रें̱	नि	ध		ध
ग	गं	–	म	गं	रें̱	सां	सां	सां	रें̱	सां	नि	ध	नि	ध	मं
नि	दी	ऽ	म्त	न	न	न	न	दि	र्दि	र्दि	र्दि	र्दि	र्दि	र्दि	ऽ
0				3				×				2			
नि	ध		नि												
ध	सां	–	रें̱												
नि	दी	ऽ	म्त												
0															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

ध	ध	मं	मं	ध	मं	मं	ध	नि	सां	नि	सां	नि	सां	नि	ध
मं	मं	ग	ग	मं	ध	ध	मं	ध	नि	सां	रें	सां	नि	ध	नि
ना	दि	र्दि	र्त	न	न	न	न	तुं	दि	र्दि	र्त	न	न	न	न
0				3				×				2			
नि	सां		गं	रें	गं		सां	नि	ध	नि	ध		नि	ध	नि
सां	गं	–	रें	गं	रें	सां	नि	ध	मं	ध	नि	–	ध	नि	ध
त	दी	ऽ	म्दी	ऽ	म्त	न	न	न	न	त	दी	ऽ	म्दी	ऽ	म्त
0				3				×				2			
ग	मं	ग	ग					ग		ग					
मं	ग	मं	रे	ग	मं	–	ग	मं	ग	रे	सा	गंगं	गंगं	गंगं	मंमं
न	न	न	न	त	दी	ऽ	म्दी	ऽ	म्त	न	न	तकि	टत	किट	थुंग
0				3				×				2			
			नि					नि		नि	सां	नि	सां		
गंगं	रेंरें	सां	सां	धध	निनि	सांसां	रेंरें	सां	–	सां	नि	ध	नि	सांसां	रेंरें
नुंग	नुंग	धि	त्ता	तिट	कत	गदिगिन		धा	ऽ	ति	ट	क	त	गदि	गिन
0				3				×				2			
नि		सां	नि		सां	नि	ध	नि	ध	मं	ध	मं	ग	मं	
सां	–	नि	सां	–	नि	ध	नि	ध	मं	ध	मं	ग	मं	ग	–
धा	ऽ	ति	ट	ऽ	क	त	ऽ	ग	दि	ऽ	ग	न	ऽ	धा	ऽ
0				3				×				2			
	ग		नि	नि	रें	नि	ध								
–	सां	–	रें	सां	नि	ध	मं								
ऽ	दी	ऽ	म्त	न	न	दि	र्दि								
0				3											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(15) वृन्दावनी सारंग

यह राग काफ़ी थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें दोनों निषाद तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी रे संवादी प है अतः यह पूर्वांगवादी राग है। इसके गाने-बजाने का समय दोपहर का है। इसके प्राण स्वर रे प तथा न्यास के स्वर सा रे प हैं। आरोह-अवरोह मे ग ध वर्जित होने के कारण इसकी जाति औड़व-औड़व है।

वृन्दावनी सारंग को बिन्द्रावनी सारंग भी कहते हैं, ये दोनों शब्द कृष्ण जन्मभूमि से सम्बन्धित हैं अतः दोनों ही उचित हैं। वृन्दावन क्षेत्र में सम्भवतः इस राग का अधिक प्रचार रहा होगा इसलिए सारंग के साथ वृन्दावनी शब्द जोड़ दिया गया। सारंग के अनेक प्रकार प्रचार में हैं जैसे :- मधुमाद सारंग, शुद्ध सारंग, बड़हंस सारंग, मियाँ की सारंग, सामंत सारंग और लंकदहन सारंग। इन सभी सारंग के प्रकारों का आधार वृन्दावनी सारंग ही है। इसका निकटवर्ती राग मधुमाद सारंग है।

आरोह :- ऩि सा रे म प नि सां

अवरोह :- सां <u>नि</u> प म रे सा।

पकड़ :- ऩि सा रे म रे, प म रे, सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृन्दावनी सारंग - रूपक (मध्यलय)

स्थायी

प	प			म	सा		सा	ऩि	सा		सा		सा
नि̱	नि̱	प	म	रे	रे	सा	ऩि	सा	रे	सा	रे	-	रे
2		3		0			2		3		0		

सा	सा	ऩि		ऩि	सा	ऩि	म	प	म		म	सा	
ऩि	ऩि	सा	-	प़	ऩि	सा	रे	म	प	म	रे	रे	सा
2		3		0			2		3		0		

अंतरा

प	प	म	म	सां		सां	नि		नि		सां	नि	
म	म	प	प	नि	-	नि	सां	-	सां	-	नि	रें	सां
2		3		0			2		3		0		

सां	नि	मं	रें	मं	सां		सां	नि	नि		प	प	
नि	सां	रें	मं	रें	रें	सां	नि	सां	रें	सां	नि̱	नि̱	प
2		3					2		3				

प	नि̱	प		प		प	म		रे		म	सा	
म	प	सां	-	नि̱	प	म	रे	-	प	म	रे	रे	सा
2		3		0			2		3		0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृन्दावनी सारंग - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

न बोलो श्याम हमी सन, जान गई तुमरे ढंग।

अंतरा

कुबजा नारी अति मन भाई, अब कैसो हमरो संग।

स्थायी

प				सां	रेंसां	रें	नि	नि		प ध		म			नि़
मप	निसां	रेंमंरेंसां		रें	नि	सां	रें	सां	-	निनि	पम	रे	-	सा	सा
नाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	बो	ऽ	लो	श्या	ऽ	मऽ	हऽ	मी	ऽ	स	न
0				3				×				2			
सा		नि़	नि़	म			नि़	रे			प	प	म		
नि़	-	सा	सा	रे	-	सा	सा	नि़सा	रेम	पनिनिप		मप	रे	-	सा
जा	ऽ	न	ग	ई	ऽ	तु	म	रेऽ	ऽऽ	ऽऽऽऽ		ऽऽ	ढं	ऽ	ग
0				3				×				2			

अंतरा

प	नि	सां		नि		नि		सां		नि		नि			
म	प	नि	-	सां	-	सां	-	नि	सां	रें	सां	सां	(सां)	नि	प
कु	ब	जा	ऽ	ना	ऽ	री	ऽ	अ	ति	म	न	भा	ऽ	ई	ऽ
0				3				×				2			
प	नि	म		सा			नि़	रे			प	प	म		
नि	प	रे	-	रे	-	सा	सा	नि़सा	रेम	पनि	निप	मप	रे	-	सा
अ	ब	कै	ऽ	सो	ऽ	ह	म	रोऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	सं	ऽ	ग
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृन्दावनी सारंग - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

बन बन ढूँढन जाऊँ, कितहूँ छुप गये कृष्ण मुरारी।

अंतरा

सीस मुकुट और कानन कुण्डल,
बंसीधर मनरंग फिरत गिरधारी।

स्थायी

नि	नि	नि	नि	प				म		प		म			
सां	सां	सां	सां	नि॒	–	प	पम	रे	–	म	–	प	–	–	–
ब	न	ब	न	ढूँ	ऽ	ढ़	नऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऊँ	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				×				2			
नि॒	म	प		प			म	म	प	म		म			
म	प	सां	–	नि॒	प	म	रे	रे	म	नि॒	पम	रे	–	–	सा
कि	त	हूँ	ऽ	छु	प	ग	ये	कृ	ऽ	ष्ण	मुऽ	रा	ऽ	ऽ	री
0				3				×				2			

अंतरा

प		म	म	प		सां	सां	नि			नि	रें	नि		नि
म	–	प	प	नि॒	प	नि	नि	सां	–	सां	सां	नि	सां	सां	सां
सी	ऽ	स	मु	कु	ट	औ	र	का	ऽ	न	न	कुं	ऽ	ड	ल
×				2				0				3			
रें	नि	मं		रें	रें	मं		रें	नि	नि	नि	सां		प	
नि	सां	रें	–	मं	मं	रें	सां	नि	सां	रें	सां	नि	सां	नि॒	प
बं	ऽ	सी	ऽ	ध	र	म	न	रं	ऽ	ग	फि	र	त	गि	र
×				2				0				3			
प						प		प	नि	नि	नि	प	नि॒		
मप	निसां	रेंमं	रेंसां	निसां	रेंसां	नि॒	प	सां	सां	सां	सां	नि॒	प	पम	पम
धाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	री	ऽ	ब	न	ब	न	ढूँ	ऽ	ढऽ	नऽ
×				2				0				3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	व न व न 0	ढूँ ऽ ढ़ नऽ 3	सांरें सांनि पनि पम x	रेम पम रेम रेसा 2
(2)	व न व न 0	ढूँ ऽ ढ़ नऽ 3	निसा रेम पनि सांनि x	पनि पम रेम रेसा 2
(3)	व न व न 0	ढूँ ऽ ढ़ नऽ 3	निसा रेम रेसा रेम x	पनि पम पनि सां- 2
(4)	व न व न 0	ढूँ ऽ ढ़ नऽ 3	सारे म- रेम प- x	मप नि- पनि सां- 2
(5)	व न ब न 0	ढूँ ऽ ढ़ नऽ 3	निनि पनि निप मप x	निनि पम रेम रेसा 2
(6)	व न ब न 0	ढूँ ऽ ढ़ नऽ 3	निसा रेसा निसा रेम x	रेसा निसा रेम पम 2
	रेम रेसा निसा रेम 0	पनि पम रेम रेसा 3	बन बन ढूँऽ ढ़न x	जा ऽ बन बन 2
	ढूँऽ ढ़न जा ऽ 0	बन वन ढूँऽ ढन 3		

::अन्तरे की तान::

(1)	सी ऽ स मु 0	कु ट औ र 3	सांनि पम रेम रेसा x	निसा रेम पनि सां- 2
(2)	सी ऽ स मु 0	कु ट औ र 3	सारें सांनि पनि पम x	रेम पनि सांनि सां- 2
(3)	सी ऽ स मु 0	कु ट औ र 3	निसां रेंमं रेंसां निसां x	निनि पम पनि सां- 2
(4)	सी ऽ स मु 0	कु ट औ र 3	मंमं रेंमं रेंसां निसां x	रेंरें सारें सांनि पनि 2
	पम रेम पनि सांरें 0	सांनि पम रेम रेसा 3	निसा रेम पनि सां- x	पनि सां- पनि सां- 2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(16) भीमपलासी

यह राग काफ़ी थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें ग-नि कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी म संवादी तार सा होने के कारण यह पूर्वांगवादी राग है। इसके गाने-बजाने का समय दिन के तृतीय प्रहर में 1:00 से 4:00 बजे तक़ है। इसका प्राण स्वर ग तथा न्यास के स्वर सा ग प हैं। इसके आरोह में रे-ध वर्जित तथा अवरोह में सभी स्वर प्रयुक्त होने के कारण इसकी जाति औड़व-सम्पूर्ण है।

इसका निकटवर्ती राग धनाश्री है। भीमपलासी की प्रकृति गम्भीर होने के कारण इसका विस्तार मन्द्र और मध्य में होता है। धनाश्री का वादी प है और इसका अधिकतर विस्तार भीमपलासी जैसा ही होता है इसलिए भीमपलासी राग को धनाश्री अंग का माना गया है। भीमपलासी को धनाश्री से अलग करने के लिए मध्यम को पंचम की अपेक्षा अधिक लगाते हैं। इसके आरोह में ग पर म का, नि पर सा का और अवरोह में ध पर प का तथा रे पर सा का कण लगाया जाता है। कर्नाटकी संगीत में इसका निकटवर्ती राग आभेरी है।

आरोह :- [सा]नि सा [म]ग म प [सा]नि सां
अवरोह :- सां नि [प]ध प म ग [सा]रे सा
पकड़ :- [सा]नि सा म, म ग प, म ग म ग [सा]रे सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भीमपलासी – झपताल (मध्यलय)

स्थायी

सा	नि़	सा	म	सा			ध़	सा	नि़
नि़॒	सा	म	ग॒	रे	सा	–	प़	नि़॒	सा
×		2			0		3		
सा	नि़	सा	म	प	म		म	सा	
नि़॒	सा	म	ग॒	म	प	म	ग॒	रे	सा
×		2			0		3		
सा	नि़	सा	म	प	म	प	ध	सां	नि॒
नि़॒	सा	म	ग॒	म	प	नि॒	प	नि॒	सां
×		2			0		3		
प	प			म	ग॒		म	सा	
नि॒	ध	प	म	ग॒	प	म	ग॒	रे	सा
×		2			0		3		

अंतरा

प	म		म	प	म	प	ध	सां	नि॒
म	प	म	ग॒	म	प	नि॒	प	नि॒	सां
×		2			0		3		
सां	नि॒	सां	मं	सां			सां		
नि॒	सां	मं	गं॒	रें	सां	–	नि॒	ध	प
×		2			0		3		
ध	प		नि॒	सां	सां	नि॒	ध	प	प
प	रें	सां	सां	रें	नि॒	सां	प	नि॒	ध
		2			0		3		
×	ग॒	म	प	म	म	ग॒	म	सा	
प	म	ग॒	म	प	ग॒	म	ग॒	रे	सा
×		2			0		3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भीमपलासी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

जा जा रे अपने मंदिरवा, सुन पावेगी सास ननदिया।

अंतरा

सुनहो सदारंग तुमको चाहत है, क्या तुम हमको छगन दिया।

स्थायी

														म	
														प	–
														जा	ऽ
म		सा		सा	सा	नि		नि		सा	ग	ग		म	ध
ग	–	रे	सा	रे	ज्ञि	सा	–	सा	–	म	म	म	–	नि	प
जा	ऽ	र	ऽ	अ	प	ने	ऽ	मं	ऽ	दि	र	वा	ऽ	जा	ऽ
0				3				×				2			
म	म	सा		सा	सा	नि		नि		सा	ग	ग		म	प
ग	ग	रे	सा	रे	ज्ञि	सा	–	सा	–	म	म	म	मग	ग	म
जा	ऽ	रे	ऽ	अ	प	ने	ऽ	मं	ऽ	दि	र	वा	ऽऽ	सु	न
0				3				×				2			
				सां				सां	सां	नि		पम		ग	
प	नि	सां	गं	रें	–	सां	–	रें	नि	सां	प	ग	–	प	–
पा	ऽ	वे	ऽ	गी	ऽ	सा	ऽ	स	न	न	दि	या	ऽ,	जा	ऽ
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

म	म	म	प	नि		म	प	नि	नि	सां	सां	नि		नि	
प	प	प	म	प	–	ग	म	प	प	नि	नि	सां	सां	सां	–
सु	न	हो	स	दा	ऽ	रं	ग	तु	म	को	चा	ह	त	हैं	ऽ
0				3				×				2			
सां	सां	रें	सां	सां	सां			सां	सां	नि	नि			प	
नि	नि	सां	गं	रें	रें	सां	–	नि	नि	सां	सां	प	मग	नि	प
क्या	ऽ	तु	म	ह	म	को	ऽ	छ	ग	न	दि	या	ऽऽ	जा	ऽ
0				3				x				2			
म	म	सा		सा	सा	नि									
ग	ग	रे	सा	रे	ऩि	सा	–								
जा	ऽ	रे	ऽ	अ	प	ने	ऽ								
0				3											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भीमपलासी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

गोरे मुख सों मोरे मन भावे, लुक छुप दरसन अति ही सुहावे।

अंतरा

नयन मिरग सम चन्द्रमुखी, बदन कमल अति, सदारंग मन छाँड़वे।

स्थायी

	सा		सां	प		म	प	म	म		ग	म	सा		
	सां	-	नि	ध	प	ग	म	प	ग	-	म	ग	रे	-	सा
ऽ	गो	ऽ	रे	मु	ख	सों	ऽ	मो	रे	ऽ	म	न	भा	ऽ	वे
0				3				×				2			

रे		सा	म	सा	सा			सां	सां	सां	नि	नि			
नि	सा	म	ग	रे	रे	सा	सा	नि	नि	नि	सां	सां	नि	ध	प
लु	क	छु	प	द	र	स	न	अ	ति	ही	ऽ	सु	हा	ऽ	वे
0				3				×				2			

प	प		सां
मप	सां	-	नि
ऽऽ	गो		रे
0			

अंतरा

म		म	प	म		म	प	नि	सां	सां	सां	नि			
प	प	प	म	नि	पम	ग	म	प	नि	नि	नि	सां	-	-	-
न	य	न	मि	र	गऽ	स	म	चं	ऽ	द्र	मु	खी	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				0				3			

सां		सां	मं				नि	म	म		ग		म	सा	
नि	सां	मं	गं	रें	रें	सां	सां	प	ग	-	म	-	ग	रे	सा
ब	द	न	क	म	ल	अ	ति	स	दा	ऽ	रं	ऽ	ग	म	न
×				2				0				3			

	रे		नि	सा			ग		म		सां
-	नि	-	सां	प	-	पग	म	-	सां	-	नि
ऽ	छाँ	ऽ	ड़	वे	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	गो	ऽ	रे
×				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	ऽ गो ऽ रे	मु ख सों ऽ	निसा मग रेसा निसा	गम पम गरे सा-
	0	3	x	2
(2)	ऽ गो ऽ रे	मु ख सों ऽ	निसा गम पनि धप	मप मग मग रेसा
	0	3	x	2
(3)	ऽ गो ऽ रे	मु ख सों ऽ	निसा गम पनि सांनि	धप मग मग रेसा
	0	3	x	2
(4)	ऽ गो ऽ रे	मु ख सों ऽ	गम पनि सांनि धप	मप मग मग रेसा
	0	3	x	2
(5)	ऽ गो ऽ रे	मु ख सों ऽ	निसां गंरें सांनि धप	मप मग मग रेसा
	0	3	x	2
(6)	ऽ गो ऽ रे	मु ख सों ऽ	सांनि धप मग मग	रेसा निसा गम प-
	0	3	x	2
	गम पनि सां-पनि	सांगं रेंसां निसां गंगं	रेंसां निसां निनि धप	मप मग मग रेसा
	0	3	x	2

::अन्तरे की तान::

(1)	न य न मि	र गऽ स म	सांनि धप मग रेसा	निसा गम पनि सां-
	0	3	x	2
(2)	न य न मि	र गऽ स म	सांनि धप मप गम	पम गम पनि सां-
	0	3	x	2
(3)	न य न मि	र गऽ स म	निसां गंरें सांनि धप	मप गम पनि सां-
	0	3	x	2
(4)	न य न मि	र गऽ स म	मग मग रेसा सांनि	सांनि धप मंगं मंगं
	0	3	x	2
	रेंसां निसां गंगं रेंसां	निनि धप मप गम	पनि सां- गम पनि	सां- गम पनि सां-
	0	3	x	2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(17) बागेश्री

इस राग के नाम वागीश्वरी, बागेसरी, बागेश्वरी तथा बागेश्री प्राप्त होते हैं। यह राग काफ़ी थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें ग-नि कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी म तथा संवादी सा है। यह उत्तरांग प्रधान राग है। इसका गायन समय मध्यरात्रि में 11:30 से 1:00 बजे तक है। इसके प्राण स्वर ग नि तथा न्यास के स्वर सा म ध हैं। इस राग की जाति के विषय में पंचम के कारण मतभेद है। प्रथम मत के अनुसार इसके आरोह में ऋषभ, पंचम तथा अवरोह में पंचम वर्जित होने के कारण इसकी जाति औड़व-षाड़व है। दूसरे मत के अनुसार आरोह में ऋषभ और अवरोह में पंचम वर्जित करके अवरोह में म, प, ध जो कि आरोह का स्वर समूह है, के कारण षाड़व-षाड़व तथा तीसरे मत के अनुसार आरोह तथा अवरोह में सातों स्वरों के प्रयोग के कारण सम्पूर्ण जाति मानी जाती है। प्रथम दो मत ही प्रचार में अधिक हैं।

बागेश्री राग बहुत ही प्रचलित तथा सुमधुर राग हैं। उत्तरांग के म प ध नि सां में से इसका वादी म है और संवादी मध्य सा है। इसकी अधिकतर बंदिशें उत्तरांग प्रधान प्राप्त होती हैं। ध अत्यन्त प्रबल स्वर है जो कि न वादी है न संवादी। इसकी प्रकृति अपेक्षाकृत चंचल है। तानपूरे के प्रथम तार को मन्द्र पंचम के स्थान पर मन्द्र मध्यम में मिलाकर बागेश्री राग गाया-बजाया जाता है जिससे इस राग में रे और कोमल नि कुछ उतरे हुए लगते हैं। कर्नाटकी संगीत में इसे बागेश्री ही कहा जाता है।

आरोह :- सा नि ध़ नि सा म, ग म ध नि सां
अवरोह :- सां नि ध म ग, म ग रे सा
पकड़ :- सा नि ध़ सा म, ध नि ध म ग रे सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बागेश्री – एकताल (मध्यलय)

स्थायी

सा	म	सा		सा	नि़	नि़	सा	रे		सा	म
म	ग	रे	सा	नि़	सा	ध़	नि़	सा	–	म	ग
×		0		2		0		3		4	
ग	नि	सां	नि	सां		ध	नि	ध			म
म	ध	नि	सां	नि	ध	म	ध	नि	ध	म	ग
×		0		2		0		3		4	
ग	म	ध	नि	सां	नि		नि	सां	रें	नि	
म	ग	म	ध	नि	सां	–	ध	नि	सां	रें	सां
×		0		2		0		3		4	
नि	सां		सां		ध	म		म	म	सा	
सां	रें	सां	नि	ध	म	ध	म	ग	ग	रे	सा
×		0		2		0		3		4	

अंतरा

ग	म	ध	नि	सां	नि		नि	सां	नि	सां	
म	ग	म	ध	नि	सां	–	ध	नि	सां	रें	सां
×		0		2		0		3		4	
सां	नि	सां	मं	सां		सां	नि	नि		सां	
नि	सां	मं	गं	रें	सां	नि	सां	रें	सां	नि	ध
×		0		2		0		3		4	
ध नि		ध सां			ध	म ध		म म		सा	
म	ध	सां	नि	ध	म	ध	म	ग	ग	रे	सा
×		0		2		0		3		4	
सा सां			सां	नि	ध		ध	म म		सा	
सां	रें	सां	नि	ध	नि	ध	म	ग	ग	रे	सा
×		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बागेश्री - एकताल (मध्यलय)

स्थायी

मान मनावे मेरी माने और मनावे वाकी तू नहिं माने

अंतरा

रैन दिन दुरजन नित संग ही रहत मेरी जाने

स्थायी

ग	रेग,रेसारे	सा	निध	सां	सा	म	,मपध	मग	रेरे	ग	-
म	ऽ,नऽम	ना	वेऽ	मे	री	ऽ	,ऽऽऽ	माऽ	ऽऽ	ने	ऽ
3		4		x		0		2		0	
ग	-रेसारे	सा	निध	सा	सा	मध	पधसांनिनि	ध	म	मप,मपध	ग,रेरे
औ	ऽ,रमऽ	ना	वेऽ	वा	की	तूऽ	ऽऽऽ,नहिं	मा	ऽ	ऽऽऽऽऽ	ने,ऽऽ
3		4		x		0		2		0	

अन्तरा

गम	धनि	सां	सांसां	सांसां	सांसां	निसां	रेंसां	निसां	निध	निध	ध,पधनि
रैऽ	नदि	न	दुर	जन	नित	संऽ	गही	रऽ	हत	मेऽ	ऽ,ऽऽऽऽ
4		x		0		2		0		3	
ध	मग	मध	-सां	रेंसां	निध	मध	सांनि	ध,मपध	ग,रेरे		
री	ऽऽ	जाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ,ऽऽऽ	ने,ऽऽ		
4		x		0		2		0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बागेश्री – एकताल (विलंबित)

स्थायी

मोहे मनावन आये हो सगरी रतियाँ किन सौतन घर जागे।

अंतरा

तें तो रंगीले छबि दिखलाये लालन के मन ललचावे।

स्थायी

ध	सां	नि	प	ध		सां	ध		प		म
सां	नि	धनि	,धध	सां	–	नि	नि	ध	ध	म	ग
मो	ऽ	ऽऽ	,हेम	ना	ऽ	ऽ	व	न	आ	ऽ	ऽ
3		4		×		0		2		0	
ग	म	सा		सा		सा		ध़	नि	नि	
म	ग	रे	सा	रे	सा	ऩि	ध़	सा	सा	सा	–
ऽ	ये	हो	ऽ	स	ग	री	ऽ	र	ति	याँ	ऽ
3		4		×		0		2		0	
सा		सा	म	ग	म	ध	प	ध	म	ग	सा
ऩि	सा	म	ग	म	ध	नि	ध	म	ग	मग	रेसा
कि	न	सौ	ऽ	त	न	घ	र	जा	ऽ	ऽऽ	गेऽ
3		4		×		0		2		0	

अंतरा

म	ग	म	सां	नि		नि		सां	मं	सां	
ग	म	निध	,नि	सां	–	सां	निसां	रें	गं	रें	सां
तें	ऽ	तोऽ	,रं	गी	ऽ	ले	ऽऽ	छ	बि	दि	ख
3		4		×		0		2		0	
सां		सां		धम	ग	नि	सां	नि	सां	सां	
निसां	(सां)	नि	ध	ग	म	ध	नि	सां	मंगं	रें	सां
लाऽ	ऽ	ये	ऽ	ला	ऽ	ल	न	के	ऽऽ	म	न
3		4		×		0		2		0	
सां		सां		ध	नि	ध	प		म	ग	सा
रें	सां	नि	ध	म	ध	नि	ध	म	ग	मग	रेसा
ल	ल	चा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	वेऽ
3		4		×		0		2		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) नाऽ सा (सा) नि ध, म नि ध नि सा मोहे म
x 4

(2) नाऽ सा नि ध नि सा, सा नि ध नि सा म, म ग रे सा मोहे म
x 4

(3) नाऽ म ग म ध म, ग म ध नि ध म प ध ग, म ग रे सा मोहे म
x 4

(4) नाऽ ग म ध नि सां, (सां) नि ध, म प ध ग, म ग रे सा मोहे म
4

::बोलतान::

(1) नाऽ -मगुम ध-धध -निधनि सां-सांसां
x
ऽमोहेम नाऽवन ऽआयेहो सऽगुरी
0
-रेंनिसां नि-धम पधमग मगुरेसा
ऽरतियाँ कीऽनसो तनघर जाऽगेऽ मोऽ ऽऽहेम
4

::तान::

(1) नाऽ मम गुम गुरे सा-
x 0
मम गुम धनि धम मम गुम गुरे सा-
मम गुम धनि सांनि धनि धम मम गुम गुरे सा-
मम गुम धनि सारें सांनि धनि सांनि धनि धम गुम गुरे सा- मोऽ ऽऽहेम
4

(2) नाऽ सागु मगु मगु रेसा
x 0
सागु मध मगु मगु रेसा
सागु मध निध मगु मगु रेसा
सागु मध निसां निध मगु मगु रेसा
सागु मध निसां रेंसां निध -म पध गु- मगु रेसा मोऽ ऽऽहेम
4

(3) नाऽ धनि निध सांसां निसां धनि निध रेंरें सारें
x 0
धनि धसां निसां धनि धरें सारें
धनि धसां धनि धरें
सारें निसां निध मध निसां निध
निनि धनि धम धध मध मगु मगु रेसा मोऽ ऽऽहेम
4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बागेश्री – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

कौन करत तोरी बिनति पियरवा, मानो न मानो हमरी बात।

अंतरा

जब से गये मोरी सुधहु न लीनी,
चाहे सौतन के घर जात।।

स्थायी

ध		सां	ध	प			ध	म	म	सा		सा	सा		
सां	–	नि	नि	ध	म	प	ध	ग	ग	रे	सा	रे	रे	सा	–
कौ	ऽ	न	क	र	त	तो	रि	बि	न	ति	पि	य	र	वा	ऽ
0				3				×				2			

	ध	सां	सां	प़		ध	प	म	म	सा		सा	सा		
–	सां	नि	नि	ध	म	प	ध	ग	ग	रे	सा	रे	रे	सा	–
ऽ	कौ	न	क	र	त	तो	रि	बि	न	ति	पि	य	र	वा	ऽ
0				3				×				2			

	सा		नि़	सा	नि़		नि़	सा	म	ध	सां	प	म		
–	नि	–	ध़	नि़	सा	–	सा	म	ध	पध	नि	ध	ग	–	रेसा
ऽ	मा	ऽ	नो	न	मा	ऽ	नो	ह	म	रीऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽ	तऽ
0				3				×				2			

अंतरा

म	ग	नि	सां	नि		नि	नि	नि	नि	नि		सां	रें	सां	
ग	म	ध	नि	सां	–	सां	सां	नि	सां	रें	सां	नि	सां	नि	ध
ज	ब	से	ग	ये	ऽ	मो	रि	सु	ध	हु	न	ली	ऽ	नी	ऽ
0				3				×				2			

	नि		नि	सां			प	म			ग	म	सा		
–	ध	–	ध	नि	–	ध	ध	ग	–	–	म	ग	रे	–	सा
ऽ	चा	ऽ	हे	सौ	ऽ	त	न	के	ऽ	ऽ	घ	र	जा	ऽ	त
0				3				×				2			

	म	सां	ध
–	सां	नि	नि
ऽ	कौ	न	क
0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बागेश्री - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

बल्मा मोरी तोरे संग लागीली प्रीत।

अंतरा

घर आँगना कछु नाहीं भावे,
हितवा मितवा सदारंगीले घर आइलो, देखिये प्रीत की रीत।

स्थायी

															सा
															ब
म	सा			सा				सा		ध़		नि़			ग
ग	रे	-	सा	रे	-	सा	-	नि़	ध़	सा	-	सा	-	-	म
ल्मा	मो	ऽ	रि	तो	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	सं	ऽ	ग	ऽ	ऽ	ला
3				×				2				0			
नि	सां	रें		सां				ध		ध		म			
ध	नि	सां	-	नि	-	ध	-	म	-	प	ध	ग	-	-	रे
ऽ	ग	ली	ऽ	पी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ,	ब·
3				×				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

म
ग
घ

ग	नि		सां	नि				सां		नि		नि			सां
म	ध	-	नि	सां	-	-	-	नि	-	सां	-	सां	-	-	नि
र	आँ	ऽ	ग	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	क
3				×				2				0			
	नि			सां		नि		सां						नि	नि
सां	रें	-	सां	नि	-	सां	-	नि	-	-	-	ध	-	ध	ध
छु	ना	ऽ	हिं	भा	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हि	त
3				×				2				0			
धा			प	म				ग	म			सा			सा
पध	नि	ध	ध	ग	-	-	-	म	ग	-	रेसा	रे	-	सा	रे
वाऽ	ऽ	मि	त	वा	ऽ	ऽ	ऽ	स	दा	ऽ	रंऽ	गी	ऽ	ले	घ
3				×				2				0			
सा			सा	नि़					सा		प	म			ग
सा	नि़	ध़	नि़	सा	-	-	-	-	ध	-	ध	ग	-	-	म
र	आ	ऽ	इ	लो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दे	ऽ	खि	ये	ऽ	ऽ	पी
3				×				2				0			
नि	सां	रें		सां				ध		ध		म			ग
ध	नि	सां	-	नि	-	ध	-	म	-	प	ध	ग	-	-	रे
ऽ	त	की	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ,	ब
3				×				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::बोलतान::

(1) ग	रे	-सा	-	रे	-	सा	-म	-	म	प	ध	ग-	रे	सा	ग
ल्मा	मो	ऽ	रि	तो	ऽ	रे	बल	ऽ	मा	मो	री	तोऽ	रे	ऽ	ब
3				x				2				0			
(2) ग	रे	-सा	-	रे	-	सा	सां-	-	नि	ध	म	गम	गरे	सा	ग
ल्मा	मो	ऽ	रि	तो	ऽ	रे	बल	ऽ	मा	मो	री	तोऽ	ऽऽ	रे	ब
3				x				2				0			
(3) ग	रे	-सा	-	रे	-	सा	-	मंगं	गंरें	रेंसां	सांनि	रेंसां	सांनि	निध	धम
ल्मा	मो	ऽ	रि	तो	ऽ	रे	ऽ	बाऽ	ल्मा	मोऽ	रीऽ	तोऽ	रेऽ	संऽ	गऽ
3				x				2				0			
सांनि	निध	धम	मग	गम	धनि	सांनि	धम	गम	गरे	सा-	सां-	-नि	--	ध-	-म
लाऽ	गऽ	लीऽ	प्रीऽ	तऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	बऽ	ऽल्मो	ऽऽ	मोऽ	ऽरी
3				x				2				0			
-ग	रे-	सारे	-सा												
ऽऽ	तोऽ	रेतो	ऽरे												
3															

::स्थायी की तान::

(1) ल्मा	मो	ऽ	रि	तो	ऽ	रे	ऽ	मम	गम	मग	मम	गम	गरे	सा-	ब
3				x				2				0			
(2) ल्मा	मो	ऽ	रि	तो	ऽ	रे	ऽ	गम	धनि	सांनि	धम	गम	गरे	सा-	ब
3				x				2				0			
(3) ल्मा	मो	ऽ	रि	तो	ऽ	रे	ऽ	धनि	सांध	निसां	धनि	सांनि	धम	गम	ब
3				x				2				0			
(4) ल्मा	मो	ऽ	रि	तो	ऽ	रे	ऽ	मम	गम	गरे	सा-	धध	मध	मग	मम
3				x				2				0			
गम	गरे	सा-	निनि	धनि	धम	धध	मध	मग	मम	गम	गरे	सा-	सांसां	निसां	निध
3				x				2				0			
निनि	धनि	धम	धध	मध	मग	मम	गम	गरे	सा-	रेंरें	सारें	सांनि	सांसां	निसां	निध
3				x				2				0			
निनि	धनि	धम	धध	मध	मग	मम	गम	गरे	साब	ल्मामो	ऽरी	तोऽ	रेब	ल्मामो	ऽरी
3				x				2				0			
तोऽ	रेब	ल्मामो	ऽरी	तो											
3				x											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::अन्तरे की तान::

(1)	र	आँ	ऽ	ग	ना	ऽ	ऽ	ऽ	सांनि	धम	गुरे	सा-	गुम	धनि	सां-	घ
	3				x				2				0			
(2)	र	आँ	ऽ	ग	ना	ऽ	ऽ	ऽ	सांनि	धनि	धम	गुम	धनि	सांनि	सां-	घ
	3				x				2				0			
(3)	र	आँ	ऽ	ग	ना	ऽ	ऽ	ऽ	सांनि	धनि	धम	धम	गुम	धनि	सां-	घ
	3				x				2				0			
(4)	र	आँ	ऽ	ग	ना	ऽ	ऽ	ऽ	सारें	सांनि	धनि	धम	गुम	धनि	सां-	घ
	3				x				2				0			
(5)	र	आँ	ऽ	ग	ना	ऽ	ऽ	ऽ	गुम	गुम	धध	मध	मध	निनि	धनि	धनि
	3				x				2				0			
	सांनि	धनि	धम	गुम	धनि	सां-	--	गुम	धनि	सां-	--	गुम	धनि	सां-	--	घ
	3				x				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बागेश्री – चौताल (विलंबित)

स्थायी

आये रघुवीर धीर अजोध्या नगर को,
लंकापति हनन कियो राज दियो विभीषन को।

अंतरा

सिंघासन पर बैठे सीता रामचंद्र,
भरत शत्रुघन चँवर झुलावे, आगे हनुमत बीर।।

स्थायी

सा		सां	प	ध	म	ध		म	सा		
सां	–	नि	ध	म	ध	म	–	ग	रे	–	सा
आ	ऽ	ये	र	घु	ऽ	वी	ऽ	र	धी	ऽ	र
×		0		2		0		3		4	
सा			सा	सा	ध़	सा	म		सा		
रे	सा	–	ऩि	ध़	सा	म	ग	–	रे	–	सा
अ	जो	ऽ	ध्या	ऽ	न	ग	र	ऽ	को	ऽ	ऽ
×		0		2		0		3		4	
सा	नि	म	ग	नि	सां	नि	नि		नि		
ऩि	सा	ग	म	ध	नि	सां	सां	सांनि	रें	सां	–
लं	ऽ	का	ऽ	प	ति	ह	न	नऽ	कि	यो	ऽ
×		0		2		0		3		4	
म		सां	प	ध	म	ग	म	सा	सा		
सां	–	नि	ध	म	ध	म	ग	रे	रे	सा	–
रा	ऽ	ज	दि	यो	ऽ	वि	भी	ष	न	को	ऽ
×		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन - सम से

सां- नि़ध	मध म-	गुरे -सा	रेसा -नि़	धसा मगु	-रे -सा
आऽ येर	घुऽ वीऽ	रघी ऽर	अजो ऽध्या	ऽन मर	ऽको ऽऽ
x	o	2	o	3	4
नि़सा गुम	धनि सांसां	सांनिरें सां-	सां- निध	मध मगु	रेरे सा-
लंऽ काऽ	पति हन	नऽकि योऽ	राऽ जदि	योऽ विभि	षन कोऽ
x	o	2	o	3	4

तिगुन - 9 मात्रा से

सां -	नि ध	म ध	म -	सां-नि धमध	म-गु रे-सा
आ ऽ	ये र	घु ऽ	वी ऽ	आऽये रघुऽ	वीऽर धीऽर
x	o	2	o	3	4
रेसा- नि़ध़सा	मगु- रे-सा	नि़सागु मधनि	सांसांसांनि रेंसां-	सां-नि धमध	मगुरे रेसा-
अजोऽ ध्याऽन	गरऽ कोऽऽ	लंऽका ऽपति	हननऽ कियोऽ	राऽज दियोऽ	विभिष नकोऽ
x	o	2	o	3	4

चौगुन - सम से

सां-निध मधम-	गुरे-सा रेसा-नि़	ध़सामगु -रे-सा
आऽयेर घुऽवीऽ	रघीऽर अजोऽध्या	ऽनगर ऽकोऽऽ
x	o	2
नि़सागुम धनिसांसां	सांनिरेंसां- सां-निध	मधमगु रेरेसा-
लंऽकाऽ पतिहन	नऽकियोऽ राऽजदि	योऽविभि षनकोऽ
o	3	4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

ग॒	म	ग॒	म		सां	नि॒	नि॒		नि॒		नि॒
म	ग॒	म	नि॒	ध	नि॒	सां	सां	–	सां	–	सां
सिं	घा	ऽ	स	ऽ	न	प	र	ऽ	बै	ऽ	ठे
×		0		2		0		3		4	
नि॒	सां	नि॒	नि॒			सां	नि॒	नि॒	नि॒	सां	
सां	नि॒	सां	रें	–	सां	नि॒	सां	सां	सां	नि॒	ध
सी	ता	ऽ	रा	ऽ	म	चं	ऽ	द्र	भ	र	त
×		0		2		0		3		4	
नि॒		सां	नि॒		सां	मं	सां		सां		नि॒
ध	–	नि॒	सां	–	मं	गं॒	रें	सां	रें	सां	सां
श	ऽ	त्रु	घ	ऽ	न	चँ	व	र	झु	ला	वे
×		0		2		0		3		4	
ग॒		सां	प	ध	म		म		सा		
म	सां	नि॒	ध	म	ध	मं	ग॒	–	रे	–	सा
आ	ऽ	गे	ह	नु	ऽ	म	त	ऽ	बी	ऽ	र
×		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन - सम से

मग मनि	धनि सांसां	-सां -सां	सांनि सारें	-सां निसां	सांसां निध
सिंघा ऽस	ऽन पर	ऽबै ऽठे	सीता ऽरा	ऽम चंऽ	द्रभ रत
x	o	2	o	3	4
ध- निसां	-मं गुंरें	सारें सांसां	मसां निध	मध मग	-रे -सा
शऽ त्रुघ	ऽन चँव	रझु लावे	आऽ गेह	नूऽ मत	ऽवी ऽर
x	o	2	o	3	4

तिगुन- 9 मात्रा से

म ग	म नि	ध नि	सां सां	मगम निधनि	सांसां- सां-सां
सिं घा	स ऽ	न प	र ऽ	सिंघाऽ सऽन	परऽ बैऽठे
x	o	2	o	3	4
सांनिसां रें-सां	निसांसां सांनिध	ध-नि सां-मं	गुंरेंसां रेंसांसां	मसांनि धमध	मग- रे-सा
सीताऽ राऽम	चंऽद्र भरत	शऽत्रु घऽन	चँवर झुलावे	आऽगे हनूऽ	मतऽ वीऽर
x	o	2	o	3	4

चौगुन - सम से

मगमनि धनिसांसां	-सां-सां सांनिसारें	-सांनिसां सांसांनिध
सिंघाऽस ऽनपर	ऽबैऽठे सीताऽरा	ऽमचंऽ द्रभरत
x	0	2
ध-निसां -मंगुंरें	सारेंसांसां मसांनिध	मधमग -रे -सा
शऽत्रुघ ऽनचँव	रझुलावे आऽगेह	नूऽमत ऽवीऽर
0	3	4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(18) बहार

यह राग काफ़ी थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें ग कोमल, दोनों निषाद तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी म तथा संवादी सा है। इसका गायन-वादन समय मध्यरात्रि में 11:30 से 1:00 बजे तक है। इसका प्राण स्वर म तथा न्यास के स्वर सा म प हैं। यह मौसमी राग है। वसंत ऋतु में इसे अधिक गाया-बजाया जाता है। इसके आरोह में रे और अवरोह में ध वर्जित, आरोह में पंचम तथा अवरोह में गान्धार वक्र होने के कारण इसकी जाति वक्र-षाड़व है।

वसंत ऋतु का राग होने के कारण इस राग की बंदिशों में अधिकतर वसंत ऋतु संबंधी विवरण मिलता है। यह चंचल प्रकृति का राग है। म प ध नि सां में से म वादी होने के कारण यह उत्तरांग प्रधान राग है। 'कहत राग बहार' लक्षण गीत के अन्तर्गत बागेश्वरी मल्हार सो मिलत........सुर अड़ाना बीच........चमकत... .....(क्र०-4 पृ०-605-606) के अनुसार इसमें बागेश्वरी, मल्हार तथा अड़ाना का मिश्रण है। इसका निकटवर्ती राग मियाँमल्हार है। कुछ विद्वान् बहार राग में नि सां रें सां रें ग रें सां नि ध नि सां इस स्वर संगति का प्रयोग द्रुत गति से तार सप्तक में करते हैं। इसमें कान्हड़ा अंग की नि प म प ग म रे सा, बागेश्वरी अंग की म गऽ म नि ध नि ध, सां रें नि ध तथा अड़ाना अंग की नि प म प सां रें सां, सां स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह :- सा म, म प ग म, नि ध नि सां
अवरोह :- सां नि प, म प, ग म रे सा।
पकड़ :- सां नि प म प ग म नि ध नि सां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहार – तीव्राताल (मध्यलय)

स्थायी

प	ध		प	म	म	ग̲	नि̲		सां		सां	सां	
नि̲	नि̲	प	म	प	ग̲	म	ध	–	नि	सां	रें	नि	सां
×			2		3		×			2		3	
सां		सां	सां		प		म	म	ग̲	सा	सा		
नि	सां	रें	नि	सां	नि̲	प	ग̲	ग̲	म	रे	रे	सा	–
×			2		3		×			2		3	
ऩि	सा		प		म	ग̲	नि̲		सां	नि	सां	सां	
सा	म	म	म	प	ग̲	म	ध	–	नि	सां	रें	नि	सां
×			2		3		×			2		3	

अंतरा

सा	म	ग̲	नि̲	नि̲	सां	सां	नि		नि	सां	सां		
म	ग̲	म	ध	ध	नि	नि	सां	–	सां	नि	नि	सां	–
×			2		3		×			2		3	
सां	सां		मं	गं̲	सां		सां		सां	सां		ध	
नि	नि	सां	गं̲	मं	रें	सां	नि	सां	रें	नि	सां	नि̲	प
×			2		3		×			2		3	
नि		नि	ध		प	म	म	म	ग̲	सा	सा		
सां	–	सां	नि̲	प	म	प	ग̲	ग̲	म	रे	रे	सा	–
×			2		3		×			2		3	
ऩि	सा		प	म	म	ग̲	नि̲		सां	नि	सां	सां	
सा	म	म	म	प	ग̲	म	ध	–	नि	सां	रें	नि	सां
×			2		3		×			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहार – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

बालमवा माई री, बरन बरन की कलियाँ खिलियाँ,
लहरानी बन बेलरियाँ, सखी अजहुँ नहीं आये।

अंतरा

हों बिरहिन बौरानी, जो जो लहरानी हरियाँ डरियाँ,
ऋतु बसंत में, अज़ीजद्दीन पिया,
सौतन के घर भूल रहे।।

स्थायी

प		ध		म	म	प	म	प				ध		सां	
सां	–	नि	प	ग	ग	म	प	सां	–	–	–	नि	ध	नि	सां
बा	ऽ	ल	मु	वा	ऽ	मा	ई	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				×				2			
नि	सां		सां	सां		प		म	म	म	ग	म	सा		
सां	रें	सां	रें	नि	सां	नि	प	ग	ग	ग	म	रे	रे	सा	–
ब	र	न	ब	र	न	की	ऽ	क	लि	याँ	ऽ	खि	लि	याँ	ऽ
0				3				×				2			
नि़		सा		ग		ग	ग	म	ग	म		म		ग	
सा	सा	म	–	म	–	म	म	ग	म	नि	प	ग	–	म	–
ल	ह	रा	ऽ	नी	ऽ	ब	न	बे	ऽ	ल	रि	याँ	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				×				2			
म		नि	सां	नि			नि	सां			रें	सां		नि	
ग	म	ध	नि	सां	–	सां	सां	नि	सां	निसां	सां	नि	ध	धनि	सां
स	खि	अ	ज	हुँ	ऽ	न	हिं	आ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ए	ऽ	ऽऽ	ऽ
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

म		नि̲	सां	नि		नि		सां		नि		नि		नि	
ग̲	म	ध	नि	सां	नि	सां	–	नि	–	सां	–	सां	–	सां	–
हों	ऽ	बि	र	हि	न	बौ	ऽ	रा	ऽ	नी	ऽ	जो	ऽ	जो	–
0				3				×				2			
सां	सां	नि		नि		सां				सां		सां		ध	
नि	नि	सां	–	सां	–	नि	सां	निसां	रें	रें	सां	नि̲	ध	नि̲	प
ल	ह	रा	ऽ	नी	ऽ	ह	रि	याँऽ	ऽ	ड	रि	याँ	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				×				2			
ग̲		प	म		नि̲	म	ग̲	ग̲	म		सां	नि		नि	नि
म	म	म	प	–म	प	ग̲	म	म	नि̲	ध	नि	सां	नि	सां	सां
ऋ	तु	ब	सं	ऽऽ	त	में	ऽ	अ	ज़ी	ज़	उ	दी	न	पि	या
0				3				×				2			
सां		मं	ग̲	मं			नि	सां	सां		सां	सां		नि̲	
नि	सां	ग̲ं	मं	रें	–	सां	सां	ध	नि	सां	रें	नि	सां	धनि	सां
सौ	ऽ	त	न	के	ऽ	घ	र	भू	ऽ	ल	र	हे	ऽ	ऽऽ	ऽ
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::बोलतान::

(1)	सां - नि प	ग ग म प	सा म - प	ग म रे सा
	वा ऽ ल मु 0	वा ऽ मा ई 3	वा ल ऽ मु x	वा ऽ मा ई 2
(2)	सां - नि प	ग ग म प	ग म ध नि	सां - निध निसां
	बा ऽ ल मु 0	वा ऽ मा ई 3	बा ऽ ल मु x	वा ऽ ऽमा ऽई 2
(3)	सां - नि प	ग ग म प	गं मं रें सां	नि ध धनि सांरें
	बा ऽ ल मु 0	वा ऽ मा ई 3	बा ऽ ल मु x	वा ऽ माऽ ईऽ 2

::स्थायी की तान::

(1)	वा ऽ ल मु 0	वा ऽ मा ई 3	मप गम निध निसां x	निप मप गम रेसा 2
(2)	वा ऽ ल मु 0	वा ऽ मा ई 3	गम धनि सांरें निसां x	निप मप गम रेसा 2
(3)	वा ऽ ल मु 0	वा ऽ मा ई 3	सांरें निसां निध निसां x	निप मप गम रेसा 2
(4)	वा ऽ ल मु 0	वा ऽ मा ई 3	गंमं रेंसां निध निसां x	निप मप गम रेसा 2
(5)	वा ऽ ल मु 0	वा ऽ मा ई 3	मप गम निप मप x	गम निध निप मप 2
	गम निध निसां निप 0	मप गम निध निसां 3	रेंसां निसां निप मप x	गम निध निसां गंमं 2
	रेंसां निध निसां निप 0	मप गम धनि सां- 3	बा ऽ ल मु x	बा ऽ ल मु 2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::अन्तरे की तान::

(1)	हों ऽ वि र	ह न बी ऽ	सांरें निसां निप मप	गम धनि सांरें निसां
	X	2	0	3
(2)	हों ऽ वि र	ह न बी ऽ	सांसां निप गम रेसा	मप गम धनि सां -
	X	2	0	3
(3)	हों ऽ वि र	ह न बी ऽ	सांरें निसां निध निप	मप गम निध निसां
	X	2	0	3
(4)	हों ऽ वि र	ह न बी ऽ	गंमं रेंसां निप मप	गम धनि सांरें निसां
	X	2	0	3
(5)	हों ऽ वि र	ह न बी ऽ	गम धनि सांरें निसां	गंमं रेंसां निध निसां
	X	2	0	3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहार - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

कैसी निकसी चाँदनी,
शरद रात मदमात विकल भई, पियु पियु टेरत भामिनी।

अंतरा

छिन आंगन छिन जात भवन में,
छिन बैठत छिन बारि हुँ दौरत,
कल ना परत तरफत बिरहाकुल, चमकत जो दुख दामिनी।

स्थायी

	म			प		म	ग॒	नि॒			सां	नि		सां	
	नि॒	–	प	म	प	ग॒	म	ध	–	–	नि	सां	–	नि	सां
ऽ	कै	ऽ	सि	नि	क	सी	ऽ	चाँ	ऽ	ऽ	द	नी	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				×				2			
नि		नि	ध			प		म	म	म	ग॒	म	सा	ऩि	
सां	सां	सां	नि॒	–	प	म	प	ग॒	ग॒	ग॒	म	रे	रे	सा	सा
श	र	द	रा	ऽ	त	म	द	मा	ऽ	त	वि	क	ल	भ	ई
0				3				×				2			
सा		ग॒	ग॒	म		म	ग॒		मनि॒		सां	नि		नि॒	
म	म	म	म	प	–	ग॒	म	–	ध	–	नि	सां	–	(धनि)	सां
पि	यु	पि	यु	टे	ऽ	र	त	ऽ	भा	ऽ	मि	नी	ऽ	(ऽऽ)	ऽ
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

म	म	ग॒		ध		सां	सां	नि			सां	नि		नि	
ग॒	ग॒	म	–	नि॒	ध	नि	नि	सां	–	नि	नि	सां	नि	सां	–
छि	न	आँ	ऽ	ग	न	छि	न	जा	ऽ	त	भ	व	न	में	ऽ
0				3				×				2			
सां	सां	नि		प		प		म	म	म	म	म			
नि	नि	सां	–	नि॒	प	म	प	ग॒	ग॒	ग॒	ग॒म	रे	–	सा	सा
छि	न	बै	ऽ	ठ	त	छि	न	बा	ऽ	रि	हुँऽ	दौ	ऽ	र	त
0				3				×				2			
नि़	नि़		सा		ग॒	म		म		नि॒	सां	नि			नि
सा	सा	सा	म	म	म	नि॒	प	ग॒	म	ध	नि	सां	–	सां	सां
क	ल	ना	प	र	त	त	र	फ	त	बि	र	हा	ऽ	कु	ल
0				3				×				2			
नि	नि	सां	ग॒	मं		सां		ध			सां	नि			
सां	सां	मं	मं	रें	–	नि	सां	नि॒	ध	–	नि	सां	–	निसांरें	निसां
च	म	क	त	जो	ऽ	दु	ख	दा	ऽ	ऽ	मि	नी	ऽ	ऽऽऽ	ऽऽ
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(19) जौनपुरी

यह राग आसावरी थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें ग ध नि कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी ध एवं संवादी ग होने के कारण यह उत्तरांग प्रधान राग है। इसके गायन-वादन का समय दिन के दूसरे प्रहर में 10:00 से 11:30 बजे तक है। इसका प्राण स्वर प तथा न्यास के स्वर सा प हैं। इस राग के आरोह में गान्धार वर्जित है तथा अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग होता है, इसलिए इसकी जाति षाड़व-सम्पूर्ण है।

कहा जाता है कि इस राग का प्रचार जौनपुर के सुल्तान 'हुसैन शर्की' ने किया था। कर्नाटकी संगीत में इसे जौनपुरी ही कहते हैं। इसका निकटवर्ती राग आसावरी है। जौनपुरी राग में आसावरी की अपेक्षा कोमल निषाद का अधिक प्रयोग होता है। जौनपुरी राग में आलाप-तान करते समय रे म प की स्वर संगति अधिक प्रयुक्त की जाती है जबकि आसावरी में कम। आसावरी मन्द्र-मध्य सप्तक प्रधान है और जौनपुरी मध्य-तार सप्तक में गाया-बजाया जाता है। आसावरी की अपेक्षा जौनपुरी अधिक चंचल है। इसमें आसावरी अंग की म रे ऽ म प नि ध प, ध म प, ध ध सां स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह :- सा मरे म प निध नि सां
अवरोह :- सां नि ध प म ग रे सा।
पकड़ :- म प नि ध प, ध म प ग रे म प।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जौनपुरी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

म	प	ध	प	नि	नि		म	प	ध	प		म	रे	सा	
रे	म	प	नि	ध	ध	प	प	म	प	ध	प	ग	ग	रे	सा
3				×				2				0			

सा		नि		प	ध	सा		म	प	म	म	म	रे	सा	
रे	सा	ध	प	म	प	नि	सा	रे	म	ध	प	ग	ग	रे	सा
3				×				2				0			

अंतरा

प	ध	नि	सां	नि		सां	नि	नि	सां	रें	सां	सां			नि
म	प	ध	नि	सां	-	नि	सां	ध	नि	सां	गं	रें	सां	ध	प
3				×				2				0			

पमं	रें	सां		सां	सां	नि		प	ध	प		म	रे	सा	
गं	गं	रें	सां	रें	नि	ध	प	म	प	ध	प	ग	ग	रे	सा
3				×				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

जौनपुरी – त्रिताल (विलंबित)

स्थायी

कैसे के धरूँ धीर, पिया मोरा न माने जियरवा मोरा।

अंतरा

रात दिना मोहे तरफत बीती, आन मिलो हररंग पिया मोरा।

स्थायी

म	प	म	पनि	सां	नि			पप	म	पप		म		सा	
रे	म	प	सांसां	नि	ध	प	–	धम	प	–	धध,पमप	ग	–	रे	सा
कै	से	के	धऽ	रू	ऽ	ऽ	ऽ	धीऽ	ऽ	ऽ	रऽ,पिऽऽ	या	ऽ	मो	रा
3				×				2				0			
नि		नि		ध				प	म		पप	म		सा	
सां	नि	ध	प	पध	पधनि	धप	धम	म	प	–	धध,पमप	ग	–	रे	सानिसा
ना	ऽ	ऽ	ऽ	माऽ	ऽऽऽ	नेऽ	ऽऽ	जी	ऽ	ऽ	यऽ,रऽऽ	वा	ऽ	मो	राऽऽ
3				×				2				0			

अंतरा

प	म	नि	नि	ध		नि	नि	रें		मं	सां	सां	रे ग	नि	
म	प	ध	ध	सां	–	सां	सां	सारें	सारेंगं	रें	सां	नि	सारें	ध	प
रा	ऽ	त	दि	ना	ऽ	मो	हे	तऽ	रऽऽ	फ	त	बी	ऽऽ	ती	ऽ
3				×				2				0			
प		सां	नि	सां	सां	नि		पप	म	पप		म		सा	
मप	गं	रें	सां	रें	नि	ध	प	धम	प	–	धध,पमप	ग	–	रे	सा
आऽ	ऽ	न	मि	लो	ऽ	ह	र	रंऽ	ऽ	ऽ	गऽ,पिऽऽ	या	ऽ	मो	रा
3				×				2				0			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) रूँ सा- रे म प, ध म प ग - - रे सा कैसे के
x
(2) रूँ रे म प नि ध - प, धधपमप गरेमप म प ग रे सा - कैसे के
x
(3) रूँ म प ध नि सां, नि सां ध प, पधनिसां निसांध,
x
प म प ग रे सा - कैसे के

(4) रूँ प गं रें सां, रें नि सां निसां निसांरें नि - ध - प -
x
धमप ग रे सा - कैसे के

::तान::

(1) रूँऽऽऽ सारे मप धप मप मग रेसा रेम प-
x 2
सारे मप धनि धप मप धप मग रेसा रेम प-

मप धनि सांनि धप मप धप मग रेसा रेम प-

मप धनि सांरें गंरें सांनि धप मप धप मग रेसा रेम प- कैसे के

(2) रूँऽऽऽ सारे सारे सारे म- रेम रेम रेम प- मप मप मप ध- पध
x 2
पध पध नि- धनि धनि धनि सां- निसां निसां निसां रें-

सांरें गंरें सांनि धप सांनि धप मग रेसा

सांनि धप मप धनि सांनि धप मग रेसा कैसे के

(3) रूँऽऽऽ धप मध पम धप मध पम गरे सा-
x 2
निध पनि धप निध पनि धप मग रेसा

निसा रेम रेम पध मप धनि पध निसां धनि सांरें गंरें सांनि सांनि धप

मग रेसा कैसे केध रूँऽ कैसे केध रूँऽ कैसे केध रूँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जौनपुरी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

पायल की झंकार बैरनिया,
झन झन बाजे, कैसे मोरे पिया सों मिलन को जाऊँ अब मैं।

अंतरा

बिरहा से तन ताप तपत है,
अंग अंग सब लाग रहीला, सदारंगीले उठत जिया हूक।

स्थायी

	प	नि		प	प			म		सा	प	प	म	म	
–	सां	ध	प	ध	म	पध	मप	ग	–	रे	म	म	प	प	–
ऽ	पा	य	ल	की	ऽ	झऽ	नऽ	का	ऽ	र	बै	र	नि	या	ऽ
0				3				×				2			
ध		ध	नि	नि			प	म				सा			
प	पध	सां	सां	ध	–	प	ध	ग	–	–	रेसा	रे	–	सा	–
झ	नऽ	झ	न	बा	ऽ	जे	ऽ	कै	ऽ	ऽ	सेऽ	मो	ऽ	रे	ऽ
0				3				×				2			
म	म		प	म	म	प		सां				सां	रें	नि	प
रे	रे	म	म	प	प	गं	–	रें	–	सां	–	नि	सां	ध	म
पि	या	सों	मि	ल	न	को	ऽ	जा	ऽ	ऊँ	ऽ	अ	ब	मैं	ऽ
0				3				×				2			
ध		सां	रें	नि											
पध	निसां	नि	सां	ध	प	पध	मप								
पाऽ	ऽऽ	य	ल	की	ऽ	झऽ	नऽ								
0				3											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

प	प	म		नि		सां	सां	नि		नि	नि	सां	नि	नि	
म	म	प	-	धु	-	नि	नि	सां	-	सां	सां	नि	सां	सां	-
बि	र	हा	ऽ	से	ऽ	त	न	ता	ऽ	प	त	प	त	है	ऽ
0				3				×				2			
नि		नि	धु		नि	नि	नि			सां		सां	रें	नि	
धु	-	धु	सां	-	सां	सां	सां	सांरें	गं	रें	सां	नि	सां	धु	प
अं	ऽ	ग	अं	ऽ	ग	स	ब	लाऽ	ऽ	ग	र	ही	ऽ	ला	ऽ
0				3				×				2			
धु	प			सां				सां	सां	नि		सां	नि		
प	ग	-	रेंसां	रें	-	सां	-	नि	नि	सां	निसांरें	रें	धु	-	प
स	दा	ऽ	रँऽ	गी	ऽ	ले	ऽ	उ	ठ	त	जिऽऽ	या	हू	ऽ	क
0				3				×				2			
	प	सां	नि	नि											
-	सां	नि	सां	धु	प	पधु	मप								
ऽ	पा	य	ल	की	ऽ	झऽ	नऽ								
0				3											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	ऽ पा य ल	की ऽ झऽ नऽ	सारे मप धुप मप	मग रेसा रेम प-
	0	3	x	2
(2)	ऽ पा य ल	की ऽ झऽ नऽ	सांनि धुप मप धुनि	सांनि धुप मग रेसा
	0	3	x	2
(3)	ऽ पा य ल	की ऽ झऽ नऽ	मप धनि सारें गुंरें	सांनि धुप मगु रेसा
	0	3	x	2
(4)	ऽ पा य ल	की ऽ झऽ नऽ	धुप मधु पम धुप	मधु पम गुरे सा-
	0	3	x	2
(5)	ऽ पा य ल	की ऽ झऽ नऽ	निध पनि धुप निध	पनि धुप मगु रेसा
	0	3	x	2
(6)	ऽ पा य ल	की ऽ झऽ नऽ	का ऽ र बै	र नि या ऽ
	0	3	x	2
	निसा रेम रेम पधु	मप धनि पधु निसां	धनि सारें गुंरें सांनि	सांनि धुप मगु रेसा
	0	3	x	2

::अन्तरे की तान::

(1)	बि र हा ऽ	से ऽ त न	सांनि धुप मगु रेसा	रेम पधु पधु निसां
	0	3	x	2
(2)	बि र हा ऽ	से ऽ त न	सांनि धनि धुप धुप	मप धनि धनि सां-
	0	3	x	2
(3)	बि र हा ऽ	से ऽ त न	सारें गुंरें सांनि धुप	मप धनि सांनि सां-
	0	3	x	2
(4)	बि र हा ऽ	से ऽ त न	सारें गुंरें सारें मंगुं	रेंसां निसां रेंसां निध
	0	3	x	2
	मप धुप मप निध	पम गुरे सा- रेम	पधु निसां धनि सां-	धनि सां- धनि सां-
	0	3	x	2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(20) मालकौंस

इस राग को मालकौंस, मालकोश, मालकौस, मालकोस तथा मालकंस आदि नामों से भी जाना जाता है। यह राग भैरवी थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें ग, ध, नि कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। ऐसी शंका हो सकती है कि आसावरी थाट में भी ग,ध,नि कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगने के कारण मालकौंस आसवरी थाट का हो किन्तु मालकौंस में आसावरी अंग के स्थान पर भैरवी अंग प्रधान होने के कारण इसे भैरवी थाट का ही माना गया है। इसका वादी म तथा संवादी सा है। इसका गायन, वादन समय रात्रि के तीसरे प्रहर में 1:00 से 4:00 बजे तक है। इसका प्राण स्वर म तथा न्यास के स्वर सा म हैं। इसकी जाति औड़व-औड़व मानी जाती है क्योंकि इसके आरोह अवरोह में रे, प स्वर वर्जित हैं।

प्राचीन ग्रंथों में मालकौंस का नाम कौशिक या मालवकौशिक मिलता है। भरत और हनुमान् मत में इसे पुरुष राग माना गया है। यह बहुत लोकप्रिय राग है। उत्तर और दक्षिण में समान रूप से प्रचलित है। कर्नाटकी संगीत में इसे 'हिंडोलम् राग' कहते हैं। इसका विस्तार तीनों सप्तकों में होता है। म प ध नि सां में से म वादी होने के कारण यह उत्तरांगवादी राग है। यह कौंस अंग का प्रमुख राग है। इसे गाते समय तानपूरे के प्रथम तार कोमल पंचम के स्थान पर मन्द्र मध्यम में मिलाते हैं। इसमें भैरवी अंग की ग म ध नि सां, सां ध म, म ध नि सां, नि सा ग म ध म ध नि सां स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह :- ऩि सा ग म ध नि सां
अवरोह :- सां नि ध म, ग म ग सा
पकड़ :- म, ग म ध नि ध म, ग म ग सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

मालकौंस - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

														म	
														सां	नि
नि	ध					नि़	सा	नि		सा			ग	ग	
ध	नि	ध	म	ग	सा	ध़	नि़	सा	-	म	-	-	ग	म	ग
0				3				×				2			
ग	म	ध	नि	सां	नि			ध		नि	ध			म	
म	ग	म	ध	नि	सां	नि	ध	सां	नि	ध	नि	ध	म,	सां	नि
0				3				×				2			

अंतरा

ग	म	ध	नि	सां	नि		नि	नि	सां	नि		मं	गं		
म	ग	म	ध	नि	सां	-	सां	ध	नि	सां	-	गं	मं	गं	सां
0				3				×				2			
सां			सां			नि	नि	ध		नि	ध			म	
मं	गं	सां	गं	सां	नि	ध	-ध	सां	नि	ध	नि	ध	म,	सां	नि
0				3				×				2			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मालकौंस – एकताल (विलंबित)

स्थायी

पग लागन दे महाराज कुँवर।

अंतरा

सदारंगली पीतमुने पावन दे।

स्थायी

											सा
											ग
											प
	गसा	नि़	निसा	नि़	सा		म	ग	मनि		
सा	नि़	ध़	धनि	सा	म	–	ग	म	ध	–	–
ग	ला	ऽ	(गन)	दे	ऽ	ऽ	म	ऽ	हा	ऽ	ऽ
3		4		×		0		2		0	
ध	नि	ध	नि	ध			म	ग	म		सा
म	ध	नि	ध	म	–	–	ग	म	ग	सा	ग
रा	ऽ	ज	कुँ	वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र,	प
3		4		×		0		2		0	

अंतरा

म	ग	नि	सां	सां	नि		नि				नि
ग	म	ध	-नि	नि	सां	–	सां	–	निसां	–	सां
स	दा	ऽ	(ऽरं)	गी	ऽ	ऽ	ली	ऽ	(ऽऽ)	ऽ	पी
3		4		×		0		2		0	
	सां	नि	ग	ग			म	ग	म		सा
–	नि	ध	मम	म	–	–	ग	म	ग	सा	ऽग
ऽ	त	मु	(ऽने)	पा	ऽ	ऽ	व	ऽ	न	दे	(,प)
3		4		×		0		2		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) दे सा ग सा, ध़ नि़ सा – पग लागन
x 4

(2) दे सा ग म, ग म – – ग सा पग लागन
x 4

(3) दे ग म, ग म ध – – म, ग म ग सा पग लागन
x 4

(4) दे ग म ध म, ग म ध नि सां ध नि ध म ग सा पग लागन
x 4

::तान::

(1) देऽऽऽ निसा गसा
x 2

निसा गम गसा

निसा गम धम गम गसा

निसा गम धनि धम गम गसा

निसा गम धनि सांनि धनि धम गम गसा पग लागन
4

(2) देऽऽऽ गम धम
x 2

गम धनि धम

गम धम धनि सांनि धनि धम

गम धनि सांगं सांनि धनि धम

धनि सांध निसां धनि सांनि धम गम गसा पग लागन
4

(3) देऽऽऽ निसा गग साग मम गम धध मध निनि धनि सांसां निसां गंगं
x 2

सांगं सांनि धनि धम गम धनि सांगं सांनि धनि धम गम गसा पग लागन
4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मालकौंस – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

दिन नीके बीते जाते हैं सुमिरन करले राम नाम

अन्तरा

सकल जगत के बीसों काम जब छाँड़ चलोगे धरनीधाम
नहिं संग चलेगा एक दाम जो देते हैं सो पाते हैं

स्थायी

			म
			ग गुम
			दि नऽ
	सा नि		
ग - सा -	नि सा ध नि	सा - म -	म ग - -
नी ऽ के ऽ	बी ऽ ते ऽ	जा ऽ ते ऽ	हैं ऽ ऽ ऽ
0	3	x	2
ग	ध		म
म म ग ग	म ध नि सां	सां - नि ध	- म, ग म
सु मि र न	क र ले ऽ	रा ऽ म ना	ऽ म, दि न
0	3	x	2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	नि	सां	
म म ग ग	म म ध -	नि - सां सां	- सां सां सां
स क ल ज	ग त के ऽ	बी ऽ सो का	ऽ म ज ब
0	3	x	2
नि	ग	ध ध	नि
सां - सां सां	सां - नि ध	म मध नि -	ध - ध नि
छाँ ऽ ड च	लो ऽ गे ऽ	ध रऽ नी ऽ	धा ऽ म्न हि
0	3	x	2
सां		मं मं	
सां - मं मं	मं - मं -	गं गं मं गं	- सां सां -
सं ऽ ग च	ले ऽ गा ऽ	ए ऽ क दा	ऽ म जो ऽ
0	3	x	2
नि	ध	ध	म
सां - सां -	नि ध म ध	नि - ध -	म ग, ग म
दे ऽ ते ऽ	हैं ऽ सो ऽ	पा ऽ ते ऽ	हैं ऽ, दि न
0	3	x	2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मालकौंस – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

पिया संग लड़ पछतानी मैं, देखो ऐसी मद की ऐनी।

अंतरा

उन बिन मैंका कल ना परत है, यूँ ही रैन बिहानी,
तरफ तरफ मैं रही सेज पर, जैसे मीन बिन पानी।

स्थायी

ग			नि	नि	नि	नि	सा	नि		सा				म	म
म	ग	सा	सा	सा	सा	ध	नि	सा	–	म	–	–	–	ग	ग
पि	या	सं	ग	ल	र	प	छ	ता	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मैं
0				3				×				2			
म	म			सा		नि	सा	ग		सा		म	ग		
ग	गम	ग	सा	ग	सा	ध	नि	सा	–	म	–	ग	म	ग	–
पि	याऽ	सं	ग	ल	र	प	छ	ता	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				×				2			
	ग		नि					ध	नि	ध		नि	ध		
–	सां	–	सां	(सां)	–	नि	ध	म	ध	नि	–	ध	नि	ध	मग
ऽ	दे	ऽ	खो	ऐ	ऽ	सी	ऽ	म	द	की	ऽ	ए	ऽ	नि,	मैंऽ
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

ग	ग	म	म	ध		नि		सां	सां	सां	नि	नि		नि	
म	म	ग	ग	म	–	ध	–	नि	नि	नि	सां	सां	सां	सां	–
उ	न	बि	न	मै	ऽ	का	ऽ	क	ल	ना	प	र	त	है	ऽ
0				3				×				2			
नि		नि					नि	नि	नि	ध		नि	ध	नि	
सां	–	सां	–	(सां)	–	नि	ध	म	ध	नि	–	ध	नि	ध	म
यूँ	ऽ	ही	ऽ	रै	ऽ	न	बि	हा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नी	ऽ
0				3				×				2			
ग		म	म	ध	ध	नि		सां	नि		सां		मं		नि
म	म	ग	ग	म	म	ध	–	नि	सां	–	मं	–	गं	सां	सां
त	र	फ	त	र	फ	मैं	ऽ	र	ही	ऽ	से	ऽ	ज	प	र
0				3				×				2			
नि		नि	नि		नि		नि	ध	नि	ध		नि	ध	नि	ग
सां	–	सां	सां	–	सां	नि	ध	म	ध	नि	–	ध	नि	ध	म
जै	ऽ	से	मी	ऽ	न	बि	न	पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नी,	मैं
0				3				×				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

	0				3				x				2			
(1)	पि	या	सं	ग	ल	र	प	छ	ऩिसा	गम	धनि	सांनि	धनि	धम	गम	गसा
(2)	पि	या	सं	ग	ल	र	प	छ	गम	धनि	सांगं	सांनि	धनि	धम	गम	गसा
(3)	पि	या	सं	ग	ल	र	प	छ	सांगं	सांनि	धनि	धम	गम	धम	गम	गसा
(4)	पि	या	सं	ग	ल	र	प	छ	म-	-म	--	म-	गम	गसा	ऩिसा	गम
	ध-	-ध	--	ध-	मध	मग	साग	मध	नि-	-नि	--	नि-	धनि	धम	गम	धनि
	सां-	-सां	--	सां-	निसां	निध	मध	निसां	गं-	-गं	--	गं-	सांगं	सांनिं	धनि	सां-
	निसां	निध	मध	नि-	धनि	धम	गम	ध-	मध	मग	सा-	ग-	म-	ध-	नि-	सां-
	गं-	--	सां-	--	मंमं	गंमं	गंसां	गंगं	सांगं	सांनि	सांसां	निसां	निध	निनि	धनि	धम
	धध	मध	मग	मम	गम	गसा	ऩि-	सा-	पिया	संग	लड़	पछ	ता	नी	पिया	संग
	लड़	पछ	ता	नी	पिया	संग	लड़	पछ	ता							

::अन्तरे की तान::

	0				3				x				2			
(1)	उ	न	बि	न	मै	ऽ	का	ऽ	सांनि	धम	गम	गसा	ऩिसा	गम	धनि	सां-
(2)	उ	न	बि	न	मै	ऽ	का	ऽ	सांनि	धनि	धम	धम	गम	धनि	सांनि	सां-
(3)	उ	न	बि	न	मै	ऽ	का	ऽ	सांगं	सांनि	धनि	धम	गम	धनि	सांनि	सां-
(4)	उ	न	बि	न	मै	ऽ	का	ऽ	गम	गम	धम	गम	धनि	धम	गम	धनि
	सांनि	धनि	धम	धध	मनि	निध	सांसां	निसां	धनि	धम	गम	धनि	सांध	निसां	धनि	सां-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आरोह तमसो ज्योतिः
Bekaraan Aalami
Foundation

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi